महारानी-पद्मिनी

ऐतिहासिक घटनामूलक

(उपन्यास)

Maharani Padmini

by

Ramswarup Sharma

जिसको-

ब्रा० कु० रामस्वरूप शर्मा ने

सम्पादन किया.

और

सनातनधर्म यन्त्रालय

मुरादाबाद में छपकर

प्रकाशित किया.

१९१६

...ted & Published

...rmswarup Sharma

...ndharm Press Moradabad.

उपक्रमणिका

यह बहुत दिनोंकी बात है, कि—जब मुसलमानोंने प्रथम ही प्रथम हमारे देशमें राज्य स्थापन किया था। तबसे अबतक धीरे२ सात सौ वर्ष कालके गालमें समागये। इतने समयमें न जाने कितनी अपूर्व२ घटनायें और रोंगटे खड़े करनेवाले व्यापार इस देशके ऊपर अपनी छटा दिखागये, पद्मिनीकी कहानी भी उनमेंकी ही एक घटना है।

ईसवी बारहवीं शताब्दीके अन्तिमभागमें ही भारतमें मुसलमानों की शक्ति चमकी थी। कितने ही मुसलमान भूपति और सेनापति इससे पहिले कई बार भारत पर चढ़कर आचुके थे, परन्तु भारतमें राज्यस्थापन करनेकी कल्पना उनके मस्तिष्कमें नहीं समाई थी। उनका उद्देश्य केवल भारतको लूटना ही था। भारतमें राज्यस्थापन करनेकी कल्पना सबसे पहिले गोर देशके सुलतान सहाबुद्दीन मुहम्मदके मस्तिष्कमें उठी थी। उसके ही फलसे तिरौरीके युद्धके बाद दिल्लीमें मुसलमानोंका साम्राज्य स्थापित हुआ था और देशमें बड़ी भारी खलभली पड़गयी थी।

उस समय भारतमें जिन हिन्दू राजाओंका शासन चलता था, उनमें कन्नौज, गुजरात, चित्तौर और देवगिरिके राजाओंकी अच्छी प्रतिष्ठा थी। तिरौरीके संग्राममें मुहम्मदगोरीको हटानेके लिये चित्तौर-पति महाराना समरसिंहने भी दिल्लीपतिके पास खड़े होकर युद्ध किया था और प्राण दिये थे, परन्तु चित्तौर उनके हाथसे नहीं गयी थी। तिरौरीके युद्धमें हिन्दुओंका पतन होने पर भी चित्तौर ज्यों की त्यों स्वाधीन रही थी, तसे ही गौरवके साथ अपना मस्तक ऊँचा किये रही थी। बहुत दिनों तक वह गौरवसे ऊँचा रहनेवाला मस्तक मा नहीं था, परन्तु बीच२ में उसके सुन्दर आकाशके ऊपर काले२ ोंकी घटा छागयी थी। मुहम्मद गोरीने दिल्लीमें राज्य स्थापन

करके अपने आप तहां शासन नहीं किया था, इस कामके लिये उस ने दिल्लीमें अपने एक अनुचरको छोड़ दिया था। वह अनुचर और उससे आगेके कितने ही राजे इतिहासमें 'दासराज' नामसे लिखेगये हैं।

इन दासराजोंके पीछे खिलिजियोंका भाग्य उदय हुआ था। खिलजी दासराजगणोंके वशमें रहकर ही दिल्लीका शासन करते थे। इस वंशमें सबसे पहिला राजा जलालुद्दीन खिलजी हुआ था। जलालुद्दीन का एक बड़ा प्यारा अनुचर था, उसका नाम अलाउद्दीन था। जलालुद्दीनने उसको अपनी कन्या देकर अपने राज्यका प्रधान सेनापति बना दिया था और उसका अपने पुत्रसे भी अधिक पालन करता था।

वीरता और साहसमें अलाउद्दीन वास्तवमें ऐसे ही सन्मानके योग्य था, परन्तु कृतज्ञता उसके हृदयमें नामको भी नहीं थी। ऐसा हितैषी दयालु प्रभु, कि—जिसके आशीर्वादसे बड़ीभारी सम्पत्ति और परमप्रतिष्ठा पायी थी तथा जिसके स्नेहकी धाराको पाना उसके लिये कोई सहज बात नहीं थी, उसका भी उसके ही दिये हुए अस्त्रसे नाश कर दिया। जिस शक्ति और सन्मान से इतने दिनों जलालुद्दीन ने उसको पाला पोसा था। उसही शक्ति और सन्मान को अस्त्ररूप बना राज्यके लोभसे अलाउद्दीनने जलालुद्दीन को मारडाला।

अलाउद्दीनको अपना राज्य बढ़ानेकी बड़ी ही लालसा थी। जलालुद्दीनकी जीवित दशामें ही उसने दक्षिणके देवगिरि राज्यको लूटलिया था। सिंहासन पर बैठते ही उसने गुर्जरराजके ऊपर चढ़ायी की। थोड़े दिनों पहिले चित्तौरपति के हाथसे गुर्जरराजकी बड़ी भारी हार होचुकी थी। उस युद्धमें शक्ति क्षीण होजानेके कारण गुर्जरराज इस चोटको नहीं सहसके, उनको राज्यसे हाथ धोनेपड़े। देशमें और एक हल चल मचगयी।

इसके बाद ही चित्तौरपतिके साथ अलाउद्दीनका संग्राम ठनगया। उस संग्राममें जय पराजयका निश्चय न होसका। चित्तौरका विध्वंस करके भी अलाउद्दीनने उस बार क्षण २ में जैसी पराजयका अनुभव कियाथा तैसी पराजय इतिहासमें खोजनेपर भी और कहीं नहीं मिलती। उस संग्राममें समूल नष्टसी होकरभी चित्तौरने गलेमें जो जयमाला धारण की थी, वास्तवमें वह अलौकिकथी।

उस अलौकिक घटनाका ही कुछ परिचय इस पुस्तकमें दियागया है। चित्तौर और अलाउद्दीनके युद्धमें कौन जीता और कौन हारा? इस पहेलीका पता लगाना सहज है या कठिन, इस बातको पाठक पाठिका इस घटनावलीको पढ़कर सहजमें ही समझजायँगे। हम गुजरातके युद्धके बादसे इस आख्यायिकाका आरम्भ करते हैं।

॥ श्रीहरिःशरणम् ॥

प्रथम-खण्ड

प्रथम परिच्छेद

गुजरातके राजाका पत्र

चित्तौरका किला पाँचसौ फिट ऊँचे पहाड़ पर बनाहुआ है, आज भी उस विराट् किलेकी पुरानी दीवारें विकट श्मशानकी समान दूरसे ही दर्शन देती हैं। अब तहाँ केवल कितने ही पहाड़ी झरने और आरावली पहाड़से छूटेहुए प्रबल पवनका प्रवाह उस निर्जन वनको प्रतिध्वनित करके मानो हाय! हाय! करते हैं। अब यहाँ मनुष्योंकी अधिक चहलपहल देखनेमें नहीं आती। यहाँ ही एक दिन बाप्पाराव, खुमानसिंह समरसिंह और संग्रामसिंहकी राजधानी थी। यहाँ ही एक दिन जयमल्ल, पुत्त, हमीर और प्रतापसिंह ने प्रतिज्ञा की थी, कि—"कार्यं वा साधयेयं शरीरं वा पातयेयम्"। इस चित्तौरके द्वार पर ही एक दिन समस्त हिन्दू साम्राज्यका मस्तक नमा करता था। अब वह सब बातें कहानी मात्र रहगयीं हैं।

परन्तु अब भी चित्तौरका दर्शन करने पर हिन्दूकी नसें फड़क उठती हैं, हृदयमें करुणाका गान गुञ्जारने लगता है, अब भी इस टूटेहुए घरकी दीवारोंको देखने पर न जाने कितनी पुरानी वातें मनमें चक्कर लगाजाती हैं। कुछ अधिक छः सौ वर्ष पहिले इस चित्तौरके किलेमें एक दिन अचानक एक घुड़सवार अतिथि आया था। उस समय चित्तौरकी समृद्धिमें कुछ कमी नहीं थी, समीपके राजा गुर्जर-राजके साथ विरोध होगया था, अतः चित्तौरने उस समय चढ़ाई करते ही उस देशको जीतलिया था, चारों ओर जयजयकारकी गुञ्जार होरही थी, उस समय चित्तौरमें घर घर आनन्दके उत्सव मनाये जारहे थे।

घुड़सवार नगरमें घुसकर छः फाटकोंको लाँघ सातवें फाटक रामपोल दरवाजेके पास आकर खड़ा होगया, पहरेदारने पूछा-कहिये महाशय! आप कौन हैं और कहाँसे आरहे हैं ? । घुड़सवारने कुछ उत्तर न देकर एक सोनेकी अँगूठी दिखायी और उसके साथ एक पत्र दिया, उस पत्रमें महाराणाका नाम लिखा हुआ था। पहरेदारने शीघ्रता से फाटक खोलदिया और घुड़सवार महल की ओर को चलागया।

उस दिन जिस समय चित्तौरेश्वर भोजनसे निबटकर अपने विश्राममन्दिरमें बैठ निर्मल आकाशके सुखस्पर्शी पवनका सेवन कररहे थे और दूरसे ही किलेके शिखर परकी लाल पताकाकी ओर को देख २ कर किसी एक सुखके स्वप्नको देखरहे थे, उसी समय फाटकके पहरेदारने आकर महाराणाको प्रणाम किया और एक सुन्दर मुहर लगी हुई चिट्ठी सामने चांदीकी चौकी पर धरदी।

चित्तौरमें गुजरातको जीतनेका जो एक स्मारक बनायाजागा, उसका ही एक चित्र (नक़शा) दीवारमें लटक रहा था। राणा उस समय दृष्टि फिराकर उस नक्शेकी ओरको देखरहे थे। उधरसे दृष्टि हटकर उस पत्र पर पड़ी कि—देखते ही चौंक उठे यह चिट्ठी किसकी है ? यह मुहर तो गुजरातके राजाकी है! क्या मेरे चिरकालके शत्रु गुर्जरेश्वरने यह पत्र भेजा है ?।

महाराणा तत्काल मुहरको तोड़कर पत्रको पढ़नेलगे, वास्तवमें नीचे मोटे मोटे अक्षरोंमें गुर्जरेश्वर करणरायका नाम लिखा हुआ है। राणाने पत्रमें पढ़ा, कि—

"महाराणा! मैंने सुना है, कि-आप मुझे जीतकर बड़े आनन्दमें मतवाले होरहे हैं। गुर्जरविजयका स्मारक (यादगार) स्थापन करनेके उत्साहमें आप सोने और खाने तककी परवाह नहीं करते हैं, परन्तु

इस आनन्दमें भङ्ग डालनेवाली और एक घटना आपके घरमें भी होने वाली है, क्या कभी उसका भी विचार किया है? बहुत ही शीघ्र उसका परिचय मिलेगा! गुजरातको जीतनेका स्मारक स्थापन करनेसे पहिले ही एक पुरुष चित्तौरको जीतनेका स्मारक बनानेके लिये तयार होगा! हाय! उस समय आपका यह उत्सव कहां जायगा? अलाउद्दीनने गुजरातको जीतलिया है, वह शीघ्र ही दूसरे हिन्दू-राज्यों पर भी चढ़ायी करेगा, उसमें चित्तौर बच नहीं जायगी? आप निश्चिन्त होकर पड़ोसीकी चिताके ऊपर नाचरहे हैं, नाचिये! भाई को नोचा दिखाया है, कुचल डाला है, इस कारणसे उत्सव करते हैं? करिये, परन्तु आपका यह आनन्द केवल दो चार ही दिनका है!।

अलाउद्दीनने जो गुजरातको सहजमें ही जीतकर अपने हाथमें लेलिया, इसका क्या कारण है, आप जानते हैं? यह आपकी ही कृपा है। यदि आपने ऐसी दुर्दशाके साथ गुजरातकी हड्डियें न पीसदी होतीं तो मुसलमानोंके लिये गुजरातको जीतना इतना सहज न होता आपकी इस स्पर्धा (देखजलनेपन) के कारण शीघ्र ही चित्तौरका भी विध्वंस हुए विना न रहेगा। मेरी इस बातमें आप सन्देह न करें, मैं दुःखित मनसे आपको यह अभिशाप देता हूँ, मेरा अभिशाप अवश्य ही फलीभूत होगा!

आप अपने मनमें यह न समझें, कि-मैं राज्यको खो बैठनेके कारण इतना विचलित होगया हूँ! राज्य तो सदा ही क्षणभंगुर है! न जाने कितनी बार बिगड़ता है और फिर सङ्गठित होजाता है, परन्तु इस बार आपके गुजरातको जीतनेसे ऐसा एक रत्न जाता रहा है, कि—जो आपके और मेरे भण्डारमें अब फिर लौट कर नहीं आवेगा। आज हिन्दूरमणी के मस्तक परसे एक गौरवकी किरण चिरकालके लिये गिरपड़ी है। आज गुजरातके राजाकी महारानी दिल्लीके बादशाहकी अङ्कलक्ष्मी है! इसकारण ही मैं विचलित हो उठा हूँ।

किन्तु महाराणाजी! आपको धिक्कार देने और आपके ऊपर दोष लगानेके लिये ही मैंने यह पत्र नहीं लिखा है, इस वृक्षोंके नीचे निर्वाह करनेवाले निराश्रय पथिकके दोष देनेसे चित्तौरके राणाको भला क्यों चैतन्य होनेलगा है? आज मेरे चितौनी देनेका उद्देश्य कुछ और ही है, लीजिये खोलकर कह देता हूँ, सुनिये—

चित्तौर और अलाउद्दीन दोनों ही मेरे शत्रु हैं, मैंने मनमें विचारा है, कि—एक चोटमें ही इन दोनों शत्रुओंको गिरादूंगा, मैं इन दोनों में परस्पर विरोध कराकर लड़ादूंगा। चित्तौरी दिल्लीके आघातसे

गिरजायँगे और दिल्ली चित्तौरके पराक्रमसे चाहे सर्वथा नष्ट न हो, परन्तु हतवीर्य और निस्तेज (कमजोर) अवश्य ही होजायगी, मैं उस निस्तेज शत्रुको इसके बाद दूसरे उपायसे विनाशके द्वार पर पहुँचा दूँगा। जिससे कि-अलाउद्दीन चित्तौरको जीतकर अक्षत-शरीर लौटकर नहीं जासकेगा,इसलिये ही मैंने आपको यह समाचार भेज दिया है। अलाउद्दीन चाहे जितना बलवान् क्यों न हो, परन्तु आपके पहिलेसे तयार रहने पर वह सहजमें अक्षतशरीर लौटकर नहीं आसकेगा, इस बातका मुझे निश्चय है। इस विश्वाससे ही आज मैं दिल्लीके बादशाहको भी निमन्त्रण देने जारहा हूँ।

अलाउद्दीन आता है और चित्तौरका विध्वंस होगा, इसमें सन्देह नहीं है, परन्तु महाराणा! यदि आप सचेत होगये और उसके आने से पहिले आपने अपनी सेनाको सावधान कर लिया तो कदाचित् इस सुयोगमें आप हिन्दूनारीके गौरवको अक्षुण्ण रखसकेंगे। चित्तौर ने मेरे साथ शत्रुता की है, परन्तु हिन्दूरमणी मेरी शत्रु नहीं है, उस के कुचले जाते हुए गौरवका उद्धार करनेके लिये आज मैं आपके मुख की ओरको ताकनेके लिये भी तयार हूँ। मैंने सुना है, कि-आपके चित्तौरमें भी कमला देवीकी समान एक रत्न है, देखना! वह भी कहीं दिल्लीकी बेगम न बनजाय!

आपसे वैरभावका पूरा २ बदला लेनेकी मेरी प्रबल इच्छाके भीतर भी आपके लिये एक शुभकामना है। अलाउद्दीन और चित्तौर भले ही चूल्हेमें चलेजायँ, परन्तु चित्तौरकी हिन्दूकुलललना को कलङ्क न लगे। यदि आप अलाउद्दीनको छः महीने तक चित्तौरमें अटकाये रखसकेंगे तो मैं इतने अवसरमें दिल्लीके धुर्रे उड़ादूंगा, इस बातका आप निश्चय रक्खें, इस में धोखा न समझें, यदि तुम इस बात का विश्वास नहीं करोगे तो तुम मारे जाओगे और तुम्हारा शत्रु जीता रहजायगा। बस इतना ही जताकर अब मैं विदा होता हूं, यदि किसी समय भी अपनी अभिलाषाको पूरी करसका तो फिर आकर साक्षात्कार करूँगा, आप अपनी गुजरातविजयको पूर्ण करनेका अन्तिम सुयोग पावेंगे। अब आप पहिले अलाउद्दीनको कबरमें भेजनेका उद्यम और बन्दोबस्त कीजिये, इस काममें मैं ही आपका प्रधान सहायक हूँ।

करणराय।

पत्रको पढ़कर महाराणा लक्ष्मणसिंह कुछ देर को तो भौचक्केसे होगये! यह कैसा विकट सम्वाद है! महाराणाके कपोलों पर बिन्दु २

होकर बहुतसा पसीना इकट्ठा होनेलगा । क्या वास्तव में मेरे हाथसे एक हिन्दूकुलका गौरव इतना क्षीण होगया ? कि—जिसके कारण से गुजरातका यह परिणाम हुआ ? । महाराणा के अन्तःकरण के कोने में उस चिरकाल के शत्रुके लिये भी न जाने क्यों बड़ीभारी चोटसी लगी । अब क्या किया जाय ? । महाराणा इसका विचार कुछ भी न करसके और उठकर खड़े होगये । उनका मन उस समय नजाने किधर २ को दौड़ने लगा, उसी दशामें कमरे से बाहर निकलने को हुए और आँख उठाकर देखा तो अभीतक पहरेदार हाथ जोड़े वैसे ही खड़ा है । महाराणाने कहा—मङ्गलसिंह ! दूत के ठहरनेके लिये उत्तम प्रबन्ध करदो और तामजाम मँगवाओ, मैं इसी समय चाचा भीमसिंहजीसे मिलने जाऊँगा । इसके बाद जरा एक आगे को बढ़कर फिर लौट आये और आकर डपटकर कहा, कि—अब ही चित्तौरके कोतवाल से समझाकर कह दो कि—वह फौरन ढंढोरा पिटवाकर सब को सूचित करदेय, कि—आजसे नगरमें सब आमोद प्रमोद आनन्द उत्सव बन्द किया जाय, जो कोई इस आज्ञाको नहीं मानेगा उसको बड़ाभारी दण्ड दिया जायगा ।

द्वितीय परिच्छेद

भीमसिंह और लक्ष्मणसिंहका सम्भाषण

चित्तौर में महाराणाके चाचा राणा भीमसिंहका बड़ा प्रताप था । जिस समय महाराणा लक्ष्मणसिंह के पिताका देहान्त हुआ था, उस समय महाराणा बहुत ही छोटे थे, इसकारण मरणशय्या पर पड़े हुए महाराणा, लक्ष्मण सिंह के लालन पालन तथा राज्यकी रक्षाका भार भीमसिंहको सौंप गये थे । उस दिन से सब लोग भीमसिंह को राणा कहने लगे थे । कुछ दिनों में युवा होकर लक्ष्मणसिंहने महाराणा के आसन को ग्रहण किया परन्तु भीमसिंहके राणा पद को नहीं छीना और उनकी मानमर्यादा में भी कमी नहीं आने दी । ।

इस समय भी चित्तौरके हरएक राजकीय प्रबन्धमें भीमसिंहकी संमति अवश्य ही लीजाती है । उनकी संमतिके बिना प्रायः कोई भी

काम नहीं होता है। युद्धमें सेनापति वही हैं, विचारमें मंत्री वही हैं तथा सन्धि विग्रहमें सलाह देनेवाले भी वही हैं।

महाराणा आज इस समस्याके पत्रको लेकर उनके ही भवनमें पधारे हैं, भीमसिंहने महाराणाको बड़े आदरके साथ सिंहासन पर बैठाया असमय महाराणाको अपने यहां आये देखकर भीमसिंहने पूछा कि-महाराणाजी ! क्या समाचार है? महाराणाने कहा-काकाजी ! समाचार कुछ अच्छा नहीं है। बड़ा गोलमाल होगया है, अनुमान होता है फिर युद्धकी घनघटा घहरावेगी ! भीमसिंहने कहा—महाराणाजी ! युद्धका अवसर आवेगा तो युद्ध करेंगे, उसके लिये इतनी चिन्ता क्यों ? क्षत्रिय होकर युद्धका भय ? परन्तु हुआ क्या बात तो कहो ?। यह सुनकर लक्ष्मणसिंहने गुजरातके राजा करणरायका वह पत्र भीमसिंहके हाथमें देदिया। पत्रको पढ़कर उस सदा प्रसन्नमुख रहने वाले प्रवीण योधाका मुख भी कुछ एक कुमलायासा होगया। भीमसिंहने कहा—इस पत्रको कौन लाया है ? महाराणाने उत्तर दिया, कि—एक राजपूत, यदि आप कहें तो उसको यहां ही बुलवा लिया-जाय, मैं अभीतक उसके साथ मिला नहीं हूँ।

भीमसिंहने कहा-आपने बहुत अच्छा किया, पहिले आपसमें संमति करलीजाय, कि—क्या करना चाहिये, पीछे दूतको बुलवालिया जायगा क्या कमला देवीने यह सर्वनाश किया ?

महाराणाने कहा-और क्या ? मुसलमान उसको पकड़ कर लेगये हैं। इस बार युद्ध छिड़ने पर चित्तौर जाय चाहे रहै, मैं एक बार अलाउद्दीनको देखूंगा कि—वह कितना बड़ा दुश्मन है ! ।

उस समय भीमसिंहका चित्त न जाने किधर २ को दौड़ लगा रहा था, उन्होंने कहा, कि-देखो महाराणाजी ! मेरी समझमें तो इस बात में सब अपराध अकेले अलाउद्दीनका ही नहीं है, एकाध कोई और भी इसमें शामिल है। अलाउद्दीनकी इतनी शक्ति ! गुजरातको भले हीं उसने अपने बाहुबलसे जीत लिया हो, परन्तु धर्मरक्षाका उपाय तो रानी कमलाके अपने हाथमें था ?। महाराणाकी आंखें चढ़ गयीं और उन्होंने कहा, कि-तो क्या इसमें सब अपराध अकेली कमलाका ही है ?

भीमसिंहने कहा—नहीं नहीं, यह बात तो नहीं कही जासकती, क्योंकि—हिन्दूकी शिक्षा, हिन्दूकी दीक्षा और हिन्दूका संस्कार एक दिनमें या एक ही महीनेमें ऐसा व्यर्थ नहीं होसकता। कमला देवी पापिनी अवश्य है. परन्तु तो भी मेरी समझमें यह पापकी गठरी धीरे

धीरे कितने ही दिनोंमें बँधी है। समय२ पर बराबर कोई बांदी उसके हृदयको कलुषित करती रही है। इस बातको सुनते ही महाराणाके मुख परसे क्षोभकी म्लान-छाया एकसाथ दूर होगयी, परन्तु उनकी दृष्टि और मुख पर आश्चर्यकी झलक दुगनी बढ़गयी। महाराणाने कहा कि—तो काकाजी! अब क्या संमति है? । भीमसिंह उठकर खड़े हो गये और बोले, कि—चलिये भीतर चलिये! आज मुझे एक बहुत दिनों की बात याद आगयी है, चलिये, मैं आपको सुनाऊँगा।

तृतीय परिच्छेद

घोर घनघटा

उस दिन रातको किलेकी एक सफेद पत्थरकी बनी सुन्दर बारादरी की छतके ऊपर खड़ी होकर एक अपूर्व सुन्दरी रमणी आकाश की ओरको देख रही है। चांदनीकी छटासे चारों दिशाओंमें दिनकेसा प्रकाश होरहा है। उस समय नगरीमें घर घरके दीपक बढ़ा दिये गये हैं, कुछ ही दूर पर कीर्त्तिस्तम्भके शिखर पर का एक दीपक इस समय भी टिमटिमा रहा है और रास्तेकी तथा घाटकी बत्तियें चुपचाप हँस रही हैं। एक पुरुष धीरे २ आकर रमणीके पीछे खड़ा होगया। पुरुष चुपचाप खड़ा हुआ कुछ देर तक चांदनीके उजालेमें रमणीकी उस रूपराशिको देखता रहा, परन्तु रमणीने उसको नहीं देखा। रमणी प्रकृतिकी उपासनामें मग्न है। दूर आरावली पहाड़की विराट्‌रूप काली कायाकी आड़मेंसे एक महा अन्धकार करनेवाली घनघटा धीरे धीरे ऊपर को उठरही है, रमणीकी दृष्टि उधरको ही लगरही है। पुरुषने बहुत देरतक बाट देखते २ अन्तमें रमणीका हाथ पकड़ कर कहा, कि—पद्मिनी! क्या देखरही हो?।

रमणीने पीछेको फिरकर देखा। कानोंतक विशाल दोनों अपूर्वनेत्रोंको पुरुषके मुखपर स्थापित करके एक ही क्षणमें टकटकी लगाये हुए उधरको देखनेलगी, फिर दृष्टि फेरकर आकाशकी ओरको देखती हुई कोमल स्वरमें कहनेलगी, कि—ओहो! कैसी काली घटा है!

राजपूतने गहरा साँस लेकर कहा, कि—भारतवर्षके आकाशमें भी एक ऐसी ही काली घटा उठरही है, इस प्रकार ही बढ़ती चली आरही है। रमणीने अचंभेमें होकर पुरुषकी ओरको देखा और कहा, कि—तो क्या कोई अशुभ समाचार है?। पुरुषने फिर गहरी साँस लेकर कहा, कि—हाँ पद्मिनी! अशुभ समाचार ही है। अलाउद्दीनका

प्रताप दिन प्रतिदिन बढ़ता चलाजारहा है, उसने गुजरातको जीतलिया है ! यह सुन पद्मिनीने भी गहरी साँस भरकर कहा, कि—अभागे गुजरात ! दो दिन हुए हैं, कि—चित्तौरके हाथसे तेरी घोर दुर्दशा हुई थी, फिर तू मुसल्मानोंके चुङ्गलमें भी फँसगया ! । इस पर भीमसिंहने कहा, कि—पद्मिनी ! यदि सत्य कहाजाय तो यह हमारा ही दोष है । गुजरातको इतना निर्बल किसने किया है ?, चित्तौरकी चढ़ाईसे ही तो वह शक्तिहीन हुआ है ? । करणराय तो इस समय यही बात कहरहा है, कि—चित्तौरको इस पापका फल अवश्य ही भोगना पड़ेगा । इतना सुनते ही पद्मिनी चौंक उठी और कहनेलगी कि—करणराय ? गुजरातके राजा ? वह इस समय कहाँ हैं ? ।

भीमसिंहने कहा—वह इस समय दिल्लीमें हैं, आज सवेरे ही एक दूत उनकी चिट्ठी लेकर आया है । उस चिट्ठीमें ही यह सब बातें लिखी हुई हैं। इसके सिवाय उनकी चिट्ठीमें एक और भी बड़ा भयानक समाचार है । पद्मिनी ! तुम उस समाचारको न सुनना, सुनोगी तो घृणा और क्रोधके मारे तुम्हारा चेहरा तमतमा उठेगा । भारतके पवित्र शरीरमें कालिमा लगगयी है ! ।

पद्मिनी काँपउठी और कहनेलगी, कि—तुम्हारी बात सुनकर तो मुझे भय लगने लगा, क्या गुजरातका राजा दिल्लीके बादशाहकी अधीनता स्वीकार करके उसके पैर चाटने के लिये दिल्लीमें ही आगया है ? या वह कैद कर लिया गया है? अथवा अलाउद्दीन उसको पिंजरेमें बन्द करके ले आया है ? जल्दी बतलाइये, बात क्या है ? इस बातको सुननेके लिये मेरा मन बड़ा ही हठ कर रहा है ।

भीमसिंह जराएक मुसकुराये और कहनेलगे, कि–पद्मिनी ! धीरज धरो, करणरायने अभीतक दिल्लीकी अधीनता स्वीकार नहीं की है, परन्तु उनकी सुन्दरी स्त्रीने बड़े आनन्दके साथ इस सौभाग्यको अपने माथे पर चढ़ा लिया है, बादशाह उसको ही पिंजरेमें बन्द करके दिल्ली लेगया है । .

यह सुनते ही पद्मिनी भौचक्कीसी रहगयी, उसका साँस घुटनेलगा उसने मनमें कहा यहाँ तक ? मैं तो इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकी थी । क्या ऐसा भी संभव है ? पद्मिनी फिर मन ही मनमें कहने लगी, कि—क्या पृथिवी पर एक ही क्षणमें समय बदलगया ? क्या प्रलय होगयी ? या यह सुपना है ? । पद्मिनी और कुछ विचार न करसकी, उसका शरीर सुन्नसा होगया, उसके हृदयकी धुक धुकी कम होगयी,

वह बोल उठी—हिन्दू नारी की यह लीला? गुजरातकी रानीका यह परिणाम? तो फिर पृथिवी पर अनहोनी कौनसी बात रहगयी?।

भीमसिंह पद्मिनीके चित्तकी दशाको ताड़गये और कहने, लगे, कि-पद्मिनी! घरमें चलो, वर्षा आरही है, अब इस प्रकार यहाँ बैठना ठीक नहीं है, जरा हृदयको मजबूत रक्खो, और भी बात है, आओ हाथ पकड़ो।

पद्मिनी भीमसिंहका हाथ पकड़ कर खड़ी होगयीं। उस समय घनघटाने धीरे २ फैलकर चन्द्रमण्डलको ढकलिया था, घोर अन्धकारने चारों दिशाओं को घेर लिया था, पद्मिनीने चौकन्नीसी होकर कहा, कि—अब तो चाँदनीका नाम भी नहीं रहा! इस के अनन्तर दोनोंजने धीरे धीरे नीचे उतरगये।

इतनेमें ही एक जोरका पवनका झोका आया और चारों ओरके किवाड़ोंको खटाखट खोलता भेड़ता हुआ, सन्‌सन् शब्दके साथ बड़े वेगसे निकलता हुआ चलागया। पद्मिनी और भीमसिंह दोनों किसी छिपे हुए भयकी आशङ्कासे क्षणभर के लिये कम्पायमान होगये।

—o—

चतुर्थ परिच्छेद

पद्मिनी का महल

नीचे सङ्गमर्मरकी परम रमणीय बारहदरी है, उसमें कई एक हाथीदांतके पलँग बिछेहुए हैं, जिन पर रेशमी गलीचे बिछाकर सुनहरी पलँगपोश ढकदिये गये हैं, एक ओरको पीतलके पतीलसोतमें सुगन्धित तेलकी बत्ती जल रही है। भीमसिंहने आकर दीपककी बत्ती जरा तेज करदी, परन्तु इससे पद्मिनीका मन प्रफुल्लित नहीं हुआ।

उस प्रकाशमयी बारहदरीमें भीमसिंहने एक दरवाजेके सामनेको पलँग खेंचकर पद्मिनीको अपने पास बैठालिया, फिर दूतसे गुजरातका जो कुछ समाचार पाया था सब सुनाया! करणरायकी उस चिट्ठी का समाचार सुनाते २ भीमसिंह कहनेलगे, कि—पद्मिनी! क्या दिल्लीकी बेगम बननेके लिये तुम्हारा भी जी चाहता है?। अब की बार अलाउद्दीनकी चढ़ायी तुम्हारे लिये है, अबकी बार तुम भी करणरायकी स्त्री कमलाकी समान दिल्लीकी मसनद पर बैठने का अवसर पाओगी!।

इतना सुनते ही नखसे शिखा तक पद्मिनीके शरीरमें आगसी लग गयी, पद्मिनीका मुख और नेत्र लाल २ होगये, वह कहनेलगी, कि-यह

क्या ? आप कौएको इन्द्रके सिंहासन पर पैठालने की कैसी अनहोनी बात कहरहे हैं? चित्तौरमें आने पर अलाउद्दीन एक बड़ीभारी नयी शिक्षा पावेगा। भारतवर्ष भरके सब ही नर नारी करणाराय वा कमला देवी नहीं हैं, यह बात हम अबकी बार अलाउद्दीनको अच्छे प्रकार समझा देंगे, और इस अवसर पर हम कमलादेवी के अपमान का भी बदला लेंगे।

भीमसिंहने इस बातका कुछ उत्तर नहीं दिया। इस समय उनके मनमें एक २ करके न जाने कितनी नयी बातें उठने लगीं. उनहीं बातों का विचार करते हुए वह एकसाथ बोल उठे, कि—पद्मिनी! तुम्हें उस मतियाकी याद है। जो कमला देवीकी बाँदी थी। आज छः वर्षकी बात है, एकवार तीर्थयात्रा के मार्गमें हम कमला देवीसे मिले थे, उस समय उसके साथ एक मुसलमान बाँदीको देखकर तुम चौंक उठीं थीं उस मतिया की तुम्हें याद है ?। पद्मिनी चौंक उठी और कहने लगी, कि—उस बाँदीको देखकर मैंने कमला से तभी कहा था, कि—म्लेच्छ के सङ्ग से तुम अपनी बड़ी हानि करोगी। क्या वह भविष्य-द्वाणी ही सच्ची होगयी ?।

भीमसिंह ने कहा—क्या अचरज है ? बाँदीके उस परम रूप, उस चलते पुरजेपन और दौरदौरेको देखकर तबही मेरे मन में सन्देह हुआ था कि—एक दिन यह गुजरातका सर्वनाश करदेगी, परन्तु वह सर्वनाश इसप्रकार होगा, इस बातको हम, उस समय नहीं समझ सके थे। पद्मिनी ने हँसकर कहा- ऐसा मैं भी नहीं समझी थी। तुमने उस समय यह समझा होगा, कि—इस बाँदीके रूपमें गुर्जरे-श्वर भस्म होजायँगे ? मैं भी यही समझी थी, परन्तु जो कौतुक सुनागया है, इसका तो स्वप्न में भी ध्यान नहीं था। भीमसिंह उठ कर खड़े होगये और भौं चढ़ाकर कहने लगे कि-पतिव्रता स्त्रीने अपना बलिदान देकर पतिकी रक्षा की है, कमलाने अपने पतिको मतिया के मायाजालमें नहीं फँसने दिया है। उस ने कुमंत्रणावश अपने आपेको ही भस्म करडाला है। निःसन्देह मतिया ही कमला को ढकेल कर नरकके मार्गमें लेगयी है।

पद्मिनीने धीमे स्वरमें कहा, कि—परन्तु वह कमला! उस सरला, सुशीला, पुष्पकोमला ललनाका यह काम ? यह बात तो विश्वास करने योग्य नहीं है! भीमसिंहने पद्मिनीका हाथ पकड़ कर कोमल स्वरमें कहा, कि-पद्मिनी! क्या तुम जानती नहीं हो, सरला अबलायें ही कुचक्रियों की बातोंमें जल्दी आजाती हैं, फिर अविश्वासकी कौन

बात है ? अच्छा अब आज इस बातकी चर्चाको छोड़ो, वह देखो चित्तौरेश्वरीके महलमें आधीरातकी नौबत बजने लगी, बहुत रात होगई, चलो अब आराम करें।

पद्मिनी और भीमसिंह दोनों उठकर उसी समय अपने २ पलँग पर चलेगये। उस रातको उन दोनों में और कुछ बात नहीं हुई। भोजन थालोंमें ही धरा रहा, और दिन इस समय तक सरबतका पात्र खाली होजाता था, परन्तु आज उसको छुआ भी नहीं गया, शय्याकी शोभा बढ़ानेके लिये एक चौकी पर बहुतसी पुष्पमालायें धरी थीं, वह ज्यों की त्यों पड़ी रहीं, उनको बिछौने पर लगाता कौन ? बांदियें सोगयी थीं, पद्मिनीने उनको पुकारा नहीं। भीमसिंह भी पद्मिनीके पास ही एक पलँग पर लेट रहे। दीपक न जाने किस समय मद्दा पड़कर पवन का झोका लगते ही बुझगया, इस बातकी उन दोनोंको कुछ खबर नहीं।

पञ्चम परिच्छेद

पद्मिनी का पत्र

दूसरे दिन प्रातःकाल राजसभा (दरबार) से लौटकर आने पर भीमसिंह आश्चर्यमें होगये, उन्होंने देखा, कि—उनके घरका द्वार भीतरसे बन्द है। द्वारके पास ही सफेद पत्थरके छोटे २ दो जाली-दार झरोखे थे, उनमेंसेही एकमेंको झाँककर भीमसिंहने देखा, कि-रानी पद्मिनी कलम दावात लिये कुछ लिखरही है। पद्मिनी कुछ लिखना पढ़ना भी जानती है,यह बात आज भीमसिंहको नयी ही मालूम हुई। पद्मिनी अपने नामको सार्थक करती हुई चिरकालसे उनके घरमें लक्ष्मीकी समान निवास करती है, परन्तु आज उसको सरस्वतीकी मूर्त्तिमें भी देखकर भीमसिंहके आश्चर्यकी सीमा न रही। भीमसिंह ने पुकारा, पद्मिनी ! पद्मिनीने दौड़ी २ आकर चट किवाड़ खोलदिये, परन्तु घरमें जाकर भीमसिंह को पद्मिनीके हाथके लिखे कागजका पता न चला। भीमसिंहने कहा, आज मैं देखता हूँ कि—लक्ष्मी सौतिया डाहको भूलकर सरस्वती के साथ बहनेला (मित्रता) कररही है, यह क्या बात है ?। पद्मिनीने मोतीकी समान चमकदार दाँतोंको बाहर कर कोमल अधरको धीरेसे चबातेहुए कहा, कि—बाहरकी गड़बड़ी को देखकर भीतरकी गड़बड़ी मिटा डाली है, नहीं तो फिर सर्वस्व नष्ट होता था ! भीमसिंह ने जरा हँसकर और सुर बदल कर

फिर कहा, कि—यह तो बड़ी अच्छी बात है! मालूम होता है, इसमें तो हमारा ही लाभ अधिक होगा?। एक स्थान पर लक्ष्मी और सरस्वती क्या सबको मिलती है? तुम दोनोंका मेल कैसे होगया? क्या मैं कुछ नमूना देख सकता हूँ?। लिखेहुए कागजको कहाँ उड़ादिया?

यह सुनकर पद्मिनीका मुख लाल २ होगया। एक वार भूमि की ओरको देखा, फिर बाहरको देखा, फिर टकटकी लगाये भीमसिंहकी ओरको देखकर पद्मिनी एक साथ हँसपड़ी और कहनेलगी, कि–नहीं ऐसा नहीं होगा। मेरी यह बात प्रकट होजानेसे यदि सब काम बिगड़ गया तो फिर क्या हुआ?। इतना कह पद्मिनीने लिखाहुआ कागज कुरतीके भीतरसे निकाल कर मुट्ठीमें बहुत कसकर दबालिया।

भीमसिंह देखकर भौंचक्केसे रहगये, उन्होंने पहिले कभी भी पद्मिनीको इस दशामें नहीं देखा था, आज उसको अपनी बात छिपाने में इतना आग्रह करते हुए देखकर उनको बड़ा आश्चर्य हुआ और उस लेख को देखनेकी उत्कण्ठा और भी अधिक बढ़गयी। "पद्मिनी! यह नई बात कैसी है इतना कहकर भीमसिंहने हँसते २ उसके दोनों हाथ पकड़ लिये और लिखा हुआ कागज जबरदस्ती छीननेका उद्योग करने लगे। पद्मिनीने कहा–छोड़ो छोड़ो! क्या आप जबरदस्ती करते हैं? मैंने आपसे छिपाकर दिल्लीके बादशाह अलाउद्दीनको एक पत्र लिखा है। आपको दिखानेसे कैसे ठीक लगेगी?। इतना सुनते ही भीमसिंहने तत्काल पद्मिनीके दोनों हाथ छोड़ दिये और अलग हटकर खड़े हो हँसकर कहनेलगे—पद्मिनी! मैं देखता हूँ, कि–तुम तो एक ही दिन में बहुत कुछ पाठ पढ़गयीं!। निःसन्देह अलाउद्दीन कोई जादू जानता है! परन्तु ध्यान रखना, अबकी बार अलाउद्दीनके आने पर यदि सन्धि करनी पड़ी तो उस सन्धिके उपलक्ष्यमें अलाउद्दीनके लश्कर में राजपूतोंकी ओरसे पहिली भेटरूपसे तुम ही दीजाओगी। यह सुनकर पद्मिनी भी हँसी और नीचेको मुख करके हाथ जोड़े हुए कहने लगी, कि—तथास्तु! मैं महाराणाकी राजभक्त प्रजा हूं—उनकी आज्ञाको कभी नहीं लौटूंगी। चित्तौर यदि सन्धि ही चाहती है तो पद्मिनीके कारण यह काम नहीं रुकेगा, इस बातका आप निश्चय रक्खें चित्तौरके हां करते ही मैं आत्मसमर्पण करदूंगी, परन्तु उससे पहिले मुझे इतना कहना है, कि–परमात्मा करें, कि—ऐसी विपरीतबुद्धि (कुमति) चित्तौरकी कभी न हो!। चित्तौरका यह गर्वोन्नत मस्तक चिरकाल तक ऊंचा ही रहै! चित्तौरका ऊंचा माथा इस साढ़े तीन सौ हाथ ऊंचे किलेके शिखरकी समान, परमात्मा करै सकल राज-

पूतोंके देशके ऊपर छत्रछाया करता हुआ सबको अभय देता रहै! इसको कभी अभय दूसरेसे मांगना वा मोल लेना न पड़े। जिसके वरणोंका चिन्ह भी शत्रुको देखकर हंसता है, परमात्मा करे वह एक बार भी शत्रुके हाथमें न पड़े! तब ही राजपूतों की प्रतिष्ठा रहेगी और मनुष्यत्वकी रक्षा होगी।

बोलतेर पद्मिनीके नेत्रोंमेंसे मानो चिनगारियें निकलने लगीं। भीमसिंह हँसीके प्रवाहमें पैरते २ इसप्रकार एकायकी एक बड़ेभारी ज्वालामुखी पर्वतके खाड़में जापड़ेंगे, इस बातका ध्यान उनको कभी स्वप्नमें भी नहीं आया था। एकसाथ चुप्प होगये, उनको प्रतीत होनेलगा, कि—पद्मिनीकी बातें बिजली की समान बड़े वेगसे हृदयके भीतर घुसकर उनकी नसोंके २ नको उकसा रही हैं।

पद्मिनीने जराएक थमकर गहरा सांस लिया, और फिर कहने लगी, कि—यह पत्र मैंने अलाउद्दीन को नहीं, किन्तु कमलाको लिखा है। मैंने सुना है, कि-गुजरातके राजा करणरायका दूत आज दिल्लीको लौट कर जायगा,उसके ही हाथ आज उस कुलाङ्गारिणीको एक आशीर्वादपत्र भेजनेका विचार किया है, आशा है इसका कुछ शुभ फल निकलेगा। आप इस पत्रको देखना चाहते थे देखलीजिये, मेरा ऐसा कोई काम नहीं होसकता, कि-जिसको मैं आपसे छिपाकर करूं! परंतु दूतको समझा कर ऐसा प्रबन्ध कर दीजिये, कि-जिसमें यह पत्र कमलाके पास शीघ्र ही पहुंचजाय।

भीमसिंह पत्रको हाथमें लेकर विचारने लगे, कि दिल्लीके साथ विरोधका अवसर सामने आगया है, इस समय इसप्रकार कोई पत्र वहाँ भेजना ठीक है या नहीं और यदि भेजा ही जाय तो शत्रुपक्षके ऐसे मनुष्यके हाथ कि—जिसका कुलशील कुछ भी मालूम नहीं है, भेजना चाहिये या नहीं?, इसप्रकार बहुत देर तक ऊँच नीच सोचते रहे, परन्तु कुछ सिद्धान्त न कर सके,पद्मिनी उनके मनकी बात ताड़ गयी और कहनेलगी, कि—राणाजी! आप इतनी चिन्ता काहे की करते हैं?, क्या राज्यके मङ्गल अमङ्गलकी बात विचार रहे हैं? अलाउद्दीनको निमन्त्रण तो अबसे पहिले ही होचुका है, अब और अधिक अमङ्गलकी क्या संभावना है? । अलाउद्दीन यदि आवेगा ही तो वीरपुरुषोंकी समान उसको निमन्त्रण देकरही बुलाना ठीक है। हमें क़ायर समझकर वह एक साथ हमारे घरमें घुस आवे और हमको भ्रूकुटी दिखावे, ऐसा अवसर उसको क्यों दियाजाय?। करणराय अलाउद्दीनको चित्तौर पर चढ़ाई करनेके लिये उभारनेको गया है,

जाओ, परन्तु अलाउद्दीन साथही साथ जब हमारे इस पत्रको भी पावेगा तो समझेगा, कि—करणराय या अलाउद्दीनकी शत्रुता चाहे जितनी भयानक हो, परन्तु वह चित्तौरको कभी भय नहीं दिखासकते, उनकी क्या शक्ति है, कि-वह चित्तौरको छूभी सकें। विपत्तिके साथ क्रीड़ा करनेसे ही चित्तौरका आमोद है—विपत्तिके साथ क्रीड़ा करने के लिये ही चित्तौरकी स्थापना हुई है—चित्तौर ऐसे अवसरकी हर समय प्रतीक्षा करती रहती है। चित्तौर केवल बातोंका पुल बाँधना अच्छा नहीं समझती, चित्तौर समय पर अपनी प्रतिष्ठा रखना-अपना स्वरूप दिखाना जानती है।

इसप्रकार एक नयी युक्ति पद्मिनी से सुनेंगे, इस बातको भीमसिंह ने सुपनेमें भी नहीं विचारा था, वह कुछ भी उत्तर न देसके और क्या यह बात ठीक है?, इस ऊहापोहमें एकबार पद्मिनीकी ओरको और एकबार पत्रकी ओरको देखनेलगे। इसके बाद धीरे२ पत्रको खोलकर पढ़नेलगे। पढ़ते २ भीमसिंहके नेत्र और मुख उज्वल होउठे। एक गर्व और स्फूर्त्तिके प्रकाशने उनके सब शरीरको दमकादिया। पत्रको पूरा करके भीमसिंहने कहा—पद्मिनी! तू पद्मिनी ही है। पद्म (कमल) की सुगन्धकी समान ही तेरा गुणग्राम चित्तौरको महकादेगा। अला उद्दीनकी क्या शक्ति है जो वह तुम्हारे एक बालके अग्रभागको भी छूसके ? मैं तुम्हारा पत्र अवश्य भेजदूँगा।

भीमसिंह इतना कहकर पत्र लिये हुए बाहरको चले आये। पद्मिनी एक किवाड़ पर हाथ धरे बहुत देरतक चुपचाप खड़ी रही, फिर धीरे २ बारादरी के ऊपरकी सेनचीमें जापहुंची। तहां जाकर देखा, कि—उस अट्टालिका के चारों ओर सरोवरका जल कितना स्थिर और धीर है। सामने ही मेघकी गड़गड़ाहट सुनाई आरही है किलेके ऊपर एक लाल पताका वायुसे फहरा रही है, परन्तु नीचे जरा भी शब्द नहीं है, चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ है। पद्मिनी विचारने लगी, कि—क्या यह प्रलय का पूर्वरूप है?।

द्वितीय-खण्ड

प्रथम—परिच्छेद

यमुनाके किनारे पर दिल्लीकी ऊंची छटा बड़ी ही सुन्दर है। ऊपर नीला आकाश है, सामने नीली कालिन्दी है और किनारे पर हरे रङ्ग से पुता हुआ बड़ाभारी महल है, उस महलमें पादशाहकी धवल अट्टालिकायें मानो मनोरमभावसे खिलखिलाकर हँस रही हैं।

यह पृथ्वीराजकी दिल्ली अब नहीं है। अपूर्व अपूर्व चारु चित्रकला और शोभन-शिल्प-मंडित हिन्दूमन्दिरोंके पुरातन कङ्काल इस समय बादशाहके महलको पुष्ट कररहे हैं। पहिले जहाँ मन्दिर था इस समय तहां मसजिद बनगयी है। पहिले जहां जयस्तम्भ था, इस समय तहां मीनार बनाहुआ है। पहिले जहां धर्मशाला थी, इस समय तहां सराय बनी हुई है, महल के एक ओर यमुनासे, कुछ ही दूर रङ्गमहल है। फारिसके फूलोंके पौधे ईरानके गलीचे और इस्पाहानके सैंकड़ों प्रकार के सामानोंने उस रङ्गमहलको स्वर्गीय विचित्रता से भर रक्खा है बसराके गुलाबजल, कन्दहारकी कस्तूरी और काश्मीरके नीलकमल की सुगन्ध से रङ्गमहल सदा ही महकता रहता है। इस रङ्गमहल के ही एक सजे हुए कमरे में यमुना की शीतल पवन की हिलोरें लेती हुई दिल्लीकी प्रधान बेगम हाथी दांतके पलँग पर एक दिन बड़े आरामसे सोरही है। दीवारमें होकर एक सफेद पत्थरका छोटा नल महलके भीतर गया है, उसमें को ही होकर एक जल की धारा महलके भीतर पहुँचकर पलँगके पास ही एक कमलाकार सङ्गमरमर के हौजमें गिर रही है इसके कारण हवाके साथ झिलमिल कर कुहरे के निर्मल कणोंकी समान जलके कण उस कमरेको तर कररहे हैं।

अचानक एक बाँदी धीरे २ पैर रखती हुई उस अपूर्व कमरे में आई, बेगम बेखबर सोरही है, बाँदीके हाथ में एक पत्र है, बड़ी सावधानी से उस पत्रको ओढ़नीमें छिपाकर बाँदीने एक बार बेगम की तरफको और एकबार फिर पीठ फेरकर बाहरकी ओरको देखा इसके अनन्तर एक अचरजभरी घबड़ाहटके साथ उस पत्र को बेगम के शिर के पास तकिये पर धरकर बिजली की समान चकित हो तैसे ही धीरे २ पैर रखती हुई तहां से लौट पड़ी। यह घटना मुहूर्त्त भरमें होगयी, किसीने भी न देख पाया, बेगम जैसे सोरही थी तैसे

ही सोती रही, यमुना की जलधारा तैसे ही गिरकर बिखरती रही तीसरे पहरका पवन जल के कणों को लेकर वैसा क्रीड़ा करने में मग्न था, तैसे ही मग्न रहा, धीरे २ दिन छिपने को आगया।

सायङ्कालकी नौबतकी ध्वनिको सुनकर ज्यों ही बेगमने आंखें मल कर करवट ली कि—गरदनके नीचे एक कड़ी वस्तु मालूम हुई। गरदन के नीचे हाथ डालकर उस वस्तु को बाहर निकालते ही मालूम हुआ, कि—किसी का लिखा हुआ पत्र है। आलस्य में भरे हुए नेत्रों को फिर ज़रा मलकर पत्रकी ओरको अच्छे प्रकार देखकर एकसाथ बैठी होगयी। बेगमके नेत्र पहिले सरल थे, धीरे २ तिरछे होने लगे,कुछ देर बाद उनमेंसे एक बड़ेभारी आश्चर्यका प्रकाश फूट निकला, बेगम पत्रको खोलकर देखने लगी और फिर एक साथ थमगयी। ओः! यह कौन भाषा है? न अरबी है, न फारसी है यह तो हिन्दुस्थानी मालूम होती है। नागरी अक्षरोंको देख पत्रको तय करके धर दिया और फिर पलंग पर लेटरही। फिर पुकारा, कि- दिल्लो! परन्तु किसीने कुछ उत्तर नहीं दिया। तब बेगमने क्रोधमें भरकर भ्रकुटी चढ़ाकर फिर जोरसे पुकारा, कि—बांदी, अबकी बार एक लौंडी आंखें मलती २ घबड़ायी हुई उस कमरेके भीतर आकर कहनेलगी, कि-बेगम साहब क्या हुकुम है?। बेगमने बांहके सहारे से आधी बैठकर वह पत्र बाँदीको दिया और पूछा कि—यह कहांसे आया?। पत्रको उलट पुलटकर देख बाँदी पड़ अचम्भेमें होगयी और कहने लगी, कि-यह क्या है? उसके नेत्रोंमें उस समय भी नशेकी खुमारी स्पष्ट मालूम होरही थी, उसको भाँपकर क्रोधके मारे होटको चबाती हुई बेगमने उत्तर दिया, कि-हरामजादी! यह तुझ को सूली देनेका परवाना है! जो सो सो कर पहरा देती हैं, उनके लिये ही यह प्रबन्ध हुआ है!। बाँदीने थर २ काँपते हुए कहा दुहाई है बेगम साहबकी, मैं जानकर नहीं सोयी थी, निःसन्देह शराबमें कुछ मिलाहुआ था, अभीतक मेरा माथा घमक रहा है। दुहाई है रानीजी की! गुस्ताखी माफ हो, मैं कुछ नहीं जानती।

बेगम उठकर बैठी होगयी और जोरसे बोली कि—शराब! शराब! बता तुझे शराब किसने दी थी, आज उसको ही सूली दीजायगी। बांदीने कहा—मैं अपने आप ही मालखानेमेंसे लेआयी थी, दी किसी ने नहीं थी परन्तु किसीने उसमें कुछ मिला रक्खा था, इसमें ज़रा संदेह नहीं है। नहीं तो इस तरह एक ओरको प्याला न पड़ा होता और उसको पीनेसे भी मेरे शिरमें ऐसा चक्कर न आता।

बेगमके धीरजका बांध टूटगया और 'चुप रह हरामजादी' कहकर उठी तथा एक लात मार कर बांदीको ढकेल दिया और फिर-"तुझे मरने की जगह नहीं थी, जो मेरे यहां बांदीगीरी करनेको आयी? चली जा यहां से!" इतना कहकर उसको कमरेके बाहर निकाल दिया।

रात्रिके समय जब बादशाह रङ्गमहलमें बेगमके पास मिलनेको आये तब उनके हाथमें पत्र देकर बेगमने कहा, कि—यह पलँग पर तय किया हुआ मिला है, नागरीमें लिखा है, इसलिये नहीं मालूम क्या माजरा है। अलाउद्दीनने कहा, कि-तुम हिन्दू स्त्री होकर नागरी नहीं जानतीं?, यह तो तुम्हारे ही देशकी भाषा है। यह सुन, बेगमने हँसकर कहा—मैं लिखना पढ़ना नहीं जानती। आपने हिन्दू पुस्तकोंमें सुना होगा, कि—कमला (लक्ष्मी) और सरस्वती एक जगह नहीं रहतीं इसलिये ही मैंने लिखना पढ़ना नहीं सीखा। अलाउद्दीनने हँसते हुए उस पत्रको अपनी जेबमें रखकर कहा, कि—अच्छा तो जहन्नुममें जाय तुम्हारी सरस्वती! कमलाके बलसे ही मैं दिग्विजय करलूंगा, कलको मैं सब जगहके पण्डितोंको बुलवाकर हुक्म देदूंगा कि-जो इस पत्रका तरजुमा कर सकेगा, उसको सौ अशरफियें इनाममें दी जायँगी और जो मंजूर करने पर नहीं करसकेगा वह जेलखाने भेज दियाजायगा।

द्वितीय परिच्छेद

उस दिन रात्रिके समय यमुनाके पक्के घाट पर बैठे हुए एक ज्योतिषीजी पोथीपत्रा बांधकर आकाशकी ओरको देखरहे थे। घाटके लोग एक २ करके सब चले गये हैं। स्थान प्रायः निर्जन होगया है। केवल यह ज्योतिषीजी ही न हिलते हैं न डुलते हैं, टकटकी लगाये आकाशकी तरफको ही देखरहे हैं। यमुनाके नीले जलकी तरङ्गों पर तरङ्गें आकर उनके चरणोंके समीप मधुर तान अलाप रही हैं। इतने में ही न जाने कहांसे एक राजपूत धीरे २ आकर उनके सामने खड़ा होगया। ज्योतिषीजी उसकी ओरको देखते ही चौंक कर कहनेलगे, कि—तुम अब आये! इतना विलम्ब क्यों किया?। राजपूतने उत्तर दिया, कि—मैं कल ही शहरमें आकर पहुंच गया था, परन्तु एक काममें विलम्ब होगया। ज्योतिषीजीने कहा कि-मेरी समझमें तो तुम इस देशमें नये ही आये हो, फिर तुम्हें क्या काम निकल आया?।

राजपूतने कहा, कि-रानी पद्मिनीने महारानीके लिये एक पत्र [illegible]ा था, चलते समय मैं प्रतिज्ञा करके आया था, कि—यह

पत्र मैं महारानीके पास अवश्य ही पहुंचादूंगा, उसके ही प्रवन्धमें देर होगयी। ज्योतिषीजी यह सुनते ही अचम्भेमें होगये, कुछ देर टकटकी लगाये हुए चुपचाप राजपूतकी ओरको देखते रहे और फिर कहनेलगे, कि-महारानी किसको कहते हो? कमलाको? नहीं नहीं अब उसको वेगम कहा करो। कमला इस समय दिल्लीके बादशाह की वेगम है। गुजरातकी कमला, इस पठानोंके किलेके भीतर आज वेखटक पठान दैत्योंके साथ गृहस्थी बांधे बैठी है, अब उसका गुजरातके साथ क्या सम्बन्ध है?अच्छा इसको जाने दो,अब यह बताओ, कि-पद्मिनीने कमलाको कैसी चिट्ठी लिखी है? और वह चिट्ठी कहां है?। राजपूत नीचेको मुख करके कहनेलगा, कि-चिट्ठीको मैंने पढ़ा नहीं, अभी एक बांदीको लालचमें लाकर वह चिट्ठी गुप्तरूपसे महारानीके पास पहुंचवा आया हूँ। यह सुनकर ज्योतिषीजीने कहा, कि-मूर्ख! तूने यह क्या किया? और फिर कुछ देर चोनके साथ चुप रहकर धीरे २ कहनेलगें, कि—भगवान्ने उपाय तो जुटा दिया है। परन्तु तेरी मूर्खताके कारण वह विगड़जाय तो आश्चर्य नहीं, खैर! मेरा पत्र तो राणाको देदिया था?। राजपूतने संकुचित स्वर में कहा, कि—हाँ महाराज! देदिया, उस पत्रके पहुँचते ही चित्तौर में युद्धकी तय्यारियें होने लगीं। ज्योतिषीका मुख फिर कुछ प्रसन्नसा होउठा और कहनेलगे, कि—तय्यारी करें, अच्छे प्रकार करें, यही अन्तिम अवसर है। फिर ऐसा अवसर नहीं मिलेगा, इसवार वह यथाशक्ति रणलीला करलें। इतना कहते २ एक पैशाचिक जिघांसा की छायाने ज्योतिषीजीके मुखको महाभयानक करडाला। ज्योतिषी जी उठ खड़े हुए और पोथी पत्रा समेटकर राजपूतसे फिर कहा,कि-आओ, अब यहाँ ठहरनेकी आवश्यकता नहीं है, चलो घर चलें, वहाँ चलकर सब बातें अच्छे प्रकारसे सुनेंगे। काम बहुत कुछ ठीक होगया है, ईंधन प्रायः इकट्ठा होचुका है,बस अब आग लगा देनेकी देरी है। इसके बाद राजपूत ज्योतिषीके साथ २ नगर में चलागया।

तृतीय-परिच्छेद

दूसरे दिन प्रातःकाल होते ही ज्योतिषीजी बड़े आडम्बरके साथ वस्त्र आदि धारण करके बादशाहके महलके पास आपहुँचे, कितनी ही देर तक इधर उधरको देखते रहे, इतनेमें ही एक बाँदी आकर उनके कानमें न जाने क्या२ कहगयी। ज्योतिषीजी उसी समय चौकन्ने होकर शाही महलकी तरफको चल दिये और ज़रा ही देरमें सदर

दरवाजेके पास आपहुँचे। यहाँ सन्तरी बड़ी २ नङ्गी तलवारें हाथमें लिये पहरा देरहे थे, ऊपर नौबत प्रभाती रागमें अपूर्व सङ्गीतके साथ बजरही थी, ज्योतिषीजी सदर दरवाजे पर आकर खड़े होगये और फिर बैठनेके लिये इधर उधर स्थान खोजने लगे। इसी समयमें एक सवारने आकर उनसे कहा, कि—क्यों महाराज! आप हिन्दुस्थानी हैं! आइये मेरे साथ दरबारमें चलिये, बादशाहका हुक्म है, अभी आना होगा!, सवारकी इस अनोखी बातसे ज्योतिषीजीको कोई बड़ा भारी आश्चर्य नहीं हुआ और उन्होंने चलनेसे इनकार भी नहीं किया केवल इतना ही कहा, कि—कहिये कोतवाल साहब! क्या हुआ बताइये तो सही?।

यदि और कोई अवसर होता तो इतनी बात कहनेसे सवार अवश्य ही ज्योतिषीजीको बेंतोंका मजा चखाता, परन्तु इस समय ज्योतिषीजीने उसको एकसाथ कोतवालजी कहकर पुकारा, इसलिये वह कोप न करसका। वह सवार न कोतवाल ही है, न फौजदार ही है, तो भी उसने मूँछोंपर हाथ फेरकर कहा, कि—अरे! और क्या होता, बादशाहका हुकुम है, बस चले चलो। ज्योतिषीजी भी 'बहुत अच्छा चलिये' कहकर सवारके साथ २ किलेके भीतर चलेगये। उस समय फाटककी नौबत बड़ी गर्जनाके साथ बजरही थी, ज्योतिषीजी को मालूम हुआ, कि—मानो यह प्रभातकी नौबत नहीं है, किन्तु युद्ध का बाजा बजरहा है।

चतुर्थ परिच्छेद

बादशाहके पास पहुँचते ही ज्योतिषीजीने खूब झुककर सलाम किया और नीचे को निगाह कियेहुए खड़े हो कहने लगे, कि—जहांपनाह! मैं आपके पत्रका तर्जुमा करदूंगा। बादशाहने मुसकुराकर कहा, कि—पत्रका तर्जुमा करना होगा, यह बात तुमसे किसने कही ज्योतिषीजीने बगल में की छोटीसी पोटली दिखाकर कहा, कि—इस पोथी पत्तरेने, इसकी सहायता से मैं दुनियाभरका हाल जान लेता हूँ, आप के मनकी बातका पता भी इसी से पा लिया है। बादशाहने कहा—मालूम होता है आप एक अच्छे नजूमी हैं परन्तु खबरदार! मेरे साथ धोखाबाजी करने से सूलीकी सजा मिलेगी! आप इस पत्रका ठीक २ तर्जुमा तो कर सकेंगे? ठीक २ तर्जुमा हो जाने पर एक सौ अशर्फियां इनाम में दूंगा। ज्योतिषीजीने हाथ बढ़ा कर पत्र लेलिया। लोगों को बड़ाभारी धनभंडार पाने पर आनन्द

होता है इस पत्रको पाकर ज्योतिषीको भी बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ ज्योतिषीजीने पत्रको लेकर उसी समय अपने पेटे में बाँधलिया।

बादशाह ने कहा—अच्छा! आज तुम इसको घर लेजाओ मैं सिपाही,साथ किये देता हूँ यह जाकर तुम्हारा घर देख आवेगा परन्तु कल प्रातःकाल ही मैं इसका तर्जुमा चाहता हूँ अगर न मिला तो तुम्हारा घर द्वार खुदवा कर फिकवादूंगा। ज्योतिषी ने कहा शाहं-शाह! कल प्रातःकाल ही तर्जुमा पेश करूंगा, चिन्ता न कीजिये, उस में बहुत थोड़ासा काम है देर ही कितनी लगेगी। यह उत्तर पा कर बादशाहने खुश होते हुए कहा कि—मालूम होता है तुम बड़े काम के आदमी हो परन्तु एक बात इसी समय बूझना चाहता हूं, तुम तो नजूमी हो, जरा हिसाब लगाकर बताओ तो सही यह पत्र कहां से आया है? ज्योतिषीजी जरा देर भूमिकी ओरको ताकते रहे फिर कहने लगे कि—जहांपनाह! यह पत्र एक स्त्रीका भेजा हुआ है चित्तौरकी रानी पद्मिनीने गुर्जरी बेगमको भेजा है। बादशाहने कहा कि-क्या चित्तौरकी रानी भीमसिंहकी औरत पद्मिनी ने भेजा है? कि-जिसकी खूबसूरती की बड़ी भारी शोहरत है?।

ज्योतिषीने कहा, कि-जहांपना! केवल खूबसूरती में ही नहीं,गुणों में भी भारतवर्षमें पद्मिनीकी समान दूसरी नारी नहीं है। यह सुनकर बादशाह जरा चुप हुआ और फिर कहनेलगा, कि-यह बात तो कहनेभरको ही है, हमारी गुर्जरीकी समान दूसरी सुन्दरी किसी राजाके रनवासमें नहीं है।

इस बातको सुन ज्योतिषीने क्षणभर चुप रहकर कहा, कि-जहाँ-पनाह! गुस्ताखी माफ हो,दोनों रानियोंको मैंने अपनी आँखोंसे देखाहै, गुर्जरी बेगम पद्मिनी के पैरके नखकी समान भी नहीं है। इतना सुनते ही अलाउद्दीन आपेसे बाहर होगया और एक साथ तख्त परसे आधा उठकर कहनेलगा, कि—अगर किसी दूसरेने यह बात कही होती तो मैं अभी तलवारसे शिर काट लेता,परन्तु तू नजूमी है,तुझसे मुझे काम लेना है, इसलिये ही इस बार छोड़े देता हूँ, अब जरा मुंह सम्हालकर मैं जो कुछ पूछता हूँ, उसका जवाब दे?, बता यह पत्र कमलाके महल में कैसे पहुँचा?।

ज्योतिषी फिर कुछ देर तक नीचेको दृष्टि किये भूमिकी ओरको देखता रहा, फिर धीरे २ कहनेलगा, कि-जहाँपनाह! एक राजपूतने चित्तौरसे इस पत्रको लाकर एक बाँदीके द्वारा गुप्तरूपसे बेगमके

महलमें डलवा दिया है। अलाउद्दीनने क्रोधभरे शब्दमें कहा, कि—यह काम बाँदीका है! महलके भीतर ऐसी दगाबाजी! जल्दी बोलो, वह कौनसी बाँदी है?।

ज्योतिषीने कहा, वह कोईसी भी हो, परन्तु बड़ी चतुर है, बड़ी होशियारीसे इस कामको किया है, उसको पकड़ लेना सहज बात नहीं है, बेगमकी खवासको शराबके साथ विष देकर घरमें घुसी है। इतना सुनकर अलाउद्दीन विचारने लगा, कि-कमलाने बांदीसे जो जो बात सुनी थी वह सब ही सच है। ज्योतिषीकी विद्याशक्तिसे अलाउद्दीन बड़ा प्रसन्न हुआ, और कहनेलगा, कि—असलियतमें तुम एक अच्छे नजूमी हो, अब तुम जल्दीसे उस बांदीका नाम बताओ। ज्योतिषीने कहा—जहांपनाह! मेरी गणितमें इतना भेद खोलदेनेकी ताकत नहीं है, यदि ज्योतिषियोंमें इतनी ताकत आजाय तब तो दुनियां के कामोंमें बड़ी गड़बड़ी होजाय, इसलिये यह काम कौनसी बांदीका है, इस बातका पता हुजूरके कोतवाल लगावेंगे।

अलाउद्दीनने कहा-बहुत अच्छा, इस बातका पता लगानेका काम कोतवालको ही देदियाजायगा, परन्तु तुमसे मैं एक बातका भेद और जानना चाहता हूं। यह बताओ, कि-पद्मिनीका मतलब क्या है?। इस तरह इतना हङ्गामा करके जो उसने बेगमको पत्र लिखा है, इसके भीतर अवश्य ही कुछ भेद छिपा हुआ है, उसकी बेगम बननेकी इच्छा है या नहीं?। इतनी बात कहकर अलाउद्दीन कौतुकभरी दृष्टिसे ज्योतिषीके मुखकी ओरको देखनेलगा। ज्योतिषीने उसी समय धीरे से भूमिमें एक लात मारी और फिर कहनेलगा, कि-जहांपनाह! इस प्रश्नका उत्तर आप कलको उसकी चिट्ठीमें पाजायँगे। पद्मिनी राजस्थानका गौरवपुष्प है, उसको पालेना हिन्दोस्थानके बादशाहके लिये भी सहज होगा, ऐसी आशा नहीं की जासकती। ज्योतिषीका व्यवहार क्रम से अलाउद्दीनको जरा एक उलझनका प्रतीत होने लगे। एक चोट खायेहुए आत्माभिमानकी उत्तेजनासे अबकी बार अलाउद्दीन एक साथ उत्तेजित होउठा और कहनेलगा, कि—क्या ऐसी बड़ी बात है?, क्या एक हिन्दोस्थानभरका बादशाह एक नाचीज नारीको नहीं पासकता? अच्छा देखा जायगा! इतना कहकर बादशाह के एक सिपाहियोंको ज्योतिषीके साथ जानेकी आज्ञा देकर महलके अन्दर चलागया, ज्योतिषीजी अगत्या उन सिपाहियोंके साथ२ अपने घरकी तरफको चलादिये, उस समय उनके नेत्रोंपर एक छिपेहुए अस्वाभाविक आनन्दकी ज्योति किसीर समय अपना प्रकाश करजाती थी।

पञ्चम परिच्छेद

घर आकर ज्योतिषीजीने दरवाजा बन्द करके पद्मिनीका पत्र खोला। पत्रको पढ़कर उनको बड़ाही आनन्द प्राप्त हुआ, ज्योतिषीजीने देखा, कि-वह जो कुछ चाहते थे, पत्रमें ठीक २ वैसा ही लिखा हुआ है। पाठक महाशयों! यह ज्योतिषी और कोई नहीं है, स्वयं गुजरातके राजा करणराय हैं, इस बातको बहुतसे पाठक हमारे बतलानेसे पहिले ही समझगये होंगे। करणरायने देखा, कि-अलाउद्दीनको, चित्तौरमें निमन्त्रण देनेका भार पद्मिनीने स्वयं अपने ऊपर लिया है चिन्ताके साथ मगज पिच्ची करके अब अलाउद्दीनको अधिक उकसाना नहीं पड़ेगा, केवल पत्रकी बातें साफ२ समझादेनेसे ही काम चलजायगा। म्लेच्छके हाथमें आत्मसमर्पण किया, हिन्दुओंके गौरव पर लातमारी, नारीकी हिन्दूमर्यादा और हिन्दूधर्मकी गरदन काटडाली, इन कारणों को लेकर पद्मिनीने कमलाको जो धिक्कार दिया है, और तिरस्कार किया है, उन धिक्कार और तिरस्कारको क्रोधी अलाउद्दीन चुपचाप हजम नहीं करसकेगा। इस बातको परमचतुर करणराय अच्छे प्रकार समझ गये। करणरायने शीघ्र ही उस पत्रका फारसीमें तरजुमा तयार करलिया, तर्जुमे में करणरायने जो अभिप्राय प्रकट किया, वह यह था:—

बहिन!

सुना है, कि—तू इस समय दिल्लीश्वरी बनगयी है—बेगम कहलानेलगी है—बड़े अचंभेकी बातहै, तुझे बहिन नाम लेकर पुकारनेमें भी मुझे भय लगता है—हिन्दू रमणीके लिये तो यह सौभाग्य नया ही है। मेरी समझमें नहीं आता, कि-गुजरातके राजमहलमें गुर्जरेश्वरके घर किस वस्तुकी कमी थी, परन्तु यदि इसलाम धर्म और पठानकी भयावनी सूरत पर तेरा जी ललचाया है तो मेरी समझमें तेरे चित्तको पहिले हिन्दूके घर भेजकर परमात्माने बड़ी ही भूल की है, हिन्दू रमणीकी ऐसी अभिलाषा होना बड़ी विचित्र बात है।

बहिन! क्या तू नहीं जानती, कि-हिन्दूरमणीका एक बार के सिवाय दूसरी बार विवाह नहीं होसकता, उनका एकके सिवाय दूसरा प्रेम वा सेवाका पात्र नहीं होता और एकके सिवाय उनका दूसरा धर्म नहीं होता, फिर तूने यह काम कैसे किया?। परन्तु जब ऐसे लोभने तेरे विवेकको वशमें करलिया तो वह हिन्दूधर्मके विचार

तेरे हृदयमें स्थान ही कहाँ पासकते थे? परन्तु ऐसे तुच्छ प्रलोभनसे तेरा मन मोहित होगया, यह बड़े ही अचरजकी बात है? जिस हत-भाग्यने तुझको इतने दिनों तक अपने हृदयमें रखकर तेरी पूजा की सर्वस्व देकर तेरी प्रतिष्ठाको बढ़ाया और जिसके अनुग्रहसे तू तू सन्तानवती हुई-उसका सङ्ग, उसकी सेवा और उसकी पूजा तेरे सबसे बढ़कर प्रलोभनकी सामग्री नहीं हुई, इस बातको विचार२ कर मैं बड़े आश्चर्यसागरमें गोते खारही हूँ। "म्लेच्छका संसर्ग एक दिन तुझे नरकके मार्गमेंको घसीटकर लेजायगा" यह सन्देह मुझे पहिले ही हुआ था, परन्तु तेरे ऊपर बाँदी मतियाका इतना प्रभाव है, इस बातको मैं उस समय नहीं जानसकी थी।

बहिन! मैंने सुना है, कि—तेरे एक कन्या सन्तान है। एक बार उस कन्याकी सूरतका ध्यान कर और विचार कि-उस मुखमें जिस की छवि छा रही है, एक दिन उसके साथ तेरा क्या संबन्ध था?, उस मुखको जिसके अनुग्रहसे देखा है, उसके समीपमें तू कितनी ऋणी है? भोगविलासके लालचमें प्राणोंकी अपेक्षा भी अमूल्य मूल्य देकर तूने जिस कलुषित कोमलशय्या और रमणीय रत्नसिंहासन को खरीदा है, उसके ऊपर बैठकर एक बार विचार करना, कि—जिन्होंने एक दिन तुझे राज्य सुखभोगमें गौरवमें और मानमर्यादामें अपनी समान बनानेमें कुछ भी कमी नहीं की थी, वह इस समय कहां हैं? बहिन! तुझे और क्या लिखूं? तूने हिन्दोस्थानके गौरवमुकुटमें कलङ्कका टीका लगाया है, न जाने वह अब कितने दिनोंकी साधना से साफ होगा? और भी सर्वनाशकी बात यह है, कि—ऐसा कल-ङ्कित काम करनेवाली कोई साधारण नारी नहीं है, किन्तु स्वयं तू गुजरातके महाराजकी अर्द्धाङ्गिनी-सहस्रों स्त्री पुरुषोंकी वन्दनीया नारी है!, जिसकी ओरको देखकर भारतकी स्त्रियें नीति सीखनेका दावा रखती थीं, वही तू स्वयं अनीतिके गहरे गढेमें जा गिरी!, आज तूने जगत्को यह कैसी शिक्षा दी है? तेरे इस आदर्शसे तो भारतमें घोर पापाग्नि धधक उठेगी! बहिन! मैं दिव्य दृष्टिसे देखती हूँ, कि—यदि शीघ्र ही इस पापका प्रायश्चित्त नहीं होगा तो यह संक्रामक (उड़ने) रोगकी समान हिन्दुओंके घर २ में फैलजायगा, बनकी दौंकी समान जातिको और धर्मको भस्म करडालेगा, सैंकड़ों पुण्यके आदर्श भी फिर भारतकी पुरानी पवित्र छटाको लौटा कर नहीं लासकेंगे। बहिन! इस पापका प्रायश्चित्त कर! भारतकी सैंकड़ों सहस्रों नारियें आज दुःखभरी दृष्टिसे मुख उठाये हुए तेरी ओरको

ताक रही हैं। उनकी प्रतीक्षाको व्यर्थ न करदेना!, अन्तिम कर्त्तव्य के पालनसे मुख न मोड़ना। इस बातका निश्चय रखना, कि-यदि तू इस पापका प्रायश्चित्त नहीं करेगी तो वह ही इस भारको अपने शिर पर लेंगी, क्या उस समय तू घोर पापिनीकी समान बैठी २ ही देखती रहेगी?। आशा है तू मेरे पत्रको पढ़कर इस पर पूरा २ ध्यान देगी, बस यही वक्तव्य है।

भीमसिंहकी वनिता-पद्मिनी

उस दिन रातको जब अलाउद्दीन विश्राम करनेके लिये कमलाके महलको गया, तो उस समय बेगमने कहा, कि-जहांपनाह! चारों ओर यह युद्धकी तयारियें क्यों होरही हैं?। बादशाहने कहा-कमला! मैं चित्तौर पर चढ़ायी करूँगा, मैं देखूँगा कि-वह पद्मिनी कितनी बड़ी अभिमानिनी है। इतना कहकर बादशाहने करणरायका तर्जुमा कियाहुआ पत्र कमलाको पढ़कर सुनाया। उसको सुनकर कमलाकी आँखोंमेंसे भी चिनगारियेंसी निकलनेलगीं।

बादशाहने कहा कि—यदि मेरा नाम अलाउद्दीन खिलजी है तो पद्मिनीको लाकर तेरी बांदी बनाऊँगा। मैं कलको ही चित्तौर पर चढ़ायी करूँगा, अब मेरा सबसे पहिला काम पद्मिनीके गर्वको तोड़ना है। कमलाने भी आवेशमें भरकर कहा, कि-हां! जहांपनाह! ऐसा ही होना चाहिये, एक पहाड़ी तुच्छ स्त्रीको इतना घमण्ड! यह बात कभी नहीं सही जासकती!। इस बातको सुनकर बादशाह प्रसन्न हुआ।

दूसरे दिन सोकर उठते ही ज्योतिषी बने हुए करणरायने मार्गमें आकर देखा तो चारों ओर सेना के शस्त्रोंकी झनझनाहट सुनायी आरही है। गली २ में फौज कवायद कररही है। पलटन २ में अस्त्र शस्त्र सम्हाले जारहे हैं। सेनापति अपनेदल बलको लेकर तयार होरहे हैं। चारों ओर युद्धके लिये तयारी की ही चहल पहल है। हरएक मनुष्यके मुखसे यही बात सुनायी आरही है, कि-आज ही तीसरे पहरके समय बादशाह फौजके साथ चित्तौरकी ओरको रवाना होंगे।

घर आकर करणरायने उस पत्र लेजानेवाले राजपूतसे हँसतेहुए कहा, कि—धर्मसिंह! काम बनगया, बादशाह चित्तौर पर चढ़कर जारहा है। हम भी कल काबुलकी ओरको रवाना होंगे।

धर्मसिंहने कहा-महाराज! काबुलमें कहां? वह तो बहुत दूर है? करणरायने कहा—खास काबुलमें नहीं, काबुलके मार्गमें मुगलसेनापति तुर्कीखांके पास चलना है! अब अपना काम बनानेके लिये हमें तुर्कीखां का ही भरोसा है।

तीसरा खण्ड

प्रथम-परिच्छेद

देखने २ चित्तौरमें अहेरियाका दिन आगया है; अहेरिया चित्तौरियोंका प्रधान उत्सव है, आज चित्तौरी आनन्दमें उन्मत्त हो उठे हैं अहेरियाका प्रधान अङ्ग शिकार है। आजके शिकारके फलाफल पर ही चित्तौरी नये वर्षके शुभ अशुभका निश्चय करते हैं। इस दिन शिकार निर्विघ्न होजाय तो वह समझते हैं, कि—यह वर्ष शुभ होगा और यदि इस दिन शिकारमें कुछ विघ्न होजाय तो उनके मनमें नये वर्षके लिये न जाने कितने खोटे विचार उठने लगते हैं। अबकी वार यवनबादशाहके साथ युद्ध होनेकी संभावना है, इसलिये अबकी वार चित्तौरी अहेरियाको सफल करनेके लिये जीजानसे उद्योग करने को उद्यत हुए हैं।

प्रातःकालका समय है, सूर्यनारायणने पूर्व दिशामें उदय होकर अपनी लाल२ किरणें आरावली की चोटी पर छिटकाना आरम्भ ही की हैं, आज शिकार खेलनेके लिये राजपूत सवारोंके दलके दल चित्तौर के किले से बाहर आकर मार्गमें कतारें बाँधे खड़े हैं। उनमेंसे किन्हीके हाथोंमें वल्लम हैं,किन्हीके हाथोंमें बरछे हैं और किन्हीके हाथोंमें नङ्गी तलवारें हैं, प्रातःकालकी कोमल किरणें पड़कर मानो उन राजपूतों के अस्त्र हँस रहे हैं। किलेमेंसे बाहर आते ही महाराणाने कहा भाइयों! अबकी वार हम सबोंको बड़ी कठिन परीक्षामें संमिलित होना होगा। दिल्लीके साथ विरोध बँध गया है। अबकी वार चाहे प्राण चलेजायँ परन्तु अहेरियाको निष्फल न होने देना। अहेरिया मेवाड़के ललाटकी अदृष्टलिपि है। आज इस लिपि को जहां तक बसावे उज्ज्वल रक्तसे रँग दो,देखो! एक भी शिकार हाथसे चूक कर न जाने पावै।

यह सुनकर सब सेनाने आनन्दमें भरकर जयध्वनिकी 'जय महाराणाजी की जय, ऐसे जयघोषसे आकाशको गुञ्जार दिया। इसके बाद सब लोग भगवतीका ध्यान धरकर कतारें बांधेहुए आगेको बढ़ने लगे। उनके घोड़ोंकी टापें पड़न पर अरावली की कठोर, पथरीली भूमिमेंसे भी धूलि उड़नेलगी।

उस घुड़सवार दलमें सबसे आगे राणा भीमसिंह, उनके पीछे सब राजकुमार, राजकुमारों के पीछे मेवाड़के सरदार और सबके पीछे महा-

राणा लक्ष्मणसिंह अपने घोड़े को बढ़ाये चले जारहे थे । इतनेमें ही सामनेसे शिर झुकाये हुए एक बालक आकर खड़ा होगया। बालकका दमकता हुआ विशाल ललाट, ऊंचा गठीला शरीर और मुखमण्डल खिले हुए कमलकी समान था, उसको देखकर महाराणाका तेजसे दमकताहुआ मुखमण्डल प्रसन्न होउठा, महाराणाने मुसकुराते हुए कहा, कि-बादल ! क्या बात है ! क्या कहना चाहता है ? ।

बादल महारानी पद्मिनीके भाईका लड़का था, बादलने हाथ जोड़े हुए निवेदन किया, महाराणाजी ! अबकी बार तो मेरी अवस्था पूरी बारह वर्षकी होगयी है, इस बार तो मुझे अहेरियामें चलनेके लिये आज्ञा मिलनी चाहिये ? । महाराणाने फिर हँसकर उत्तर दिया कि अभिमन्यु ! इतनी जल्दी क्यों करता है ? कुरुक्षेत्रका समर आरहा है, कुछ दिन और ठहर, तेरी अभिलाषा पूरी होगी । अहेरिया सिंहल-देशियोंका उत्सव नहीं है, यह तो राजपूतोंका खेल है । आज तेरी अहेरियामें जानेकी आवश्यकता नहीं है । आज तो मैं तुझे चित्तौरका भार सौंपे जाता हूँ, हमारी अनुपस्थितिमें तू चित्तौरकी रक्षा करना । बालकका तेजस्वी मुख और भी दमक उठा । महाराणा कुछ देर तक टकटकी लगाये हुए उस सुन्दर मुखकी ओरको देखते रहे । वह ज्यों ज्यों देखते थे मुग्ध होते चलेजाते थे ।

बालकने हंसकर कहा—जो आज्ञा ! इसके बाद घोड़ेका मुख फिर किलेकी तरफको फेरकर कुमार बादल घोड़े पर सवार होगया । उस समय प्रातःकालके बालसूर्यकी नयी किरणें अरावलीके शिखरको भेदकर चारों ओरको फैलपड़ीं ।

वसन्त ऋतुका आरम्भ होनेसे मेवाड़के प्रातःकालकी सुन्दरता कैसी निर्मल है ! चारों ओर बड़ी ही अपूर्व परमशोभा मानो भूमिको फोड़कर बाहर निकल आयी है । वृक्षोंकी टहनियों पर, झरनों की धाराओं पर और पुष्पोंकी सुन्दरतामें मानो सुनहरी सूर्यके प्रकाशका जड़ाव होरहा है । गले हुए बरफके जलके साथ मिलकर और भी विचित्र होउठा है । पक्षियोंका गान और उत्सव का तान एकसाथ मिलकर एक अपूर्व सङ्गीतकी छटा दिखारही है ।

राजपूत प्रकृतिकी इस अपूर्व स्वच्छ शोभाका अनुभव करते हुए चलनेलगे । उत्साह और आनन्दके मारे उनका हृदय उल्लासमें भरने लगा । उन्होंने मौजमें आकर राग अलापना आरम्भ करदिये, गाने का स्वर, प्रातःकालके सूर्यकी किरणें, प्रकृतिकी विचित्रता और सेनाका उत्साह-आनन्द मानो एक स्वरमें मिलगया । घोड़ों पर चढ़े

हुए राजपूत ताल २ पर रकावमें पैरकी ठुमकी देनेलगे। मेवाड़के बारह राजकुमारोंमें बड़े कुमार अरुणसिंहका हृदय कविताका बड़ा ही प्रेमी था। एक श्यामवर्ण घोड़े पर चढ़े हुए वह सब कुमारोंके आगे ताल२ पर झूमते हुए चले जारहे थे। उन्होंने भी गुन गुन करके कुछ गाना आरम्भ किया। उनकी कमर की तलवार नाचती २ नूपुर ध्वनि करनेलगी, उनके दोनों नेत्र चारों ओरकी सुन्दरतामें रँगगये, चित्तोरसे कईएक कोस दूरी पर प्रसिद्ध गिरिनार पर्वतकी उपत्यका है। समस्त रितीले मारवाड़ देशमें यह स्थान आजभी राजस्थान का काश्मीर कहलाता है। उस ही सुन्दरदेशमें भीलोंकी निवासभूमि के पास एक बड़ाभारी वन है। हिरनोंकी धौंगेंकी धौंगें और सूअरों की टोलियेंकी टोलियें इस वनमें रहती हैं। भील रात दिन इन प्राणियों की रक्षा करते हैं। केवल सालभरमें एक दिन अहेरियाके लिये चित्तौर के राजपूत आकर इस वनको उलट पुलट करजाते हैं। उस दिन जब तक उस वनमें कहीं एक भी सुअर बाकी रहता है तब तक राजपूत शिकारको बन्द नहीं करते हैं, आज वही अहेरियाका दिन है। राजपूत उस ही पहाड़ी वनके मैदानकी तरफको चले जारहे हैं। दूरसे ही अरुणसिंहने देखा, कि—यह देश कैसा सुन्दर है?।

उस समय न उदयसागरका ही पता था और न उसके किनारे कमलमीरके महल ही बने थे। स्वाभाविक नङ्गी शोभा उस समय बनावटकी आडमें छिपनेका स्थान न पाकर पूर्ण२ सुन्दरतामें भरीहुई थी। उस शोभाकी गोदीमें एक सजीव मौनता, पक्षियोंकी कुहुक, झरनोंके कलकल शब्द और राजपूतसेनाके उस कोलाहलको भी तुच्छ करके कैसा इकछत राज्य कररही है। मार्गमें आगेको बढ़ते २ अरुणसिंहने देखा, कि—यह पहाड़ आकाशमें चढ़ीहुई घनघटाकी समान कैसा सुन्दर है। उसके नीचे निर्मल जलसे भराहुआ यह सरोवर कैसा सुन्दर है। दूर वनके निकास पर यह छोटीसी एक कुटिया कैसी सुन्दर है? परन्तु मार्गसे लगेहुए चनेके खेतकी हरी २ शोभाके ऊपर एक बांसके मचान पर वह कौन खड़ा है? क्या किसी ने पुतली बनाकर खड़ी करदी है? नहीं, नहीं, वह तो झुकरही है, और फिर खड़ी होगयी!, ठीक! एक स्त्री खड़ी है! आहा! कैसी रूपवती है?।

अरुणसिंह टकटकी लगाये हुए उधरको ही देखनेलगे। धीरे २ वह मचान समीप आगया, एक बालिका मचानके ऊपर खड़ी

होकर चनेके खेतकी रखवाली कररही हैं । अरुणसिंह उसको देखकर दु:खी हुए, ओ: ! इस सुन्दर वनदेवताकी समान अपूर्व मूर्त्तिके शरीर पर यह जङ्गलियोंके वस्त्र तो बड़े बुरे मालूम होते हैं ! ऐसे सजेहुए बलिष्ठ शरीरवाली कमनीय रमणी मूर्त्ति क्या उन्होंने कभी देखी थी ? । राजपूतोंकी सेना मचानसे बहुत दूर निकलगयी, परन्तु अरुणसिंह तब भी गरदन मोड़ २ कर उधरको ही देखते रहे, अचानक सेनाके कोलाहलसे उनका ध्यान उचटगया । अरुणसिंहने मुख फेरकर देखा तो मालूम हुआ कि—शिकार खेलनेके स्थान पर आपहुँचे हैं, वह बड़ाभारी वन यही है, शीघ्र ही अहेरियाका भयानक उत्सव आरम्भ होगा, सब राजपूत चौकन्ने होगये ।

महाराणा लक्ष्मणसिंहने कहा-तुम सब सावधान होकर वनके इस भागको घेरे रहो । मैं और काकाजी सूअरोंको घेरकर लावेंगे । सावधान ! एक भी शिकार हाथमेंसे निकल न जाय ! मेवाड़का भविष्य भाग्य आज तुम्हारे ही हाथमें है ।

इतना कहकर महाराणाजी राणा भीमसिंहके साथ उस ओर वनमें घुसगये, इधर सब राजपूत वनको चारों ओरसे घेरनेलगे । अरुणसिंहने कहा—तुम लोग दूसरी तरफ जाओ, यह स्थान मेरा अच्छे प्रकार देखा भाला है, मैं इस मार्गकी ही रक्षा करूंगा, यह सुनकर दूसरे लोग दूर चलेगये, अरुणसिंह तहां ही खड़े रहे । अरुणसिंह जहां खड़ेहुए थे वह वनकी प्रान्तभूमि थी, उधरको सूअरोंका आना जाना बहुत कम था । उनके सङ्गियोंने शीघ्र ही चारों ओर शिकारका आरम्भ करदिया, परन्तु अरुणसिंहके समीपमें एक भी वराह नहीं दीखा, वल्लम लिये खड़े २ अरुणसिंह उस मच्चान की ओरको ही देखते रहे । वह बालिका भी मच्चानके ऊपर तैसे ही पुतलीकी समान खड़ी थी । बाहर तो शिकारका पता नहीं था, परन्तु अरुणसिंहने भीतर ही भीतर एक अपूर्व अहेरियाके उत्सवको जगा-डाला । बाहर वराह न पाकर उन्होंने अन्त:करणके भीतर अपने मन को, चिन्ताके ऊपर चिन्ताकी चोट देकर घायल करडाला । वह न जाने कितनी बातें विचारने लगे । यह बालिका न जाने कौन है, इस निर्जन वनमें इसका घर कहां है ? एक पहरके बाद दूसरा पहर भी बीतगया, तब भी यह अपने घरको लौटकर क्यों नहीं जाती है ? क्या यह मेरी ही ओरको देखरही है ? । अरुणसिंह ऐसे २ न जाने कितने स्वप्न देखने लगे । कुछ देर बाद सूर्यभगवान् पश्चिम दिशामें को झुकने लगे । उस समय अचानक वनके उस कोनेमें एक शूकर आता

हुआ होगा, अस्यासिंह उधरको गरदन भी नहीं फेरने पाये, उनको मालूम भी नहीं हुआ, कि—वह बिजलीकी समान अपने प्राणोंके भयसे इनको लांघकर निकला चलागया, अस्यासिंहने बड़ी फुरतीसे बल्लम को सम्हाला, परन्तु फिर शूकर कहां वह बहुत दूर निकलगया, अस्यासिंह की क्या शक्ति है जो अब उसपर हमला करसकें, बल्लम को भूमिमें पटककर अस्यासिंह शिर पर हाथ धरकर बैठगये। परन्तु उसी समय समीप ही किसी घायल हुए जानवर का कातर, शब्द सुनायी दिया, अस्यासिंहने उसी समय आंख उठाकर देखा तो उस ही मन्दानके पास बालिकाके भालकी चोट खाकर वह शूकर पड़ाहुआ तड़फड़ा रहा है !, अस्यासिंह यह देखकर आनन्दमें भरगये । वह घोड़ा दौड़ाकर उधरको जानेको ही थे, कि—इतनेमें ही और एक शूकर तैसे ही दूसरी ओरको निकला चलागया। अब की बार अस्यासिंह बहुत ही घबड़ागये इस समय शूकर जिधरको भागा है वह स्थान मन्चानसे बहुत दूर है। अस्यासिंह विचारनेलगे, कि—अब ठीक नहीं है परन्तु कैसे आश्चर्य की बात है, कि—वह नेत्र फाड़कर देखनेलगे, उन्होंने देखा, कि—इस बार भी शूकर और एक बरछेकी चोट खाकर गिरपड़ा है। अस्यासिंहने फिर अचम्भेमें होकर उस बालिकाकी ओरको देखा, तो वह बालिका खिलखिलाकर हँसपड़ी। यह देख अस्यासिंहको हित अहितका ज्ञान नहीं रहा, वह उस समय केवल उस बालिकाकी बातों पर ही विचार करनेलगे, और मन ही मनमें कहनेलगे, कि—निःसन्देह यह कोई वनदेवी है, मनुष्यमें क्या इतनी शक्ति होसकती है ? ऐसा रूप क्या वनमें विकसित होसकता है ?, प्रारब्धमें जो कुछ होना हो सो हो, अब इसको पास ही जाकर देखूंगा। वनदेवी जिसकी सहायता पर हो उसको पार्थिव विपत्तिका क्या भय ?। अब शूकरको लानेके बहानेसे एक बार इसके पास जाताहूं।

ऐसा विचार कर अस्यासिंहने घोड़ेका मुख फेरा और उधरको ही चलदियं, परन्तु उसके पास तक पहुँचने भी नहीं पाये थे, कि—पीछे से और एक शूकरके भागते आनेका शब्द सुनायी दिया. इस बार केवल वह शब्द ही नहीं किन्तु साथमें ही दौड़तेहुए घोड़ेकी टापोंका शब्द और महाराणाके कराठका शब्द भी सुनायी दिया। अस्यासिंह चौंकपड़े और लौटकर खड़े होगये । महाराणाको वराहके पीछे २ आते हुए देखकर, अस्यासिंहने विचारा कि—मुझसे बड़ी असावधानी होगयी। ओः ! यह कैसा सर्वनाश होगया ! अबकी बार तो वास्तवमें

वराह भागकर चलागया । बालिकाने अबकी वार उस मध्य न खड़े होकर एक अंगुली भी नहीं हिलायी, एक साथ चुप साधे क की पुतलीसी बनी खड़ी है । वह भी अपनी जगह को छोड़कर ... दूर चले आये हैं ।

अरुणसिंहने देखा, कि—महाराणा पावलेसे बनेहुए उस शूकरके पीछे २ भागे चलेगये । शूकर उस समय वनको छोड़कर बहुत दूर निकलगया है, परन्तु तो भी महाराणा अभी नहीं रुके हैं, प्राणोंकी बाजी लगाकर उसके पीछे ही भागे चलेजारहे हैं। उस समय अरुण-सिंहभी घोड़े को सरपट छोड़कर उधरको ही चलदिये। एक होनहार अमङ्गलकी आशङ्कासे उनका हृदय धक २ करके काँप उठा । कुछ एक दूर पहुँचकर अरुणसिंहने देखा, कि—शूकर अदृश्य (लापता) होगया है, महाराणा घोड़ेपरसे उतर पड़े हैं, शिरपरकी पगड़ी उतार कर अलग डालदी है और भूमिमें बैठे हैं, घोड़ा पास ही खड़ा २ हाँप रहा है. अरुणसिंह अपने मनमें कहनेलगे, कि आज मुझसे बड़ा प्रमाद हुआ है । इतनेमें ही वनके चारों ओरसे दौड़कर आयेहुए सब लोगों ने अरुणसिंहसे पूछा, कि—महाराणा कहाँ हैं ? ।

अरुणसिंहके मुखमेंसे कुछ भी बात नहीं निकल सकी । क्षोभ दुःख और आशङ्कासे उनका मुख उतरगया । उन्होंने अंगुलि उठाकर महाराणाको बतादिया । इसके बाद जब सब लोग उधरको चलेगये तो अपने आप भी नीचेको मुख किये धीरे २ उधरको ही चलदिये । मंत्रियों को देखते ही महाराणा गरजकर कहनेलगे, कि—दुष्टने सर्वनाश करडाला। आज मैं वराहके बदलेमें उसका ही संहार करूँगा

राणा भीमसिंह तत्काल उस बातको समझगये और महाराणा को समझाते हुए कहनेलगे, कि—अरुण अभी बालक है, उसके ऊपर क्रोध करने से क्या होगा ?, जो कुछ होना था होगया, अब इसका प्रतीकार (इलाज) जो कुछ उचित हो वही करना चाहिये इस वराहके बदलेमें आज हम अपनी छातीका रुधिर देकर चित्तौरेश्वरी की पूजा करेंगे । देवी अवश्य ही प्रसन्न होगी, निःसन्देह चित्तौरका मङ्गल करेगी । परन्तु इस समय महाराणाको समझाने की चेष्टा करना वृथा था, महाराणा कुमार अरुणसिंहको दूरसे देखते ही एक साथ खड़े होगये घोड़े पर चढ़कर अरुणसिंहके ऊपर झपटनेको ही थे कि—यह देख भीमसिंहने महाराणाको पकड़ लिया ।

इसी समय दूरसे बहुत जोरसे दौड़े आते हुए एक घोड़ेकी -

का शब्द सुनायी दिया। चित्तौर की ओरसे हांपते हुए घोड़ेको सरपट छोड़कर इधरको कोई आरहा है, यह सबको अनुमान हुआ, सब ही अचम्भेमें हो उधरको टकटकी लगाकर देखने लगे। कुछ देरमें उन्होंने देखा कि—एक लड़का घोड़े पर चढ़ा हुआ उनकी तरफको आरहा है। घुड़सवारके पास आजाने पर सबने अचम्भे में होकर देखा, कि—वह कुमार वादल है और उसके घोड़ेकी पीठपर उस महाराणा के पीछा किये हुए शूकरका मृत शरीर बँधाहुआ है। महाराणाने चकित होकर कहा, कि—वादल! तू कहांसे आया ?। वादल ने हाथ जोड़ कर कहा, कि—महाराणाजी! मैं बहुत जरूरी समाचार लेकर आया हूँ। अलाउद्दीन मेवाड़में घुस आया है। गुप्तचर (दूत) उसको शङ्करदेवके मन्दिर पर आक्रमण करते देख आया है, बहुत शीघ्र किलेके फाटक बन्द करा देने चाहियें। इस वातको सुनते ही क्षणभरमें सब राजपूत योधाओंके शरीरोंमें मानो उत्तेजना और आश्चर्यकी विजली प्रवेश करगयी, सबके म्यानोंमें की तलवारों का झनाझन शब्द होउठा। महाराणाने भीमसिंहसे कहा, कि-काकाजी! अहेरियाका फल हाथके हाथ मिलगया, देखता हूँ, कि—प्रायश्चित्त करनेका अवसर भी नहीं है, अब इस समय क्या करना चाहिये ?।

इसके वाद एकायकी वादलकी ओरको देखकर कहा, कि-वादल! यह क्या ? तेरे घोड़ेपर मरा हुआ शूकर कैसा बँधा है ?, प्रतीत होता है, यह मेरे ही घेरे हुए शूकरका शरीर है ?। मैंने इसकी पीठमें एक जगह वरछा छेद दिया था, उसका घाव अभीतक तैसा ही बना हुआ है। प्रतीत होता है, कि—चित्तौरकी भाग्यलक्ष्मी अभीतक हमको एक साथ छोड़कर नहीं गयी है!, चल जल्दी चल, परन्तु पहिले यह बता, कि—तूने इसको कैसे पाया ?।

वादलने कहा, कि—महाराणाजी! मार्गमें आते २ देखा, कि—एक शूकर प्राण बचानेके लिये भागा चला जारहा है। मैंने उसी समय समझलिया, कि-यह अहेरियाका भागा हुआ है और तत्काल वरछा मारकर गिरा दिया, फिर महाराणाको भेंटमें देनेके लिये घोड़ेकी पीठ पर डालकर यहां ले आया हूँ।

महाराणाने घोड़े परसे उतरकर वादलको भी हाथ पकड़कर उतार लिया और उसको प्रेममें भरकर छातीसे लगाया, फिर कहने लगे, कि—" सिंहली वीर! आज तूने केवल अहेरियाको ही सफल नहीं किया है, किन्तु मुझे पूरा विश्वास है, कि—अब की बार चित्तौरकी रक्षा भी तेरे ही हाथसे होगी, आज मैंने इस युद्धके लिये

तुझको ही चित्तौरका सेनापति किया !" इसके बाद पीठ फेर कर अरुणसिंहकी ओरको देखते हुए कहा, कि—अरुणसिंह ! मैंने आज से तुझको देशनिकाला दिया ! जो राजपूत महाराणाका पुत्र होकर कर्तव्यको भूलकर एक जङ्गली लड़कीके रूप पर मोहित होजाय, चित्तौरमें उसके लिये तिलभर भी भूमि नहीं है । यदि आजसे तू चित्तौरमें घुसेगा तो तुझको प्राणदण्ड दिया जायगा ।

अचानक वज्रपातसा होगया । भीमसिंह मन ही मनमें कहनेलगे, कि—बड़ा बुरा हुआ, महाराणाने यह भूल की है फिर आगेको बढ़कर महाराणासे कहा, कि—महाराणाजी ! इस विपत्तिके समयमें चित्तौर का बल न घटाइये ! अरुणसिंह बालक होनेसे क्षमाके योग्य है !, इस पर लक्ष्मणसिंहने आवेशमें आकर कहा, कि—काकाजी ! राजपुत्र समझकर आप अरुणसिंहके ऊपर दया दिखाते हैं, परन्तु राजकार्य में ऐसे दयाभावको जगह नहीं है। मैं राजा हूँ, राजाका काम करूँगा !।

भीमसिंह चुप होगये । दूसरे राजकुमार और सरदार लोग भी सोच रहे थे, कि—आगे बढ़कर अरुणसिंहके लिये महाराणासे प्रार्थना करें, परन्तु भीमसिंहकी दशाको देख फिर उनको साहस नहीं हुआ। हतभाग्य अरुणसिंह वृक्षसा खड़ाहुआ भूमिकी ओरको देखता रहा ।

महाराणा और सरदारोंके आगेको बढ़ जानेपर बादल कुछ पीछेको रहकर धीरे २ अरुणसिंहसे बोला, कि—कुमार ! आपने क्या किया है ? शोक है, कि—इस विपत्तिके समयमें तुम हमसे अलग होगये !। अरुणसिंहने आँसूभरे नेत्रोंसे बादलकी तरफको देखतेहुए कहा—बादल ! तुमने आज चित्तौरकी रक्षा की है, मेरे बारेमें तुम जरा दुःख न मानना । मैं अभागा हूँ ! मेरे लिये दुःख काहेका ? मेरा जैसा अपराध था उसके अनुकूल ही दण्ड मिला है । पिताजीने उचित न्याय किया है । अब मेरा यह मुख चित्तौरमें दिखाने के योग्य नहीं है । जाओ वीर ! प्राण देकर चित्तौरकी रक्षा करो देर करनेसे विपत्ति आजाना संभव है ।

बादलका छोटासा हृदय वेदनाके कारण भर आया, परन्तु वह कर ही क्या सकता था ? । मनमें दुःखित होता हुआ बादल घोड़ेको तेजीसे बढ़ाये हुए चलागया ।

उस सन्ध्या समयके अन्धकारमें उस अपमान, दण्ड, आशङ्का, व्याकुलता और पश्चात्तापकी अग्निसे भस्मसा होताहुआ अरुणसिंह चुपचाप तहाँ ही खड़ा रहा । मुहूर्त्तभरके लिये सारा संसार उसके लिये शून्याकार होगया । कितनी ही देरसे अरुणसिंह ऐसे खड़ा है,

इनकी कुछ खबर नहीं है। जब चैतन्य हुआ तब उसने देखा, कि—उसके सामने खुले मैदानमें उसकी ही ओरको मुख किये हुए वह बालिका खड़ी है। इतनी देरतक इस गोलमालमें अरुणसिंहको इस आश्चर्य बालिकाकी बात एक बार भी ध्यानमें नहीं आयी, इस समय उसको देखकर और भी आश्चर्यमें होगये।

बालिका टकटकी लगायेहुए उनकी ओरको ही देखरही थी, उनको मुख ऊपरको उठाते देखकर उसने हँसकर पूछा, कि—अब क्या करोगे? जो कुछ होना था वह तो होगया! अरुणसिंह आश्चर्यमें होगये, तब तो इस बालिकाने सब ही बात सुनी है, बालिका उनकी खोज करनेके लिये, उनका समाचार जाननेके लिये कष्ट उठाकर इतनी दूर आयी है, इस बातका विचार करके अरुणसिंहको कुछ आनन्द भी हुआ और वह कहनेलगे, कि—मैं देखता हूँ कि—अपना कुछ भी परिचय न देकर तुमने मेरा परिचय सहजमें ही पालिया हैं, तुम बड़ी उस्ताद चोर हो! क्या इस वनमें विश्राम करनेके लिये कोई स्थान नहीं है?! बालिका हँसकर कहने लगी, कि—है, परन्तु वह शेर भालुओंके पेटमें है, मेरी समझमें तहाँ विश्राम करनेके लिये कदाचित् आप राजी न हों? क्या आप हमारी झोंपड़ी पर चलेंगे?। अरुणसिंहने चुप होकर बालिका के मुखकी ओरको देखा। यह केवल प्रगल्भता ही नहीं थी! इस निःसङ्कोच वाक्चातुरीके नीचे एक अति सरल हृदयकी मधुर पवित्रता भी अपना झोका लगारही थी!। अरुणसिंहने पूछा-तुम्हारा घर कितनी दूर है,?। बालिकाने कहा कि—यह जो एक छोटासा पहाड़ दीख रहा है, इसके आगे एक और पहाड़ है, उसके आगे ही हमारा घर है। मेरे पिता किसान हैं, परन्तु हम जातिके राजपूत हैं! मेरी माता आपको देखकर अवश्य ही बड़ी प्रसन्न होंगी, परन्तु एक कठिनाई देखती हूँ, कि—आप राजाके पुत्र हैं?। अरुणसिंहने कहा—इसमें क्या है? क्या राजाके पुत्रको तुम अपने यहाँ आश्रय नहीं देसकतीं?। बालिकाने कहा—वह तो आपका घर है,परन्तु हम गरीबोंके यहाँ आपका ठीकर आदर सत्कार कहाँ होसकता है?।

अरुणसिंहने हँसकर कहा—इसके लिये कुछ चिन्ता नहीं है, जो शेर भालुओंके पेटमें जानेको बैठा है, उसको आदर सत्कार की क्या आवश्यकता है?, परन्तु मैं दूसरीही बातके विचारमें हूँ। जनसमूहमें जाकर अब मैं इस मुखको नहीं दिखासकूँगा। जब तक इस पापका

प्रायश्चित्त नहीं होगा, तबतक मुझे बनही बनमें घूमते फिरना होगा। बालिकाके मुखपर एक सहानुभूतिका म्लान प्रकाश दमक उठा, वह कहनेलगी, कि—आप क्या उन्मत्त होरहे हैं? वन २ घूमते फिरकर क्या तुम इसका प्रायश्चित्त करसकते हो? इस कामका सुभीता तो जनसमूहमें रहनेसे ही होगा!। अरुणसिंहने अचम्भेमें होकर बालिका के मुखकी ओरको देखा और कहनेलगे, कि-जनसमूहमें इसका क्या सुभीता होगा?, कौन मुझसे जीकी बात पूछेगा? कौन मेरे उत्साह को बढ़ावेगा? मैं वृथा किसीके पास जाकर अपने शिरपर अपमानका बोझा क्यों रक्खूँ?।

बालिकाने कहा—सुनो, तुम राजाके पुत्र हो, वीरपुरुष हो! प्रारब्ध की मारसे एक भूल होगयी है, इसके लिये उत्साह तोड़ बैठना ठीक नहीं है। तुम्हारे हाथसे और एक सुकर्म बनते ही यह कलङ्क धुल जायगा,खोया हुआ गौरव फिर मिल जायगा।अभी पठानके साथ संग्राम होनेको है! इस सुयोगमें कुछ करके क्यों नहीं दिखाते?। अरुणसिंह ने विस्मयमें होकर फिर उस बालिकाकी ओरको टकटकी लगाकर देखा और अपने मनमें कहनेलगे, कि-यह तो बालिकाओंकीसी बातें नहीं कह रही है? निःसन्देह यह तो एक अपूर्व सुयोग है! क्या अरुणसिंह इस सुयोगमें अपने कलङ्कको नहीं धोसकेगा? अवश्य ही धोसकेगा, परन्तु हाय! आज अरुणसिंह अकेला है!।

अरुणसिंहके चमकतेहुए चेहरे पर इस समय एक काली छाया पड़ने पर अन्धकार होगया। बालिका उनकेमनकी बातको ताड़ गयी और कहने लगी, कि—क्या तुम अपनेको असहाय समझते हो?, जिसको अपना भरोसा नहीं होता, उस मनुष्यका कोई काम सिद्ध नहीं होता है। तुम मेरे साथ चलो, इस वनमें रहनेवाली भीलजाति मात्र हमारी बन्धु है, उनकी सहायता मैं आपको उपहारमें दूंगी, उनकी सहायतासे आप निःसन्देह देशका काम कर सकेंगे। अब तो अरुणसिंहके हृदयमे मानो किसीने एक आशाका दीपक प्रज्वलित करदिया। न जाने कौनसा अनजाना लालच इससे पहिले ही उनको बालिकाकी ओरको खेंचे लिये जाता था। इतनी देर तक वह उस लालचके विरुद्ध हो बड़े कष्टसे अपने आपेको रोकते रहे परन्तु अब उनका वश नहीं रहा, अरुणसिंह जी भरकर कहनेलगे, कि—किसानकी पुत्री! तुम्हारा नाम क्या है?। बालिकाने हंसकर कहा, कि—मेरा नाम मैना है। माता पिता लाड़के कारण मुझे

मुन्ना कहकर पुकारा करते हैं आप भी मुझे इस नामसे ही पुकारा कीजिये । अरुणसिंहने कहा, कि—तुम केवल शूकरका शिकार करने में ही सिद्धहस्त नहीं हो, किन्तु मैं देखता हूं, कि—तुम्हें मनुष्यका शिकार करना भी आता है । कोई दूसरा अरुणसिंहको लाचार कर सकता या नहीं इसमें सन्देह है ! परन्तु तुम्हारी बातको मैं नहीं टाल सकता, चलो तुम्हारे घर ही चलकर आश्रय लूंगा । यह सुनकर मुन्ना मार्ग बताती हुई आगे २ चली और उस गहन वनके भीतरको निकलकर अपने घर पर जा पहुँची, उस समय अरुणसिंहने देश-निकालेके दुःखको अपने हृदयमेंसे देशनिकाला देदिया ।

द्वितीय-परिच्छेद

जब महाराणा लौटकर किलेमें आगये तो उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा का पालन किया । बादलको पुकारकर कहा, कि-आजसे तू चित्तौर का सेनापति है, बड़ी सावधानीके साथ मुसलमानोंके हाथसे चित्तौर की रक्षा करना । देख कहीं सिंहकी प्रतिष्ठाको घटा न देना !, यदि आवश्यकता पड़े तो काका भीमसिंहजीसे सहायता मांगलेना । इस के बाद महाराणाजीने सेनाके सरदारोंको बुलाकर समझादिया, कि—आज बादलको सेनापति बनाया गया है, आप सब लोग सेनापति मानकर इसकी प्रतिष्ठा करें । इसके बाद बादल महाराणासे विदा होकर पद्मिनीके चचा गोराके घर पहुँचा, उस समय गोरा एक पलंगीरी पर बैठेहुए अपनी आधी सफेद मूछोंको उत्तमरूपसे चढ़ारहे थे और बीचरमें आधे नेत्र मूंदकर न जाने क्या विचार करने लगते थे, बादलको देखते ही एकसाथ उठकर खड़े होगये और कहने लगे कि—आज बड़ा अहोभाग्य है, जो सेनापति स्वयं इस गरीबके घर पधारे हैं ! समाचार तो शुभ है ?

बादलने कहा—दादाजी ! सेनापति कौन है ? सेनापति मैं नहीं हूँ, आप ही हैं, मैंने आपके ही भरोसे पर यह भार अपने शिरपर लिया है, अब इसकी सम्हाल आप ही करेंगे । गोराने अपनी दोनों विशाल बाहुओंसे बादलकी गरदन नीचेको खूब झुकाते हुए कहा, कि-बेटा ! तूने यह अच्छा नहीं किया, मैं तो अब बूढ़ा खूड़ा होगया, अब क्या मेरा वह समय है ? अब तो मैं केवल आराम करके खटिया पर पड़े २ दाल रोटी ही खानेका हूँ, अब तो पोते पोतियोंकी युद्धक्रीड़ा देखूंगा इन सब कामोंको अब तुम करो, मैं तो केवल तमाशा देखूंगा । गोरा की भुजाओंके दबावसे बादलके कन्धे भूमिकी ओरको धसे चले

जाते थे, वादलने कहा—दादाजी ! दादाजी ! यह क्या करते हो ? मैं देखता हूं, कि—तुम यहां ही सेनापतिको मसल डालोगे, मेरी गरदन तो टूटी हुईसी होगयी !, गोराने कहा—इतना बड़ा भार अपने कन्धे पर लिया है तो फिर गरदनकी इतनी ममता क्यों ?, जो कुछ भी हो, मैं देखता हूँ, कि—तुममें सेनापति बननेकी योग्यता है । मेरे इन दोनों हाथोंके दबावको स्वयं राणा भीमसिंह भी नहीं सहसकते, तूने बहुत सहलिया, मैं समझता हूँ, कि-तू चित्तौरकी रक्षा कर सकेगा।

वादलने कहा, कि—दादाजी ! आपकी इन वातोंमें मैं भूलनेवाला नहीं हूँ । यह बतलाइये, कि—अब करना क्या चाहिये ? अपनी बुद्धि की पिटारीको खोलिये । मुझे बातोंमें ही टालना चाहते हो, यदि आप ऐसा करेंगे तो मैं दादीजी से जाकर कहूंगा ।

इतनेमें ही एक उज्वलवर्णा रूपवती राजपूतानी तहां आगयी और कहनेलगी, कि—बेटा बादल ! क्या हुआ ? वादलने कहा—दादीजी ! देखो तो दादाजी कैसा अन्याय कररहे हैं, सिंहली होकर सिंहलीकी प्रतिष्ठा रखना नहीं चाहते, आज मैं सेनापति बनकर इनके पास कुछ सम्मति करने आया हूँ, तो क्या यह इसमें कुछ बतावेंगे ही नहीं ? इसका निवटारा तुम्हे करना पड़ेगा, राजपूतानीने हँसकर कहा—अच्छा बेटा ! इसका निवटारा मैं ही करे देती हूँ । बेटा ! तू तो सेना-पति बनादिया गया है, तो तू सेनापतिकी समान ही हुकुम क्यों नहीं करता ? इतनी खुशामद करनेकी क्या आवश्यकता है ? । वादलने हँसकर कहा, कि-दादाजी ! आप अब क्या कहते हैं ? । गोराने कहा कि-यह तो सब तय हो ही गया, मैं क्या तुम्हारी वातको टाल सकता हूँ ? आज्ञा दो, कि-अब मुझे क्या करना होगा । वादलने कहा-और तो कुछ नहीं है, अलाउद्दीन चित्तौर पर चढ़ाई करनेके लिये बहुतसी सेनाको लियेहुए आरहा है, उसको गरदनी देकर यहांसे धक्का देना होगा और देशको इस विपत्तिसे बचाना होगा । गोराने हँसते २ कहा, कि-बस ! तूने इस व्यापारको आधा तो वातोंमें ही ठीक कर लिया, आधा अवसर आने पर ठीक होजायगा, परन्तु इसका प्रबन्ध शीघ्र ही होना चाहिये । अलाउद्दीन इस समय कहां तक बढ़ आया है ! । वादलने कहा-अभी कुछ दूर है, सुना है, कि-उसकी फौज थक जानेके कारण आराम करनेके लिये मार्गमें ठहरगयी है, चित्तौर तक पहुंचनेमें अभी दो दिन लगेंगे । गोराने कहा-सेनापति ! यह विश्राम नहीं है । यह तो बादशाह सुयोग देखरहा है । अलाउद्दीनने इस समय बगलेकेसा ढङ्ग किया है, चुपचाप एक जगह ठहरगया है, अचानक

एक दिन झपट्टा मारकर मछलीको पकड़ लेजायगा। किलेके फाटक शीघ्र ही बन्द करादो। अलाउद्दीनके सामने पड़कर युद्ध करनेमें सफलता नहीं होगी।

बादलने कहा-यह प्रबन्ध राणा भीमसिंहजीने पहिले ही करलिया है, उनकी आज्ञासे सेनाके लोग बड़ी २ शिलायें, ईंट, पत्थर आदिके ढेर किलेकी दावारोंके पास कररहे हैं। गोराने कहा-राणा भीमसिंह बड़े चतुर पुरुष मालूम होते हैं, वह पहिले ही सब समझगये, परन्तु तुम्हारे विषयमें ठीक २ विचार नहीं कियागया, तुमको साक्षीगोपाल की समान सेनापति बनाकर मन चाहा काम करना उनको शोभा नहीं देता, मालूम होता है उन्होंने बालक समझकर तुम्हारे ऊपर पूरा भरोसा नहीं रक्खा है। उनका अविश्वास दूर करना होगा।

बादलने कहा, कि-"दादाजी! यह अविश्वास केवल मेरे ही ऊपर नहीं है, किन्तु सिंहलीमात्रके ऊपर इस का धब्बा है, वह जानते हैं, कि-मेरे सेनापति होजाने पर भी मुझे सहायता तुम ही दोगे। तुम सरीखे प्रवीण सेनापतिके ऊपर अविश्वास करना और सिंहली योधा मात्रके ऊपर अविश्वास करना एक ही बात है। इस अविश्वास को अवश्य ही दूर कर देना उचित है। गोराने कहा, मैं देखता हूँ, कि-इस बुढ़ापेकी दशामें अकेले मेरी ही गरदन पर सब भार आपड़ा है। परन्तु जब और कुछ उपाय नहीं दीखता तो फिर मैं पीछेको हट भी कैसे सकता हूँ? जो कुछ भी आपड़ेगी, झेलनी ही होगी, परन्तु कामका आरम्भ होने से पहिले एक बार पद्मिनीको भी यह समाचार सुनादेना चाहिये। चलिये उससे मिल तो लें। बादलने कहा-यह बात तो ठीक है, परन्तु वह इस समय राजकुमार अरुणसिंहके लिये बड़ी शोकाकुल हैं। राजकुमारको इस विपत्तिसे किसप्रकार छुड़ायाजाय, वह इस समय राणा भीमसिंहके साथ इस ही विचारमें लगीहुई है, इस लिये इस समय उनके साथ साक्षात्कार होना कठिन मालूम होता है। गोराने कहा--इसके लिये कुछ चिन्ता नहीं है आप आइये, राजपूतके लिये पहिले चित्तौर है, पीछे कुटुम्बी हैं। सेनापतिको राजकार्यवश आया हुआ सुनकर वह अवश्य ही हमसे बातचीत करेंगी। इतना कहकर गोराने उसी समय युद्धकी वरदी पहर कर हथियार लगालिये और घरसे निकल आये, सेनापति बादल भी उनके साथ २ चलदिये।

तृतीय परिच्छेद

सोये हुए संसारके ऊपर कृष्णपक्षकी चतुर्दशीकी आधीरातके घने अन्धकारका परदा फैला हुआ है । चारों ओर सूनसान है, किसी के चूँ तक करनेका शब्द सुनायी नहीं देता है, केवल किले के परकोटेकी घाटी के मार्गमें जागतेहुए पहरेदारोंके पैरोंकी आहट और उनके शस्त्रोंकी झनझनाहट कुछ २ सुनायी आरही हैं । किलेके इधर उधर कई एक वत्तियें अब भी टिमटिमाती हुई जलरही हैं । चारों ओरके अन्धकारने उनके अस्तित्वको बड़ा ही भयानक करडाला है । ऐसे समय पद्मिनीके महलके एक कमरेमें बादल और गोरा दोनोंजने रानी पद्मिनी के पास बैठेहुए बातें कररहे थे । पद्मिनी उन की बात सुनकर हंसरही थी, और बार २ खिड़कीमेंको झांककर बाहर की ओरको देखती जाती थी । बहुत देर होगयी, भीमसिंह महाराणा से मिलनेको गये हैं, परन्तु अभीतक लौटे नहीं, न जाने अरुणसिंहके लिये क्या सिद्धान्त किया, इस बातको जाननेके लिये उसकाजी बड़ा ही व्याकुल होरहा था । हतभाग्य बालक अरुणसिंहको देशनिकाले के दण्डसे छुड़ानेके लिये ही पद्मिनीने भीमसिंहको महाराणासे प्रार्थना करनेको भेजाथा, परन्तु उनको गयेहुए बड़ी देर होगयी, अभीतक लौटकर नहीं आये, तो क्या महाराणाने उनकी प्रार्थनाको स्वीकार नहीं किया ? । पद्मिनीका हृदय इस बातकी चिन्तासे व्यथित होनेलगा । पद्मिनीके कोई सन्तान नहीं थी, महाराणाके कुमारोंको ही उसने पुत्रप्रेमसे पालन किया था, उन कुमारोंमें भी अरुणसिंहको वह सबसे अधिक प्यार करती थी, इस कारण ही वह अरुणसिंहके देशनिकालेके समाचारको सुनकर व्याकुल होउठी थी । . . .

पद्मिनी घबड़ायी हुई बार २ खिड़कीमें को शिर निकालकर इधर उधरको देखनेलगी । पद्मिनीकी इस अस्थिरताको देखकर गोरा और बादल अन्तको तहाँसे बिदा होकर चलदिये और घर आनेके लिये मार्गमें आकर खड़े होगये । उस समय चित्तौरकी आम सड़क पर किसी मनुष्यका पता नहीं था । मार्गके दोनों ओरके घरोंमें सब लोग सोरहे हैं । ऊपर तारागण चुपचाप टकटकी लगायेहुए पृथिवी की ओरको देखरहे हैं । उन तारागणोंकी ओरको देखतेहुए दोनों जने धीरे २ उस मार्गमें जानेलगे । आधीरातकी गम्भीर सूनसानमें उनके अपने पैरोंका धीमा शब्द भी बीच २ में उनको चौंका देता था, इसी

गोरा ने देखा एक पत्ती उनके पैरोंकी आहटसे भयभीत होकर एक शाखा परसे दूसरी शाखा पर जाबैठे।

अचानक पास ही किलेकी दीवारके नीचे उनको कुछ बुन्दसा सुनायी दिया, गोरा एकसाथ बादलको रोक चौकन्ने होकर खड़े होगये फिर कान लगा अच्छी तरह से सुनकर घबड़ाहट भरे कण्ठ से कहने लगे, कि—यह तो मुसलमानोंकी जयध्वनि है, किलेकी दीवार के नीचे से सुनायी आरही है, निःसन्देह मुसलमानों ने किले को घेर लिया है, यह कैसा सर्वनाश हुआ! चलो जल्दी चलो इतनी बार साफ २ अल्ला हो अकबरका शब्द उनके कानों में पहुँच कर मानो धक्का देने लगा, वह उसी समय दौड़कर परकोटे के पास गये, तहां जाकर उन्होंने जो कुछ देखा, उससे अचम्भेमें होगये उन्होंने देखा कि—उनके पहुँचने से पहिले ही तहां बहुत से लोग इकट्ठे होगये हैं। स्वयं भीमसिंह तहां खड़े होकर बराबर पत्थरोंकी वर्षा कररहे हैं और उन पत्थरोंकी चोट से किलेके नीचे काले समुद्रकी समान एक साफ २ न दीखने वाला जनसमूह घबड़ा उठा है और घबड़ाकर तित्तर बित्तर होते हुए उस मनुष्योंके समुद्र मेंसे ही बराबर अल्ला हो अकबर की ध्वनि उठरही है।

बादल और गोरा जरा देर तो किंकर्त्तव्यविमूढ़ होकर भौचक्के से खड़े हुए दोनों ओरको देखते रहे फिर गोरा बड़ी शीघ्रतासे भीम सिंहके पास जाकर खड़े होगये, उस समय भीमसिंह एक बड़ीभारी शिला को गिरानेके लिये जोर लगा रहे थे, परन्तु गिरा नहीं सकते थे गोराने जाकर एक ही धक्केमें उस शिलाको नीचे ढकेल दिया भीमसिंह ने मस्तक उठाकर गोराकी ओरको देखा और हँसकर कहने लगे, कि—काकाजी? सेनापति कहां हैं? यह समय तो सोनेका नहीं है! शत्रु द्वारपर आपहुँचा है, किलेके भीतर घुसनेका उद्योग कररहा है, इस समय किलेकी रक्षा करनी होगी, उनको शीघ्र ही खबर पहुँचाओ। गोराने कहा राणा जी! आप निश्चिन्त रहिये, सेनापति ठीक समयपर यहां आकर पहुँच गये हैं, पत्थरोंकी वर्षा करनेका तो अभीतक अवसर नहीं है, अभी कुछ देर प्रतीक्षा करनी चाहिये शत्रुको कुछ मार्ग तक पहाड़पर चढ़ने दीजिये।

भीमसिंहने आश्चर्यमें होकर गोराकी ओरको देखा, गोराको वह अच्छे प्रकार जानते थे, उन्होंने उसी समय आज्ञा दी, कि—पत्थर बरसाना बन्द करदो, इतनी ही देरमें बादल भी उनके पास आगये। पत्थरोंकी वर्षा बन्द हुई देखकर यवनसेना एकसाथ पहाड़के ऊपरको

चढ़नेलगी। ढालू पहाड़के ऊपर पैर सहजमें नहीं जमसकता, इस कारण वह बड़े कष्टसे चढ़ने लगे। बीचर में कोई२ पैर फिसल जानेके कारण नीचे गिरनेलगे, परन्तु इससे वह डरे नहीं। मालूम होता है राजपूतोंके इकट्ठे किये हुए पत्थर निबड़गये हैं, ऐसा समझकर वह दूने उत्साहसे अल्ला हो अकबरकी पुकार करने लगे, परन्तु अचानक ही यह क्या आफत आगयी ? । पठानोंकी सेना प्रायः पहाड़के बीचोबीच में पहुँचगयी थी, ऐसे समय गोराका इशारा पाकर बादलने आज्ञा दी, कि—अब पत्थर लुढ़काना आरम्भ करो। उसी समय धड़ाधड़ बहुतसी बड़ी २ शिलायें आकर अचानक पठानोंके ऊपर आकर पड़ने लगीं। एक साथ हजारों पठान नीचे गिरकर कुचलगये। जब तक वह नीचे थे तबतक यह पत्थरोंकी वर्षा उनको ऐसा अपने वशमें नहीं करसकी थी, क्यों कि—पत्थर जिनके ऊपर गिरते थे केवल उनको ही कुचल सकते थे, परन्तु अबकी बार पत्थरोंका आक्रमण बड़ा प्रबल हुआ, अबकी बार एक २ पत्थरने दो एकको ही घायल नहीं किया, किंतु एकर पत्थरने गिरते २ सहस्रों पठानोंको नीचे गिरतेर कुचलना आरम्भ करदिया, जिनके ऊपर शिलायें गिरीं वह तो मर ही गये, परन्तु यह घायल हुए पुरुष जिनके ऊपर आकर पड़े वह भी लुढ़कते २ नीचे आकर मरणकी शरण होगये। इसप्रकार एकके धक्केसे दूसरा, दूसरेके धक्केसे तीसरा इसप्रकार कितने मरने लगे, इसका कुछ पता नहीं, ऐसा होते २ यवनसेना दुर्बल होगयी। भीमसिंह इस आश्चर्य दृश्यको देखकर आनन्दमें भरगये और बादलको छाती से लगाकर कहा, कि-बेटा ! आज वास्तवमें चित्तौर तुम्हारी ऋणी है। इसके बाद एक बहुमूल्य हार अपने कण्ठमेंसे निकालकर बादलके कण्ठमें पहरा दिया।.

उस समय का युद्ध प्रायः समाप्त होगया है । पठान लोग पर्वत पर चढ़नेके सङ्कल्पको छोड़कर किलेके नीचेकी ओर जाकर ठहर गये हैं। उषाका प्रकाश पूर्वदिशामें कुछ २ चमकने लगा है । भीमसिंह यहांसे विदा होकर अपने घरकी ओरको चले गये। बादल भी उस समय टहलते २ गोराके पास पहुँचगये और वह हार उनके गलेमें पहरादिया। गोराने कहा-यह क्या ?, मेरे गलेमें यह वरमाला कैसी ? इस हारको लेकर मैं क्या करूँगा ? । बादलने कहा-दादाजी ! हमारे रत्नभण्डार आप ही हैं। इस समय जो कुछ खरच किया है वह आपसे ही लेकर किया है। जो कुछ सञ्चय किया वह भी आप के ही पास रखदिया है,इसमें आप अप्रसन्न क्यों होते हैं? इतना कह

कर बादल गोराको लिपटगया और फिर उनको हाथ जोड़कर प्रणाम किया। गोराने उस समय बादलको दोनों हाथ उठाकर आशीर्वाद दिया, उनके नेत्रोंमें आनन्दके आंसू भर आये। बादलको वह बालक अवस्थामें ही सिंहल (सीलोन) से चित्तौरमें ले आये थे. और मातृहीन बादलका लालन पालन गोराने अपने ही हाथसे किया था.

चतुर्थ परिच्छेद

गुप्तचरके मुखसे समाचार सुनकर, उसकी ही बातके विश्वास पर अलाउद्दीनने आधीरातके समय चित्तौरके ऊपर चढ़ायी की थी, परन्तु प्रातःकाल होने पर उसने समझा, कि मैंने बड़ा धोखा खाया, ओः! यह चित्तौर का किला तो बड़ा विशाल है। इसको क्या कोई बलात्कारसे दखलमें करसकता है? तीन सौ हाथ ऊँचे दुरारोह विकट पहाड़के ऊपर यह किला एक बड़ेभारी दैत्यकी समान खड़ा है। पहाड़की तलीसे लेकर परकोटेकी चोटी तक सब जगह भयानक ढालू है। पर्वतका पाषाणमय शरीर कहां जाकर परकोटेकी बड़ी २ दीवारोंसे जाकर मिला है, इस बातका निश्चय ही नहीं होता। अलाउद्दीन सन्मुख युद्धमें किले पर कब्जा करनेके इरादेको छोड़कर किलेको घेरनेकी चेष्टा करने लगा, उसने नीचे उतरकर किलेको चारों ओरसे घेरलिया। उसकी सेनाने पूर्व, पश्चिम और उत्तरकी ओर छावनी डालकर किलेको एक गिरफ्तार आसामीकी समान पहरेमें करलिया। दक्षिणकी तरफ अगम्य वन था, उधर का भाग नहीं घिरसका। चित्तौरकी यह दक्षिण दिशा आरावलीकी बहुत दूर तक फैली हुई दुर्गम शृङ्खलाके साथ मिलरही है, उस पहाड़ी शृङ्खला की ओर शत्रुकी गति होना जरा कठिन है। अलाउद्दीन बड़ीभारी कोशिश करने पर भी उस दिशा पर दखल नहीं जमासका इस दक्षिण दिशामें भी दखल होजानेसे कदाचित् किलेको घेरना शीघ्र ही सफल होजाता, परन्तु इस असफलताके कारणसे उसका तीन ओरसे चित्तौर को घेरना भी निष्फलसा होनेलगा। चित्तौरी लोग किलेके तीन ओरसे घिरजाने पर भी अधिक नहीं घबड़ाये। वह आरावलीके खुले हुए मैदानमें बेरोकटोक खेती करके खाने लगे। झरनोंकी धारायें और सरोवरसे उनको पूरा२ जल मिलता रहा। अलाउद्दीन घबड़ा उठा, ऐसा होजायगा, इस बात का उसको कभी सन्देह भी नहीं हुआ था। वह बड़े घमण्डके साथ पद्मिनी नामक रत्नको छीननेके लिये आया था, परन्तु पद्मिनी इतनी

दुर्लभ है ! इस बातको उस समय किसने सोचा था ? । अलाउद्दीन को पद्मिनीका मिलना जितना कठिन होनेलगा, उसके मनमें पद्मिनी को लेनेकी चाहना भी उतनी ही अधिक होने लगी । अलाउद्दीन विचारनेलगा, कि-न जाने वह पद्मिनी कैसी है? उसका मुख कैसा है, उसका डील कैसा है ? क्या पृथिवी पर सबसे बढ़कर सुन्दरी वही है ? नजाने वह कैसी अपूर्व वस्तु है ! यह चित्तौरका किला तो बड़ा ही विकट है, ओहो ! राजमहलकी अटारीको तो देखो कितनी ऊँची है !, तो क्या मेरी यह कामना पूरी नहीं होगी ?, मैं दिल्लीका बादशाह होकर इस कामको न बनासकूँ, क्या यह भी कभी संभव है ?।

अबतक पद्मिनीको पानेकी यह हठ अलाउद्दीनका एक खयालमात्र था, परन्तु अब क्रम २ से वह एक जीवन-मरणकी समस्या बनगयी अलाउद्दीन विचारनेलगा, कि-पद्मिनी ! पद्मिनी ! आहा क्या यह रत्न मुझे नहीं मिलेगा ? वह तो भूमण्डल पर सबसे बढ़कर सुन्दरी है,वह तो एकमात्र दिल्लीके रङ्गमहलके ही योग्य है। वह किस वस्तुके बदलेमें मिलसकेगी ? । क्या राजपूत धन लेकर इस रत्नको नहीं देंगे?, क्यों नहीं देंगे वह तो मूर्ख हैं। कितने दिनोंतक इसप्रकार किले के भीतर पड़े २ अपनी रक्षा करसकेंगे ?, मैं महीनों तक पड़ा रहूँगा, कितने दिनोंतक वह मेरे यहाँसे जानेकी बाट देखेंगे ? । इसप्रकार अलाउद्दीनने अपनी लुटीहुई आशाको जीवित करनेके लिये बड़े २ कष्ट उठाकर न जाने कितने उद्योग किये, परन्तु उसने जब चेष्टा की तब ही उसके हृदयका बल टूटगया । दो महीने, छः महीने, होते २ एक वर्षका समय बीतगया, परन्तु क्या होता है ?, चित्तौरी बाहर आये ही नहीं अथवा उन्होंने जरा भी घबड़ाहट नहीं दिखायी, यह देख पादशाह बड़ी चिन्तामें पड़गया। उसको केवल चित्तौरकी ही चिन्ता नहीं थी, किन्तु अपने घरकी भी बड़ी भारी चिन्ता थी। वह विचारने लगा, कि—दिल्लीको छोड़कर आये हुए बहुत दिन होगये, मेरे पीछे वहाँ न जाने क्या २ गोलमाल हुआ होगा ! । उस समय घड़ी २ पर विद्रोहकी आग भड़क उठा करती थी, अलाउद्दीनने विचारा कि— राजधानीमें जो अभीतक किसी तरहँका विद्रोह नहीं होता है, यह केवल मेरी सेनाका डर है । परन्तु यह सेनाका बल ऐसा प्रबल कब तक बना रहेगा ? । अभीसे सेनामें असन्तोष और चञ्चलताके लक्षण दीखने लगे हैं। लूट, अत्याचार और नाच रङ्गके अभावसे उनका चित्त विद्रोही होउठा है । न जाने इसका क्या परिणाम होगा ! । कभी २ अलाउद्दीनके मनमें आता था, कि—यहां काम नहीं बनता तो अब

दिल्लीको ही लौट चलूँ,इस तुच्छ स्त्रीके लिये सर्वस्वको क्यों खोऊँ? परन्तु ऐसे विचारके अगले ही क्षणमें एक गर्व, खोटी अभिलाषा और अभिमान आकर उसके इस सङ्कल्पको न जाने कहाँ लेजाकर डुबोदेता था। अलाउद्दीनको कुछ नहीं सूझता था,. कि—मैं क्या करूँ और क्या न करूँ! इतनेमें ही और एक बड़ीभारी विपत्ति आकर खड़ी होगयी। अचानक उसके लश्करमें महामारीका रोग फैलगया, रोज २ असंख्यसेना रोगी होकर कालके गालमें समानेलगी। सेनाके लोग एक तो चलचित्त होही रहेथे अब इस प्राणनाशके भयसे और भी विद्रोही होउठे, आफत पर आफत आगयी, यह देखकर अलाउद्दीनने दिल्लीको ही लौटजानेका निश्चय कर लिया। लौटनेका प्रबन्ध तो होरहा है परन्तु हाय! बीच २ में उसका मन विद्रोही होउठता है। जब सेनाकी चञ्चलता और विद्रोहभावको देखता है तब तो मनमें विचारता है, कि-दिल्लीको ही लौट जाऊँ, परन्तु तीसरे पहरको सारे दिनके कामोंसे छुटकारा पानेपर जब लश्करके एक कोनेमें अपने खेमेमें बैठाहुआ चितौरकी ओरको देखता है तो तत्काल उसका विचार बदलजाता है। उस मौनधारी कठोर,डरावने आकारवाले किले के एक महलमें का हृदय न जाने किस मायाजालमें अलाउद्दीनको एक साथ जकड़लेता है। उस समय अलाउद्दीन चित्तौरको छोड़कर चले जानेके विचारको किसीप्रकारभी हृदयमें नहीं रखसकता, ऐसी दशा में बादशाह घबड़ा उठा! एक दिन दो दिन करके सप्ताह तक अला-उद्दीनने अपने मनके साथ युद्ध किया, परन्तु कुछ भी निश्चित सिद्धान्त नहीं करसका, अन्तमें एक ऐसी घटना होगयी, कि-जिससे अलाउद्दीन का चित्त एक ही दिनमें घबड़ागया।

एक दिन एक दूतने दिल्लीसे आकर समाचार दिया, कि-दिल्ली में बड़ीभारी आफत आपड़ी है। मुगलसेनापति तुर्कीखाँके साथ सहस्रों मुगलसेनाने आकर दिल्लीको घेर लिया है, वह बहुत जल्दी नगरके ऊपर धावा करेंगे। सेनापति जाफरखाँ काम लायक सेना न होनेसे बहुत घबड़ारहे हैं और आपके लौटकर आनेकी हर घड़ी बाट देखरहे हैं।

बादशाहने उसही दिन आधी सेना दिल्लीकी तरफको रवाना करदी, परन्तु उन्होंने अपने आप तहां और भी कुछ दिन बाट देखने का निश्चय किया। जिस दिन उनकी आधी सेना दिल्लीको रवाना होगयी, उस दिन तीसरे पहरके समय एकांतमें बैठकर अलाउद्दीनने खास २ वजीरोंके साथ एक अतिगुप्त सलाह की। उसका फल यह

निकला, कि—दूसरे दिन सन्धिका प्रस्ताव लिखकर एक पत्र महाराणाके पास भेजा। पत्र में इसप्रकार लिखाहुआ था-

"महाराणाजी ! मैं आपकी वीरता पर मोहित होगया हूँ, सारे हिंदुस्तानमें केवल चित्तौर ही ऐसी देखनेमें आयी है, कि—जिसने दिल्लीके बादशाहको अपना मनचीता काम नहीं करने दिया है। मैं आपके साथ मित्रता करना चाहता हूँ। केवल एक बार पद्मिनीको देखलेने मात्रसे ही मैं प्रसन्न चित्तसे आपके साथ मित्रता बांधकर दिल्लीको लौटजाऊँगा। मैंने सुना है कि—आप अतिथिका सत्कार करनेमें बड़े प्रसिद्ध हैं। आज मैं आपका अतिथि हूँ, आशा है आप मेरे इस अनुरोधको अवश्य ही मानलेंगे। जिसके लिये इतने समय तक दिल्लीको छोड़कर मेवाड़के किनारे पर पड़ारहा हूँ, उसका रूप कैसा है, यह देखनेके लिये ही मेरा यह आग्रह है। आपके आत्माभिमानाके ऊपर चोट मारनेकी मेरी इच्छा नहीं है, आशा है आप मेरी इस बातका विश्वास करेंगे। आप मेरे इस विचारकी सत्यताको इससे ही समझ सकते हैं, कि—मैंने अपनी आधी सेना अभी दिल्ली को भेजदी है, बाकी सेनाको भी शीघ्र ही यहां से रवाना करने वाला हूँ। केवल थोड़ी सी फौज मेरे पार्श्वचर (बार्डी गार्ड) रूपसे यहां रहेगी, आशा है इसपर आपको कुछ आपत्ति न होगी।"

पञ्चम—परिच्छेद

दूसरे दिन किलेके शिखर पर खड़े होकर सेनापति बादल ने एक बड़े ही आश्चर्यका दृश्य देखा। उन्होंने देखा कि—एक अकेला सवार बादशाहके लश्कर में से निकलकर दौड़ाहुआ किलेकी ओरको आ रहा है। उस सवारके हाथ में एक पत्रका खलीता और साथमें सन्धिकी पताका है। बादलने आज्ञा दी कि—इस सवारको बेखटक भीतर आने दो और हमारे पास लिवालाओ। अलाउद्दीन सन्धिका प्रस्ताव लिखकर भेजेगा यह बात उनके मन में एक दिन भी नहीं उठी थी। आज इस असम्भव सौभाग्य की संभावना से उनका हृदय मानो नाचने लगा।

सवार के भीतर पहुँचजाने पर बादल उसको अपने साथ २ महाराणा के पास लेगये महाराणा झटपट उस पत्रको खोलकर पढ़ने लगे। पहिले तो आनन्दकी झलकने और फिर विषाद के अन्धकार ने आकर उनके मुखमण्डलको क्रमसे प्रफुल्ल और मलिन करडाला

पत्र पढ़कर राणा भीमसिंहको दिया! भीमसिंहने पत्रको पढ़कर कहा कि-यदि इसमें चित्तौरका कल्याण हो तो अलाउद्दीन की बात मानलेना ही ठीक है? पहिले चित्तौर है और उसके पीछे रानी पद्मिनी है। आवश्यकता होनेपर मैं चित्तौरके लिये पद्मिनीको दे दूँगा। बादलने म्यान में से तलवार निकालकर कहा-कमी नहीं आप राजपूत हैं आप चित्तौर के लिये स्त्रियोंकी मर्यादा नष्ट कर सकते हैं परन्तु हम सिंहली हैं जबतक शरीर में प्राण रहेंगे तबतक ऐसा कभी नहीं होने देंगे। महाराणा ने हँसकर कहा-बालकबादल! चिन्ता न कर हमारी भी ऐसी इच्छा नहीं है हमारे लिये स्त्रियोंकी मर्यादा और चित्तौर एकसमान हैं जबतक शरीर में प्राण रहेंगे तबतक हम इन दोनोंमेंसे एक को भी हाथ से नहीं जाने देंगे परन्तु इस समय यह बात नहीं है। अलाउद्दीन केवल एकबार रानी को देखना चाहता है यह बात चित्तौर के कल्याण के लिये स्वीकार करने योग्य है या नहीं बस इस समय यही, विचार करना है। रानी की मर्यादा को न घटाकर यदि किसी प्रकार बादशाह की यह प्रार्थना पूरी कीजासके तो दोनों बातें बनती हैं। ऐसा कोई उपाय है या नहीं। इस समय यही बात हम सबों के ध्यान देने की है।

बादलने कहा-यदि रानीकी प्रतिष्ठामें कमी न आवे, यदि उनकी मर्यादामें बाधा न पड़े तो हमारी कुछ आपत्ति नहीं है, परन्तु इस विषयमें पहिले रानीजीकी भी संमति लेलेना आवश्यक होगी, सबसे पहिले यह जानलेना चाहिये, कि—इस विषयमें वह क्या कहती हैं। महाराणा और भीमसिंहने इस बातको मानलिया। उसी समय स्वयं महाराणा भीमसिंहके साथ पद्मिनीके महलमें चलेगये। भीमसिंहने पद्मिनीको वह पत्र दिखलाया, पद्मिनी पहिले तो कांप उठी, परन्तु कुछ ही क्षण बाद उसने सावधान होकर कहा, कि-राणाजी! इस विषयमें तुम्हारी क्या संमति है? भीमसिंहने कहा स्त्रीकी मर्यादा और चित्तौर दोनों ही राजपूतोंको प्यारे हैं, जबतक शरीरमें प्राण हैं, हम इन दोनोंमेंसे एकका भी त्याग नहीं करेंगे परन्तु, मर्यादाको बनाये रखकर किसीप्रकार अलाउद्दीनकी बात स्वीकार कीजासकती है या नहीं, बस इस प्रयोजनसे ही हम तुम्हारे पास आये हैं, तुम भी एक बार इस विषयमें विचार कर देखो!

पद्मिनीने हँसकर कहा, कि—राणाजी! एक दिन आपने त्यौरी चढ़ाकर मुझे भय दिखाया था, कि—अलाउद्दीनके सन्धिकी बात

उठाने पर आप मुझे भेट रूपसे बादशाह के पास भेजदेंगे, इसका उत्तर मैंने उसी समय देदिया था, कि—चित्तौरके कल्याणके लिये मैं प्रसन्नतासे इस दौर्भाग्यको अपने शिर पर धारण करलूंगी, आज देखती हूँ कि—वह दिन सामने आगया, आप महाराणासे कह-दीजिये, कि-मैं अपनी प्रतिज्ञाका पालन करनेको तयार हूँ ।

पद्मिनीकी इस अनचीती विकट संमतिसे भीमसिंह कुछ व्याकुल हो उठे। भीमसिंहने जो यह बात कही थी, कि—जहांतक प्रतिष्ठामें बट्टा न लगे तहांतक बादशाहकी प्रसन्नता कर दीजाय, परन्तु भीम-सिंहको यह आशा नहीं थी, कि-पद्मिनी इस बातको स्वीकार कर ही लेगी। पद्मिनीके ऐसे उत्तरको सुनकर कुछ देर तक वह सन्नाटेमें होकर टकटकी लगाये हुए उसकी ओरको देखते ही रहगये।

पद्मिनीनें फिर तैसे ही प्रसन्नभावसे कहा, कि-परन्तु बादशाहको एक बात माननी पड़ेगी। मेरा रूप देखनेके लिये ही बादशाहने यह नीचता की बात लिखकर भेजी है, मेरे देहसे उसका कुछ संवन्ध नहीं है, वह मेरे रूपको ही देखसकेगा, शरीरको नहीं देखसकेगा। यह सुनकर भीमसिंह चौंक पड़े, पद्मिनी यह क्या बात कहरही है ? क्या पद्मिनी किसी तसवीरमें अपनी सुन्दरताको भरकर बादशाहके पास भेजना चाहती है ?, बादशाह क्या इस बातको मानलेगा ? ।

भीमसिंहने कहा-पद्मिनी ! बादशाह तो तुम्हारी जीवित मूर्त्तिको ही देखना चाहता है। मेरी समझमें वह तसवीर या प्रतिमूर्त्तिसे संतुष्ट नहीं होगा।

पद्मिनीने कहा-राणाजी ! मैं निर्जीव चित्र या पुतलीकी बात नहीं कहती हूँ, वह मेरी सजीव परन्तु दर्पणमें, मेरी छायाको देखसकेगा।

षष्ठ-परिच्छेद

चित्तौरके निवासियोंने जिस समय रानीकी इस बातको सुना उस समय सब ही उसकी बुद्धिकी बड़ीभारी प्रशंसा करने लगे। उनको ऐसी आशा नहीं थी, कि—पद्मिनी इसप्रकार दोनों ओरसे प्रतिष्ठाको बनी रखकर चित्तौरकी रक्षा करसकेगी। आज बहुत दिनोंके बात उन्होंने समझा, कि—अब हम चित्तौरमें आरामके साथ रहसकेंगे, कितना ही समय बीतगया कि-वह चित्तौरसे बाहर निकलने भी नहीं पाते थे, एक वर्षसे अधिक बीतगया

इतने दिनोंतक मानो उनका जगत्के साथ कुछ सम्बन्ध ही नहीं था, वह जिस कष्टसे दिन काट रहे थे, उसको उनके सिवाय और कौन जानसकता है ? आज मानो उनके कारावासका अन्त होनेको है, इस कारण वह बड़ा आनन्द मनानेलगे ।

शीघ्रही महाराणाके उत्तरको पाकर बादशाह भी सन्तुष्ट होगया, इतनी सहजमें चित्तौरी उसकी बात मानलेंगे, इसकी उसको आशा नहीं थी और सबसे अधिक सन्देह उसको यह था, कि—पद्मिनी इस बातको नहीं मानेगी । बादशाह अपने मनमें कहनेलगा, कि—जब पद्मिनी चुपचाप मेरी इस बातपर राजी होगयी है तो अवश्य ही वह भीतर ही भीतर मुझसे प्रेम करती है । इन हठी राजपूतोंको बातोंमें फँसालेने पर शायद पद्मिनी को वशमें करना सहज होता, यह भी कमलाकी समान ही अपने आप हमारे यहाँ आजाती, परन्तु ये काफिर तो जहाँतक इनकी चलती है, मेरे वशमें होना ही नहीं चाहते, मेरी समझमें इनको काबूमें लाना बड़ा ही मुश्किल है । नारीचरित्रकी सब नाड़ीनक्षत्रोंको अलाउद्दीन मानो इस समय साफ २ नेत्रोंके सामने देखने लगेगा, परन्तु पद्मिनीका चरित्र सर्वसाधारण स्त्रियोंके चरित्रकी अपेक्षा कुछ और ही प्रकारका है, इस बातको बादशाह समझ ही नहीं सका, वह इस समय उस अचानक आयी हुई विपत्ति को, कि—जिसके कारण इतनी शीघ्र दिल्लीको लौटजानेके लिये लाचार हुआ है-धिक्कार देनेलगा, परन्तु उपाय तो कुछ था ही नहीं दिल्लीको लौटकर तो जाना ही पड़ेगा, तथापि इस लौटते समय अन्त को शायद छल छन्द करके कुछ काम बनासके, इस समय वह बार२ यही विचार करनेलगा ।

सप्तम परिच्छेद

अलाउद्दीन यद्यपि मेवाड़का शत्रु था तो भी राजपूतोंने अतिथि मानकर उसका अपमान नहीं किया। जिसदिन बादशाहने पद्मिनीको देखनेके लिये, थोड़ेसे शरीररक्षक सिपाहियोंको लेकर चित्तौरमें प्रवेश किया, उसदिन राजपूतोंने अपना एक भाई समझकर उसका सत्कार किया। पद्मिनीका महल उस दिन अनेकों प्रकारसे सजायागया। बाद-शाहकी अभ्यर्थनाके लिये उस दिन नर्त्तकी और वेश्याओंने अनेकों स्थानोंसे आकर चित्तौरमें आनन्दोत्सवको जगाडाला। अनेकों प्रकार के उपायोंसे खाने और पीनेके पदार्थ उसकी रसनाको तृप्त करनेके लिये इकट्ठे कियेगये ।

राजपूत अपनी सज्जनतासे एक मुहूर्त्तमें ही बादशाहकी शत्रुताको भूलगये। बादशाह उनके सत्कार और मिलनसारीके बर्त्तावको देख कर अपने मनमें कहनेलगा, कि—यह तो जातिभर बड़ी सज्जन है, इनको विना अपराधके ही इतना दिक्क कियागया, यह तो बड़ा ही अन्याय हुआ है। इस जातिभरके साथ मित्रता होनेमें जो सुख है, क्या पद्मिनीको देखनेमें इससे कुछ अधिक सुख मिलना संभव है ?। परन्तु यह सब विचार उठनेपर भी अलाउद्दीन उस समय एकायकी कोई स्थिर मीमांसा नहीं करसका। दोनों ही बातें उसके हृदयमें प्रबल वेगसे युद्ध करनेलगीं। उस युद्धके फलाफलका निश्चय करने से पहिले ही बादशाह पद्मिनी के महलमें जापहुँचा। उस समय नृत्य, गान और मदिरासे बादशाहका चित्त और ही दुनियांमें पहुँचगया, न्याय और अन्यायका विचार उससमय बहुत दूर भागगया।

नाच और गान समाप्त होने पर भीमसिंह बादशाहको भीतरकी ड्यौढ़ीमें लेगये, तहाँ परदेसे ढकाहुआ एक बहुत बड़ा आईना एक कोनेमें खड़ा करदियागया था, उसके सामने ही और एक बहुत बड़ा परदा अलाउद्दीनकी दृष्टिसे बचाहुआ टँगरहा था। उस कमरेमें पहुँचकर भीमसिंहने बादशाहसे उस आईनेके सामने खड़े होनेको कहा, बादशाहने ऐसा ही किया, तब उस शीशेका परदा धीरें २ उसके ऊपरसे उतरगया। अलाउद्दीन एक मुहूर्त्तभर पत्थरकी समान सुन्न खड़ारहा। नजाने किसने अचानक उस कमरेमें मधुरभावसे वीणाका बजाना आरम्भ करदिया ! अथवा नया आयाहुआ बसन्त कोकिलाके स्वर, फूलपत्ते लियेहुए उस छोटेसे कमरेमें आकर नाचने लगा। अलाउद्दीनको अपने नेत्रोंका विश्वास नहीं हुआ, एक मुहूर्त्त पहिले ही तो इस कमरेमें सूनसान और नीरसता थी, वही कमरा इस समय उसको स्वर्गीय प्रकाशसे भराहुआ और अपूर्व. सङ्गीतकी ध्वनिसे गुञ्जारताहुआ मालूम होनेलगा। अलाउद्दीन भौचक्कासा होकर दर्पणमें पद्मिनीकी छवि देखनेलगा। देखते २ एकसाथ अपने आपेको भूलगया और दर्पणकी ओरको बढ़कर चलदिया। पीछेसे भीमसिंहने कहा—शाहंशाह ! यह क्या करते हो ? सावधान पद्मिनी का अपमान न करना, परन्तु अलाउद्दीनको इसपर भी चेत नहीं हुआ, उसने भीमसिंहकी बातको सुना ही नहीं, एक बार उसकी ओरको देखते ही झपटकर दर्पणके पास जा खड़ा हुआ, परन्तु अगले ही क्षणमें भौचक्कासा होकर रहगया।

अलाउद्दीनने देखा, कि—एक अपूर्व घटना है, आईनेके भीतर वह सुन्दर मोहनी मूर्त्ति अब नहीं है। न जाने जरा ही देरमें कहां अस्त होगयी और उसके बदलेमें तहां एक बड़ी तेजस्वी बड़े ही सुन्दर बालक की रणरङ्गमें सजी हुई मूर्त्ति दीखनेलगी, अलाउद्दीन नहीं पहचान सका, कि-यह मूर्त्ति किसकी है? परन्तु भीमसिंहने पहिचान लिया कि—यह बादलका प्रतिबिम्ब है। भीमसिंह अलाउद्दीनका हाथ पकड़कर दूसरे कमरेमें लेगये और उनसे कहा, कि-शाहंशाह! हम लोग अतिथिका अपमान नहीं किया करते हैं। आपने जो कुछ भी किया आज हमें उसको क्षमा ही करना उचित है, क्यों कि—आज आप हमारे अतिथि हैं। बादलकी इस ढिठाई को आप क्षमा करिये, चलिये आपको मैं किलेके बाहर पहुँचा दूँ।

अलाउद्दीनने कुछ उत्तर नहीं दिया, चुपचाप राणा भीमसिंहके साथ घोड़े पर सवार होलिया, परन्तु उसके हृदयमें एक आंधीसी उठरही थी, बाहरको देखनेका उसको अवसर ही नहीं था, इसकारण वह भीमसिंहकी बात पर कुछ ध्यान नहीं देसका, किन्तु अपने मन ही मनमें विचार करता हुआ चलदिया और भीमसिंह उसके पीछे२ चलनेलगे। सारे रास्ते अलाउद्दीन अपने हृदयके साथ कुश्ती लड़ता रहा। आज तक उसका हृदय अनेकों बार उसकी कार्यसिद्धि में सोना २ बाधा डालता रहा था, परन्तु आज जागनेसे पहिले जरासी धमकी खाकर भी पीछेको नहीं लौटा किंतु बराबर आगेको ही बढ़रहा है, पद्मिनीके रूपके स्मरणने चाबुकके ऊपर चाबुक लगाकर जरा ही देरमें अलाउद्दीन को ठीक करदिया।

अलाउद्दीन विचारने लगा, कि—आहा! पद्मिनी कैसी आश्चर्य रूपवती है। वह नेत्र, वह मुख, वह दोनों अपूर्व भौं और वह फूलकी समान कोमल शरीर, यह सब ही तो अनुपम था! एक तुच्छ पहाड़ी जातिकी प्रीतिके बदलेमें क्या वह छोड़नेकी वस्तु है? कभी नहीं, जैसे भी होगा तैसे इस रत्नको तो हाथमें लेना ही होगा। इसको पाने में अगर सर्वस्व भी जाता रहे तो वह कबूल है! परन्तु कौनसा उपाय कियाजाय? कि—जिससे यह जाति काबूमें आवे। अलाउद्दीन अपने मनमें पद्मिनीकी बातोंको जितना विचार करता था, उतना ही उसका चित्त उन्मत्त होता चलाजाता था। वह अपने मनमें कहने लगा, कि-यह संसार, बादशाही और सब ऐशो आराम एक तरफ है और यह अकेली पद्मिनी एक तरफ है। पद्मिनीके बिना अब तो चारों तरफ मुझे अन्धेरा ही अन्धेरा दीखता है। यह रत्नदीपक अगर शाही तख्तके पास

रोशन न हुआ तो शाही तख्त दो कौड़ीका है। अब तो इसके बिना मुझे तख्तताऊस अच्छा ही नहीं मालूम होता, मैं दिल्लीका बादशाह होकर क्या आज जरासी आंखकी लिहाज के सबबसे इस बड़ी भारी ख्वाहिशको पूरी नहीं करूंगा ?। जरूर करूंगा।

ऐसा विचार करते २ अलाउद्दीन किलेके बाहर आपहुंचा। उसके शरीररक्षक सवार उसके आगे पीछे हाथोंमें नङ्गी तलवारें लिये चल रहे थे, भीमसिंह पीछे २ आरहे थे। उनके साथ कोई सेवक या सिपाही नहीं था। अलाउद्दीनने एक बार पीछेको दृष्टि डालकर यह सब देखलिया। एक राक्षसी प्रकाशने एक साथ उसके मुखपर हँसीकी रेखा झलका दी। धीरे२ वह पहाड़ पर से उतर कर किलेके आखिरी फाटक पर आपंहुचा। यहां साधारणसे पांच छः सिपाही पहरा देरहे थे। फाटकके बाहर होकर भीमसिंहने कहा-शाहंशाह ! बस हमारा अतिथिसत्कार यहां तक पूरा होलिया, अब आप यदि कोई वर्त्ताव सज्जनताके प्रतिकूल करेंगे तो उसका जवाब हम तलवारसे देंगे। अब अतिथिभावका लेखा नहीं रहा, लीजिये अब मैं विदा होता हूं। इतना कहते ही भीमसिंह पीछेको लौटे, वह उत्तरकी प्रतीक्षा न करके किलेमें प्रवेश करते थे, कि-अलाउद्दीनने पुकार कर लौटाया और कहा-महाराज! भीमसिंह विस्मित होकर फिर लौट आये और बोले, कि- कहिये शाहंशाह !, अलाउद्दीन कुछ इधर उधर की बातें बनाता रहा और इसके बाद कहनेलगा, कि-आपकी सज्जनतासे मैं बड़ा ही खुश हुआ हूँ, परन्तु पद्मिनी मेरे चित्तसे किसी तरह भी नहीं हटती, आप मित्रताको निभानेके लिये और चित्तौरकी कल्याणकामनासे, उसको मेरे सुपुर्द करदीजिये, जिससे कि-मेरी और आपकी यह मुहब्बत हमेशा बनी रहे।

यह सुनते ही भीमसिंहने म्यानमेंसे तलवार निकालली। अलाउद्दीनकी सभ्यता पर इससे पहिले ही उनके मनमें बहुतसे सन्देह उठरहे थे, परन्तु इसप्रकार वह एकसाथ उस सरल अतिथिभाव का अपमान करेगा, इस बातकी उनको जरा भी आशा नहीं थी। भीमसिंहने कहा-शाहंशाह ! जरा सोच विचार कर मुखमेंसे बात निकालिये, आपको ऐसी असङ्गत बात मुखमेंसे नहीं निकालनी चाहिये। भीमसिंह इस बातको पूरी २ कहने भी नहीं पाये थे, कि-तत्काल अलाउद्दीनने अपने साथके सिपाहियोंको ऐसा भयानक इशारा किया, कि—उसी समय भीमसिंह गिरफ्तार कर लिये गये और बादशाह अपने घोड़को आड़ देकर किलेसे बहुत दूर चलागया।

कां पठानोंने आकर भीमसिंहको घोड़े परसे उतार लिया, भीमसिंह इस अचानक घटनाके लिये पहिलेसे तयार नहीं थे, तो भी उन्होंने एक पठानके ऊपर चोट की, कि-इतनेमें ही पास ही बहुतसे पठान सवारोंके आपहुंचनेकी आहट पाकर उन्होंने अधिक साहस करना उचित नहीं समझा।

किलेके फाटकपर था उसके समीप जो राजपूतसेना थी वह अधिक नहीं थी, इसलिये भीमसिंह ने बल दिखाना मूर्खताका काम समझ कर आत्मसमर्पण करदिया, उस समय क्रोधके मारे उनके दोनों गाल लाल २ हो उठे, प्रबल बिजलीका प्रवाह उनके दोनों नेत्रोंको भेदकर उस अन्धकारमें भी स्पष्ट प्रज्वलित होउठा। दाँतोंसे दाँतों को पीसकर मनमें कहने लगे, कि—यदि एकवार छूटजाऊँ तो बताऊँ; परन्तु उस समय पठानोंने आकर उनको चारों ओरसे घेरलिया था जबरदस्ती पकड़कर अपने लश्करकी तरफ घसींटे लिये जा रहे थे, भीमसिंह मनमेंकी बात मुखसे बाहर निकालने भी नहीं पाये थे, कि-उनके विचारकी गांठ टूटगयी। भीमसिंह चुपचाप मनकी पीड़ाको मनमें ही दबा कर उनके साथ २ चले गये।

कइएक राजपूत पहरेदारोंने दूर से इस घटनाको देखा, परन्तु वह फाटकको छोड़कर बाहर न आसके, क्योंकि—उनको फाटकको छोड़कर हटने की आज्ञा नहीं थी। इसलिये वह तहां ही खड़े २ चिल्लाने लगे, उस कोलाहल को सुनकर कइएक सैनिक पासको घाटीमेंसे आगये और उन्होंने अपना कुछ वश न चलता देख फाटक के ऊपर चढ़कर बिगुल बजाया, उसको सुनते ही समस्त चित्तौर नगरी में खलबली पड़गयी, सब लोग घबड़ा उठें।

अपने महलकी खिड़की में बैठी हुई रानी पद्मिनी ने भी पठान बादशाहकी इस कृतघ्नीपनकी बातको सुना। जरादेरको तो वह भौचक्की सी होगयी, फिर वह अपने मन में कहने लगी, कि—क्या सत्य ही पठान बादशाहने आज अतिथिकी सभ्यताके मस्तक पर लात मारकर यह नीचता की है ? क्या संसार यहां तक गिरगया ? यह बात तो विश्वास करने के योग्य नहीं है, फिर धीरे २ उठकर पद्मिनीने दूसरी खिड़की में जा बादशाह के लश्करकी ओरको देखा, उसके नेत्रों में से आग बरसने लगी, दाँतोंसे होट चाबने लगी तथा गरदन सूधी और ऊँची होगयी पद्मिनीने देखा, कि—जैसे शिकार हाथ लगजाने पर लुटेरे लुटेहुए मनुष्य के चारों ओर नाच २ कर उत्सव मनाते है तैसे ही पठान भी अपने लश्कर में मसालें बालकर बड़ा ही आनन्द मना रहे हैं।

चतुर्थ खण्ड

प्रथम परिच्छेद

दूसरे दिन पद्मिनीने सुना, कि—अलाउद्दीनने महाराणाके पास कहला कर भेजा है, कि-यदि पद्मिनी को शीघ्र ही मेरे अर्पण करदो तो भीमसिंह छूटसकते हैं। नहीं तो इनको दिल्लीमें लेजाकर महलके दरवाजे पर पिंजरेमें बन्द करके रक्खा जायगा, भीमसिंहको मेरे चिड़ियाखानेका बन्दर बनना पड़ेगा।

यह सुनकर पद्मिनी आंखें फाडेहुए विचारने लगी, कि—उसके कमलके पंखड़ीकी समान दोनों चिकने कपोल ऐसे तमतमा उठे कि-जैसे प्रातःकालके सूर्यकी किरणोंसे पूर्वदिशाका आकाश लाल २ होजाता है, उसके कानोंमेंके दोनों कुण्डल हिलने लगे। उस रातको पद्मिनी जरा भी नहीं सोयी, कभी छत पर जाकर टहलने लगती थी कभी छतके ऊपर परदेकी दीवार परको उचक कर बादशाहके लश्करकी तरफको ताकने लगती थी और कभी घरमें आकर पलँग पर पड़ी २ विचारसागरमें गोते खाने लगती थी।

उसकी चिन्ताका क्या ठिकाना था! उसको केवल प्राणपतिका विरह ही नहीं जलारहा था, किन्तु चित्तौरकी प्रारब्धके कोनेमें जो अतिभयानक अग्नि धधकने वाली है, उसका फलीता भी पद्मिनीके ही हाथमें है? वह क्या आज चित्तौरको अपने हाथसे जलाडाले? क्या अपने तुच्छ शरीरके लिये वह चित्तौरका नाम निशान मिटा डाले? पद्मिनीको इस बातका निश्चय होगया था, कि—केवल भीमसिंहको पींजरेमें बन्द करके ही अलाउद्दीन चुप नहीं होरहेगा, किन्तु भीमसिंहके न रहनेसे चित्तौर कितनी दुर्बल होगयी है ?, इस बातका पता जिस दिन अलाउद्दीनको लगेगा, उसी दिन फिर चित्तौरके दरवाजे पर आकर खड़ा होजायगा। मेरे प्राण खो देने पर भी केवल अपने चित्तके फफोले निकालनेके लिये ही अलाउद्दीन फिर फौज लेकर आजायगा, उस समय क्या होगा ?। पद्मिनी साफ २ समझ गयी, कि-मैं अपने प्राण देकर भी चित्तौरकी रक्षा नहीं करसकती। चित्तौरका भरोसा भीमसिंहके ही ऊपर है, यदि वह लौटकर आजायं तब ही चित्तौरकी अब भी रक्षा होसकती है, नहीं तो सब वृथा है, सब

इन्द्रासनके फूल हैं । परन्तु भीमसिंहको किस उपायसे छुटाया जाय, प्रकाशरूपसे युद्धमें अलाउद्दीनके ऊपर आक्रमण करना तो कठिन है, इस बातको पद्मिनी अच्छे प्रकार जानती थी, तिस पर भी इतने दिनोंतक रोक रखने पर अलाउद्दीनकी सहस्रों सेनाके सामने चित्तौरकी थोड़ीसी राजपूत सेना कितनी देर टिकसकेगी ? परन्तु प्रकाशरूपसे युद्ध करनेके सिवाय और उपाय भी क्या है ? । हां यदि कोई गुप्तरूपसे कपट वेषमें बादशाहके लश्करमें घुसकर तथा कारागारके रक्षकको रिश्वत देकर भीमसिंहको छुटासकै तो काम बनसकता है, परन्तु इस भारको अपने ऊपर लेनेवाला ही कौन है ?। क्या ऐसा परम चतुर साहसी पुरुष चित्तौरमें कोई है ?। राजपूतोंमें साहसी मनुष्यकी कमी नहीं है, परन्तु इस समय तो साहसकी अपेक्षा चतुराई की अधिक आवश्यकता है ! राजपूत अपने प्राणों का मोह नहीं रखते हैं, परन्तु प्राण देने पर यदि काम सिद्ध न हो तो उस प्राण देने से कुछ भी लाभ नहीं है । पद्मिनी दिव्यदृष्टि से देखने लगी, कि-इस समय ऐसा उद्योग करनेका परिणाम और भयानक होगा, अलाउद्दीनको यदि ऐसे षड़यन्त्रका जरा भी पता लग गया तो भीमसिंहको छुटानेका फिर जरा भी भरोसा नहीं रहेगा ।

पद्मिनी फिर विचारने लगी, उसकी चिन्ता का प्रवाह और एक ओरको बहने लगा । वह विचारने लगी, कि—अच्छा मैं आत्मसमर्पण कर भी दूँगी तो मेरे पास हीरा जड़ी अँगूठी भी तो है ! भीमसिंह के छूटते ही मैं अँगूठी में से उखाड़कर खालूंगी परन्तु अलाउद्दीन यदि ऐसा करनेसे पहिले ही मेरे पास आपहुँचा, यदि मुझे पाकर भी उसने राणाजीको नहीं छोड़ा । विश्वासघातीका विश्वास ही क्या ? तो उस समय क्या उपाय होगा ।

पद्मिनीने विचार किया, कि—हां ! बादशाहके पास एक प्रस्ताव कियाजासकता है । पद्मिनीने एक कहानीमें सुनाथा, कि—कोई राजकन्यायें किसी दैत्य या लम्पटके हाथमें पड़जाने पर यह छल किया करती थीं, कि—हमारा एक व्रत है, इस लिये हम कई महीने तक एकांतमें रहेंगी, जब तक हमारा व्रत पूरा न होजाय तबतक कोई भी हमारे पास न आवे । वह दैत्य प्रायः उन राजकुमारियोंकी इस बातको मानलिया करते थे, तो क्या अलाउद्दीन मेरी बात नहीं मानेगा? अवश्य मानेगा । भीमसिंह मेरे पति हैं भर्त्ता हैं वह जबतक बादशाही लश्करमें रहेंगे तबतक मैं बेगम कैसे बनसकती हूँ ? इस बात का बादशाहके ऊपर प्रभाव पड़ेगा और वह स्वीकार करके भीमसेनको छोड़देगा । तो क्या यह उपाय ही श्रेष्ठ है ?।

परन्तु इनके सिवाय अलाउद्दीनको और एक प्रकारसे भी तो धोखा दिया जासकता है। यदि एक खाली पालकी भेजकर अला-उद्दीनको समझाया जासके, कि—इस पालकीमें ही पद्मिनी बैठी है, भीमसिंहके छूटनेके समयतक वह इसमेंसे वाहर नहीं निकलेगी, तब तो मैं अपनेको भी बचासकूँगी। प्राणोंके लिये नहीं, प्रतिष्ठाके लिये तो पद्मिनी ऐसा करसकती है। इस शठतामें क्या पाप है?, कदापि नहीं। शास्त्र कहता है—" शठे शाठ्यम् " और जब शठता ही करनी ठहरी तो उसमें भला बुरा क्या?। पद्मिनी चिन्ता करनेलगी, चिन्ता करते २ उसके मुखपर एक आनन्दके प्रकाशकी रेखा झलकनेलगी, इसकी दोनों भौं कौतुकके मारे कुञ्चित होगयीं। पद्मिनी ओठ चबाकर मन ही मनमें कहनेलगी, कि—वादशाह! तूने शस्त्रके युद्धमें हिन्दो-स्थान भरको जीता है, परन्तु कपटके युद्धमें तुझे मुझसे हार माननी पड़ेगी। इसके वाद पलँगपर लेटते ही पद्मिनीको निद्रा आगयी।

द्वितीय-परिच्छेद

—○◦○—

दूसरे दिन दुपहरके समय चित्तौरेश्वरीके मन्दिरमें पूजा करके लौटने पर पद्मिनीने देखा, कि—वादल उपस्थित है। पद्मिनीने कहा-कहो सेनापति क्या समाचार है?। वादलने कहा, बुआजी! मैं सेना-पति हूँ या नहीं, इसका निश्चय आज होजायगा, परन्तु बुआजी! आज मैं दरवारमें यह क्या सुनकर आरहा हूँ? यह वात क्या सत्य है?। पद्मिनीने कहा—सेनापति! कौनसी वात सुनी है? वादलने कहा—यही कि—तुम वादशाहके—

वादल अपनी वातको पूरी भी नहीं करने पाया था, वह आगेको कह ही नहींसका, मानो किसीने उसका गला पकड़लिया। यह देख पद्मिनीने हँसकर उत्तर दिया, कि—हाँ बेटा! इतने दिनों तक बैठे २ तुम्हारी वीरता देखली, अबकी वार वादशाहके पराक्रमको भी देखूँगी। यह सुनकर वादलकी आँखें ऊपरको चढ़गयीं, वह कुछ देर तक टक-टकी लगायेहुए पद्मिनी की ओरको देखतारहा और फिर कहनेलगा, कि—तो क्या इसमें हमारा दोष है? राणाजी किसीसे कुछ भी न कहकर किलेसे वाहर क्यों गये?। मैं सेनापति हूँ, मेरे ऊपर ऐसा कलङ्कका टीका लगानेका उनको क्या प्रयोजन था?। पद्मिनीने कहा-बेटा! क्रोध न करो, उस अपराधका प्रायश्चित्त अब मैं करूँगी। इसी लिये मैं वादशाहके लश्करमें जाती हूँ। तुझे भी मेरे साथ चलना होगा।

क्या मुझे ?, ऐसा कहकर बादल बड़े क्रोधमें भरगया और बोला कि—बुआजी! जबतक मैं सेनापति हूँ तबतक पठानके लश्करमें मैं तुम्हें कभी नहीं जानेदूंगा। निःसन्देह तुम पागल होगयी हो, नहीं तो तुम यह एक तमाशा कर रही हो, जो कि अभी तक मेरी समझमें जरा भी नहीं आया है।

पद्मिनीने हँसकर कहा, कि—बेटा! इसकी चिन्ता न करो, कल को तुम सेनापति नहीं होओगे! कलको बादशाहके लश्करमें सैकड़ों डोलियें जायँगी, हर एक डोलीके साथ चार२ उठानेवाले होंगे, कलको तुम भी एक डोलीके उठाने वाले बनोगे। यह सुनकर बादल चौंक उठे और मन ही मनमें कहने लगे, कि-क्या अबकी बारकुछ हँसी की गयी है? निःसन्देह यह तो बड़े ही अचरज़की बात है! ऐसा विचारते हुए बादल टकटकी लगाये पद्मिनीकी ओरको देखते रहे थे,मुखसे कुछ भी नहीं कहने पाये और फिर एकसाथ कहनेलगे, कि-बुआजी! तुम्हारा साहस यहांतक बढ़ाहुआ है? मैं तो तुम्हारी बातको अभी तक समझ भी नहीं सका था। तुमने तो मुझे वज्रमूर्ख बनादिया, तब तो डोलियों के रुद कहार मुझसरीखे योधा ही बनेंगे?। पद्मिनीने हँसकर कहा, कि—सेनापति! केवल कहार ही नहीं, उनके भीतर बैठनेवाली स्त्रियें भी तुम्हें ही बनना होगा। और मेरे नामकी जो पालकी होगी, उस में स्वयं गोरा काकाजी जायँगे। बादलने कहा—बड़े आश्चर्यकी बात है! तब तो बादशाहको मूर्छा आजायगी, परन्तु हथियारोंके लिये क्या किया जायगा?।

पद्मिनीने कहा—हथियारोंके रखनेकी जगह भी डोलियोंमें ही कीजायगी। ढाल तलवारवाले कहारोंको तो अलाउद्दीन सह भी नहीं सकेगा? इतनी बातें करते २ बादलकी सूरत बदलगयी। उत्साह और आनन्दके कारण उसके छोटेसे गठीले शरीरमें एक चञ्चलता की लहर दीखनेलगी। बादलने कहा—बुआजी! अबकी बार पठान को अपनी शठताका पूरा २ उत्तर मिलेगा। तुम निश्चिन्त रहो! निःसंदेह कल आधीरातके समय राणाजी अवश्य ही छूट जायंगे। यदि राजपूत उनको नहीं छुड़ा सकेंगे तो रणभूमिमें प्राण देदेंगे, और मैं भी न छुड़ासका तो निःसन्देह सेनापति पदको त्यागदूँगा।

तृतीय परिच्छेद

भीमसिंहको पकड़कर अलाउद्दीनको भरोसा होगया था, कि-अबकी बार पद्मिनी नामकी सोनेकी चिड़िया अवश्य ही हाथमें आजायगी। परन्तु स्वयं अग्रणी बनकर इतनी शीघ्र आत्मसमर्पण करने को आवेगी, यह बात तो कभी उसके मनमें उठी ही नहीं थी। अला-

उद्दीन आनन्दके मारे फूला नहीं समाया । उसके चिरकालके रोपे हुए आशावृक्षमें आज फूल आना आरम्भ हुआ है । एक वर्षसे अधिक बीतनेको आगया,वह इस रत्नके लालचमें सर्वस्व छोड़कर इस राजपूतानेके नीरस निरानन्द जङ्गलमें पड़ा हुआ है। दिल्लीके रङ्गमहलकी सुखस्वच्छन्दता, आमोद प्रमोद और सुन्दरियें उसको अच्छी नहीं लगतीं । मरुमरीचिकाकी समान केवल एक आशाके अञ्चलको पकड़ कर अलाउद्दीनने संसारके सब सुखभोगोंको तुच्छ समझ रक्खा है, वही मरीचिका आज मूर्त्तिमती बनकर सत्य ही उसको वरनेके लिये आरही है, आज अलाउद्दीन अपने चित्तको कैसे स्थिर रक्खे ? ।

पद्मिनीकी वह मदभरी दोनों आंखें, आवेशसे तिरछी हुई दोनों भौं और फूलोंकी समान कोमल करकमल जिनको अलाउद्दीन अभी उस दिन अपनी आंखोंसे देखकर आया है, वह मानो उसकी आंखोंके सामने आगये । उस सुखदायिनी स्मृतिके साथ उसके चित्तपट पर न जाने कितनी मोहमयी छवियें बनकर उदित होने लगीं, अलाउद्दीन उन कल्पित छवियोंके मोहमें पड़कर अपनी सूक्ष्म दृष्टिको—अपनी विचारशक्तिको खोबैठा, पद्मिनीका प्रस्ताव उस समय उसको जरा भी असङ्गत नहीं मालूम हुआ ।

पद्मिनीने बादशाहसे मिलनेसे पहिले भीमसिंहको छोड़देनेके लिये कहा और यह भी निवेदन किया कि—जब तक भीमसिंह बादशाही लश्करको छोड़कर दूर नहीं चलेजायँगे तब तक मैं सातसौ असूर्यम्पश्या (परदानशीन) सहेलियोंके साथ अलग खेमेमें रहूंगी । अलाउद्दीन क्या पद्मिनीकी इस पहिली प्रार्थनाको टाल सकता था ? । पद्मिनीका ऐसा कहना तो अनुचित नहीं है ! पद्मिनी अपने पतिके सामने बादशाहकी बगलगीर कैसे होसकती है ? इसलिये जितनी जल्दी होसके भीमसिंहको लश्करके बाहर निकाल देना चाहिये भीमसिंह पद्मिनीके पति हैं, इस बातको तो इस समय अलाउद्दीन याद भी नहीं करना चाहता ! अलाउद्दीन विचारने लगा, कि—इस समय तो पद्मिनीकी डोलीका यहां पहुँचना ही मनोरथ सिद्ध होना है । पद्मिनी तो अब मेरी होही चुकी, भीमसिंह अब पद्मिनीके कोई भी नहीं हैं । इस बातमें अब अलाउद्दीन बेसबरे हृदयसे, मुग्ध नेत्रोंसे, केवल पद्मिनीके आनेकी बाट देखने लगा । बढ़िया पोशाक पहर कर चित्तौर के मार्गकी ओरको देखता हुआ घड़ियें गिननेलगा ।

मध्यान्हकालके भगवान् भास्कर जिस समय अपनी प्रखर किरणों की वर्षा करनेके अनन्तर श्रान्त होकर पश्चिमके आकाशमेंको ढलने

लगे, उनकी सुनहरी किरणें जिस समय हँसते २ चित्तौरके गौरव मय ललाटके ऊपर छिटकने लगीं, उस समय अलाउद्दीनने उत्फुल्ल नेत्रोंसे देखा, कि—चित्तौर के सातों फाटक खुलकर लोगोंके दलके दल नीचेको उतर रहे हैं।

उस बड़े भारी दलके बीचमें अलाउद्दीनने साफ २ देखा कि—यनुतसी डोलियें भी आरही हैं। पद्मिनी इनमेंसे कौनसी डोलीमें है, इस बातको जाननेके लिये अलाउद्दीन टकटकी लगाये हुए उधरको ही देखता रहा। डोलियोंकी कतारें जितनी समीपको पहुँचनेलगीं, अलाउद्दीनका हृदय उतना ही अधिक पुलकित और कंपित होने लगा। अलाउद्दीनने देखा, कि—डोलीके बाद डोली, इसप्रकार असंख्यों डोलियें कीमती परदोंसे ढकीहुई कैसी टेढ़ी हो होकर सर्पकी समान कतारेंबँधी चली आरही हैं। इस बातका अलाउद्दीनके मनमें एक बार भी ध्यान नहीं आया, कि—यह सर्पही लहराता हुआ मुझे डसने के लिये आरहा है। उसके नेत्र उस समय, साँपके माथेकी मणि कहाँ है? इस बातकी ही खोजमें व्याकुल होरहे थे। मणिको छीनने की कोशिश करने पर डसनेके लिये आना, यह साँपका स्वभाव है, इसबातको अलाउद्दीनने उस समय अपने मनमें एक बार भी नहीं विचारा, उस समय तो वह केवल इसही विचारमें मग्न था, कि—आज मैं चित्तौरके धनभण्डारमेंकी मणिको पाकर कृतार्थ होऊंगा।

कुछ ही देर बाद डोलियोंके प्रवाहने बादशाही लश्करके सामने आकर ठेक खायी, उस समय पठानोंने डोलीवालोंको पद्मिनी के लिये नियत किया हुआ खेमा बतला दिया। बादशाहके खेमेके पास ही एक कनातों से घिरे हुए बहुत बड़े डेरेको, भीतरसे अनेकों प्रकारकी विलासकी सामग्रियोंसे सजाकर पद्मिनीके लिये नियत कियागया था। राजपूत उन सातसौ डोलियोंको लेकर क्रम २ से उस खेमेमें घुसगये। उस समय एक राजपूत सरदारने आकर बादशाहसे निवेदन किया कि—शाहंशाह! अब भीमसिंहजीको छोड़ दियाजाय। बादशाहने कहा—मुझे इसमें कुछ इनकार नहीं है। भीमसिंह अब मेरे भाई हैं! मैं आज ही उनके राज्यको छोड़कर दिल्लीको चला जाऊँगा। तुम उनको बेखटक लेजाओ। बादशाहने उनको भीमसिंह का कारागार बता दिया, राजपूत उधरको चलेगये। दो तीन राजपूत सरदारोंके साथ भीमसिंह घोड़े पर चढ़कर चित्तौरकी ओरको चलदिये। किसी पठानने उनको नहीं रोका, राजपूतोंने भी अपने मुखसे एक बात भी नहीं कही। अपने लश्करमें बैठा हुआ बादशाह टकटकी

लगाये हुए चित्तौरमें पहुँचते हुए भीमसिंहको देखता रहा। राजपूत भी पद्मिनीके डेरेमें बैठेहुए आनन्दके साथ चुपचाप इस तमाशेको देखते रहे। भीमसिंहके चित्तौरमें पहुँचजाने पर अलाउद्दीन पद्मिनीके खेमेमें जानेको तयार होने लगा, परन्तु इतनेमें ही एक बड़ाभारी हुल्लड़ होकर चारों दिशाओंको कम्पायमान करताहुआ बादशाहके खेमेके पास आपहुँचा। बादशाहने बाहरको झाँककर पद्मिनीके डेरेकी ओर को देखकर कहा, कि—ओः! ये कैसा गजब होगया, सहस्रों राजपूत नङ्गी तलवारें हाथोंमें लियेहुए पठानोंके ऊपर टूट पड़े हैं।

यह देख पहिले तो अलाउद्दीन भौचक्कासा होकर रहगया, मामला क्या है, इस बातको वह समझ ही नहीं सका, परन्तु तत्काल ही उसके मनमें एक भयानक सन्देहकी छाया आपड़ी। अलाउद्दीन उछल पड़ा, खेमेमेंसे बाहरको निकलरहा था, इतनेमें ही सेनापतिने आकर कहा, कि—जहांपनाह! बड़ी खराबी होगयी, बड़ा धोखा दिया गया है! उन डोलियोंमें एक भी स्त्री नहीं है, वह सब ही राजपूत योधा हैं, वह पठानोंकी फौजको मारते काटते चित्तौरको लौटे जारहे हैं, कहिये क्या हुकुम है?

अलाउद्दीन इतना सुनते ही आपेसे बाहर होगया, उसका मुख बड़ा भयानक मालूम होनेलगा, नाकके नथौड़ फड़कनेलगे, बड़े जोरसे दोनों हाथोंसे मूँछोंको चढ़ाते हुए बादशाहने कहा—काफिरों! इतना धोखा! आज तुम्हें जड़मूलसे नेस्त नाबूद करदूँगा। इसके बाद अलाउद्दीनने अपनी सब फौजको भागते हुए राजपूतोंका पीछा करनेके लिये हुकुम दिया। उसी समय बड़ाभारी कोलाहल और हथियारोंकी झनझनाहटसे आकाश गूँजगया। जो रुधिरकी प्यासी रणराक्षसी अब तक सुयोग न मिलनेके कारण पड़ी२ सोरही थी, वह आज जागकर मानों रुधिरकी प्याससे मतवाली होउठी। राजपूत और पठान दोनों प्राणोंकी बाजी लगाकर, सर्वस्वका दाँव लगाकर एक दूसरेके ऊपर टूटपड़े। दोनों ओरका इकट्ठा होता हुआ क्रोध और दबीहुई घृणा आज मानो शस्त्ररूप मुखसे आग उगलनेलगी। मृत्युकेसा भय देतेहुए बरछे और तलवारें इधर उधर बिजलीकी समान झमकनेलगे।

चतुर्थ परिच्छेद

दादलको लिये हुए गोरा बड़ी विपत्तिमें पड़गये। बड़े भारी पराक्रम से पठानोंकी सेनाको छिन्न भिन्न करके प्रायः सब ही राजपूत किले

के पास आपहुँचे हैं, परन्तु बादलका अभी तक कुछ पता नहीं है। बादल एक साथ भारी विपत्तिमें फँस गये हैं, उनकी तलवार बिजली की समान घूम रही है, उनका बरछा वज्रकी समान पठान योधाओंकी छातियोंमें घुसकर पार होरहा है। उनकी यह मारा वह मारा की ध्वनि प्रलयककल्लोलकी समान रणभूमिको कम्पायमान कररही है।

यह एक अपूर्व तमाशा था! पाण्डवोंके सेनापति बालक अभिमन्यु ने एक दिन सात रथियों (सेनापतियों) को व्याकुल कर डाला था, आजभी मानो अभिमन्यु ही बादलका रूप धरकर आगया है। चित्तौर के सेनापति तेरह वर्षकी अवस्थावाले बादलने भी आज पठानोंकी सेनाको एक साथ मथडाला। पठान अचम्भेमें होकर हैरान होरहे हैं, यह देखकर राजपूत आनन्दमें भरेहुए जयध्वनि करनेलगे।

जहाँ बादल युद्ध कर रहेथे, गोराने उधरको दृष्टि डालकर देखा, कि—अब तहाँ राजपूत बहुत थोड़े हैं, गोराने मनमें कहा, कि—यह तो बड़ी भूल होगयी! । दूरसे असंख्यों पठान अल्ला हो अकबर का कोलाहल: करतेहुए उधरको दौड़े चले आरहे थे, गोराने विचारा कि—यह अवसर तो अन्तिम चेष्टा का है, यदि अबकी बार बादलकी रक्षा न होसकी तो फिर कुछ आशा नहीं है। इस समय भी कितने ही पठान बादलको घेरे हुए हैं, परन्तु वह बहुत अधिक नहीं हैं, उनको अनायासमें ही मार डालना सम्भव है, परन्तु नयी सेनाके आपहुँचने परकुछ वश न चलसकेगा। इतना विचारकर गोरा एकही क्षणमें नङ्गी तलवार हाथमें लियेहुए बादलके पास आकर खड़े होगये। उस समय पठान इन दोनोंके ऊपर टूटपड़े। गोराके प्रतापको देखकर भी पठान चौंकपड़े, क्या यह दूसरा बादल आगया! ओहो! यह तो शस्त्र चलानेमें बड़ा ही गजब करता है! यह तो अपूर्व हाथ चलाता है! यह बालक और बुड्ढा कौन हैं? पठानोंने अनेकों लड़ाइयें लड़ीं, परन्तु ऐसी अपूर्व वीरता उन्होंने कभी नहीं देखी थी। बालक और बुड्ढेकी भुजाओंमें भी इतना बल होसकता है, यह बात आज उन्होंने नयी ही देखी है, वह विचारनेलगे, कि—हम इनके सामनेसे हट जायँ या खड़े रहें?

गोराने कहा-बादल लौटो! लौटो!! हमारा काम सिद्ध होगया, अब युद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। वह देखो! बड़ीभारी आँधी की समान पठानोंकी नयी सेना आरही है, वह अभी ज्वारभाटे की समान हमको समेटकर लेजायगी। उसके पहुँचनेसे पहिले ही घोड़े का मुख फेर दो। परन्तु बादलने इस बातको अनसुनी करदिया।

उस समय रणमदिराने बादलके मगजमें आग बाल दी थी, बादल को उस समय युद्ध ही युद्ध सूझता था, गोराने हाथ से नाचकर इशारा किया, प्रार्थना करी, समझाया, हाथ पकड़ कर खेंचा, परंतु बादल तो बहरा होरहा था, यह दशा देखकर गाराने समझा, कि—बादल बड़ी भूल करता है।

देखते २ पठानोंने आकर दोनोंको घेर लिया। बड़ीभारी जलकी धाराकी समान उनका वेग बादल और गोराको बहुत दूर तक ढकेल कर लेगया, बादल एक साथ गिरते २ रुक गये। गोरा अपने इष्टदेव का ध्यान करते२ बादलको अपनी आड़में करके दृढ़ताके साथ सामने खड़े होगये। अबतक गोरा केवल बादलकी रक्षा करनेके लिये शस्त्र चला रहे थे, परन्तु अबकी बार अपने ऊपर पूरा दबाव पड़ता देखकर उन्होंने असली युद्ध करना आरम्भ करदिया, अब केवल अपनी रक्षा ही नहीं करते हैं, अब तो गोराने शत्रुओंका दलन करना ही अपना प्रधान काम समझा है। मृत्यु को तो कोई टाल ही नहीं सकता, ऐसी बड़ीभारी यवनसेनासे क्या प्राण बचेंगे ? इसलिये जहाँतक शत्रु मारे जासकें उसमें कमी क्यों कीजाय ?। ऐसा निश्चय करके गोरा हाथमें तलवार लिये हुए उस महासागरकी समान पठानसेनाके ऊपर कूदपड़े। उनकी विशाल भुजाओंकी झपटसे अनेको पठान भूमिमें लोटने लगे।

इसके बाद गोराने जो युद्ध किया, वह आज भी इतिहासकी पुस्तकों में सोनेके अक्षरोंसे लिखाहुआ है। उन दोनों भुजाओं की फुरती से सकल पठानसेना एकसाथ घबड़ा उठी। गोराकी तलवारके मुख मेंसे जो आग बरसने लगी, उसके भयने पठानोंको बड़ा ही व्याकुल करडाला। सैकड़ों सहस्रों पठान उसकी तलवार की परिधि(दायरे) को छोड़कर दूरको हटगये, बादल पास ही खड़ा २ तमाशा देखता रहा। गोरा ऐसे बड़े योधा हैं बादलको इस बातका पता कभी भी नहीं लगा था, । गर्व, आत्मगौरव और उत्साहका प्रकाश वीर गोराके श्रान्त मुखपर फूट निकला। बादल ताली बजाकर कह उठा वाह वाह! दादाजी वाह वाह ! मारो, काटो, यवनों का बीजनाश करदो। गोरा के हृदयमें और उत्साह बढगया। उनकी तलवार दूने उत्साहसे घूमने लगी। गोराका ऐसा दिन उमरभरमें और कमी नहीं हुआ था इस महायात्राके मार्गमें उनसे आदर पानेवाला बादल, उनके नेत्रोंकी पुतली बादल, उनका चिरकालसे पाला पोसा हुआ बादल उनके पास ही खड़ाहुआ आज उनको वाहवाही देरहा है। हे संसारके बन्धनसे

मुक्त महामार्गके यात्री! तेरे लिये इससे अधिक और कौनसा पदार्थ है? उस घोर हत्याकाण्डके भीतर भी गोराके नेत्रोंमें एकसाथ प्रेम और आनन्दका जल आने लगा, उनका हृदय भरआया।

उसी समय गोराका घोड़ा घायल होकर गिरपड़ा परन्तु गोरा क्षणभरमें सम्हलगये, भूमिपर घूम २ कर पहिलेकी समान आग बरसाने लगे, बादल तत्काल अपने घोड़े परसे उतर पड़ा और गोरा से उसके ऊपर बैठनेको कहा, परन्तु गोराने इस बातको किसी प्रकार भी स्वीकार नहीं किया। गोराने कहा, बादल! भइयां! यदि हो सके इसवार अपनी रक्षा कर, मेरा समय तो पूरा होचुका, नेत्रों की शक्ति नष्ट होरही है, अब मुझमें खड़े होनेकी भी शक्ति नहीं रही। बादल आगेको बढ़कर गोराको आड़में ले खड़े होगये और फिर अपनी तलवार चलाने लगे। गोराको गिरते देखकर पठान जय जयकी ध्वनि करनेलगे, पीछेसे मुसलमानोंके सेनापति काफूर ने पुकार कर कहा, कि-मारो! मारो!! काफिरको मारो!!! लड़ाई फतह है, अबकी वार इस लड़के को जीता मत छोड़ो। परन्तु लड़केको मारडालना सहज नहीं था। जितनी देर गोराने युद्ध किया था, बादल उतनी देरतक उनकी आड़में खड़ा होकर तमाशा देखता रहा था, उसके थकेहुए शरीरने उतने समय अच्छा आराम पालिया था। अबकी वार फिर बादलने पूरे ज़ोर से पठानोंके ऊपर हमला किया, पठान घबड़ा गये! परन्तु कितनी देरको? असंख्यों पठानसेनाके प्रतापसे धीरे २ बादलका पराक्रम दबने लगा, बादलका घोड़ाभी मारागया, तब बादल भूमि में ही खड़ा होकर तलवार को घुमानेलगा। उसका शरीर अत्यन्त घायल होगया है, गालों परसे पसीना टपक रहा है। सेनाके ऊपर सेनाको काट २ कर गिराने लगा, परन्तु उसका अन्त कहां था? बादलने देखा, कि—जिन्होंने उसके ऊपर हमला किया था, उनमेंसे बहुतसा भाग गोराके हाथसे मारागया है, परन्तु दूरसे और भी एक पठानोंका सेनादल कोलाहल करता हुआ झपटा चला आरहा है। बादल ने विचारा, कि-बस अबकी वार बचना कठिन है, अबकी वार मेरी पारी आगयी। इस समय दिनका उजाला छिपगया है, आकाशमें असंख्यों तारे निकल आये हैं, उन तारोंके प्रकाशमें वह रणभूमिका जङ्गल स्वप्नका चित्रसा प्रतीत होरहा है। बादल अपने मनमें कहनेलगा, कि—फिर बुराई ही क्या है? इस रुधिरसे रँगेहुए प्रान्तमें, इस असंख्यों हीरोंसे जड़े असीम नील शामियानेके नीचे, जीवनके एकमात्र अवलम्बन गोराके समीपमें देशकी रक्षा करते २ यदि मरता भी हूँ

तो अहोभाग्य है। बादल अन्तसमयके लिये तयार होने लगा, परन्तु, उसी मुहूर्त्तमें एक अद्भुत जय शब्दसे चारों दिशायें काँपउठीं। कुछ दीखा नहीं, कुछ समझमें नहीं आया, न जानें कहांसे अचानक एक जलकी धारा की समान सेनाकी टुकड़ीने आकर चणभरमें उन युद्ध के मतवाले सब पठानोंको नजाने कहाँ तहस नहस कर दिया। बादल यह घटना देखकर चणभरको तो अचम्भे में होगये और विचारने लगे, कि—क्या भीमसिंह चित्तौरमेंसे लौटकर आपहुँचे? परन्तु दूसरे ही चणमें बादल एक घुड़सवारको अपने पासमें देखकर चौंकउठे। उस तारागणके चीणप्रकाश में उनका उज्वल मुख बादलको धोखा नहीं देसका। बादलने पहिचान लिया, कि-यह अरुणसिंह हैं और कोई नहीं है। बादल एकसाथ कहउठे-अरुणसिंह अरुण! अरुण! इतना कहकर बादलने उसी समय अरुणसिंहकी कौलिया भरकर हृदय से लगाना चाहा, परन्तु अरुणसिंह घोड़े पर से नहीं उतरे और कहनेलगे, कि— बादल! मुझे छूना मत! मैं तो नराधम हूँ! प्रायश्चित्त करनेको आया हूँ, अब भी बहुतसी पठानोंकी सेना उधर इकट्ठी है, पहिले उनका बीजनाश कर आऊँ तब फिर दर्शनमेला होगा। इतना कहकर अरुणसिंह घोड़ेको भगायेहुए चले गये। बादलने पीछेसे पुकार कर कहा—यहाँ ही! अरुणसिंह! इस स्थानको याद रखना, मैं यहाँ ही तुम्हारी बाट देखूंगा, यदि तुम लौटकर नहीं आये तो मैं भी लौटकर नहीं जाऊँगा, इस बातको याद रखना। अन्धकार में दूरसे "अच्छा" शब्द सुनायी दिया, तब बादल लौटकर गोराके पास पहुँचे।

गोराको खोजने पर बादल आश्चर्यमें होगये, कैसा अपूर्व तमाशा है। बादलने देखा, कि—गोरा अब नहीं हैं गोराका प्राणपखेरू उड़ गया है, परन्तु गोराका शरीर जिस अपूर्व शय्या पर विश्राम लेरहा हैं, वह देवताओं को भी दुर्लभ है।

गोरा रुधिरसे रँगी कोमल दूर्वादलकी शय्या पर सो रहे हैं। कितने ही मृतशरीरोंके तकिये लग रहे हैं, गोराने एकको अपने शिरके नीचे लगालिया है, दो को पैरों के तले डाललिया है दोनों हाथोंसे जितने भी होसके उनको खेंचकर बायें और दायें मृतशरीरोंके ढेर लगालिये हैं। बादल ढाल तलवारको डालकर कितनी ही देरतक उस शवराशिके पास ही अचम्भे में होकर बैठगया, फिर अपने आपभी कितने ही मृतशरीरोंको लाकर गोराके पासकी भूमिको सजाने लगा

और डेढ़ पहर रात बीतजाने पर अरुणसिंह लौटकर आये। बादल ने कहा—देखो अरुण ! कैसी अपूर्व शय्या है ? मेरे दादाजी इस शय्या पर आज चिरकालके लिये सोरहे हैं, क्या स्वर्ग इससे भी अधिक सुन्दर है ? ।

अरुणसिंहके नेत्रोंमें जल आगया, उन्होंने कहा, कि—बादल ! मेरे भाग्यमें यह शय्या नहीं है ? बादल ! न जाने मैंने क्या अपराध किया है जो मैं ऐसे समय में भी एक साधारण सिपाहीकी समान भी चित्तौर के लिये युद्ध नहीं करने पाया। हृदय में दुःखित होतेहुए बादलने अरुणसिंहकी ओरको देखा। अरुणसिंह फिर कहने लगे, कि—बादल ! मैंने इस समय पठान नाम मात्रको भी नहीं छोड़े हैं अलाउद्दीनको भी दूर भगा आया हूँ, परन्तु इतने पर भी मेरे चित्तको चैन नहीं है। इस युद्धमें मुझे किसीने भी नहीं बुलवाया ! मैं मरनेको गया था, परन्तु मृत्यु भी मुझे देखकर भाग गई; अब अपना जीवन मुझे भार मालूम होता है भाई ! तू ही बता, अब क्या करना चाहिये, जिससे मेरे अपराधका प्रायश्चित्त हो ? ।

बादलने कहा—अरुणसिंह ! ऐसे दुःखी क्यों होते हो, चलो मेरे साथ, चलो मैं आज महाराणाजी से कहूँगा, आज तुम्हारी वीरता से चित्तौर निष्कण्टक हुई है, इसलिये निःसन्देह महाराणा तुम्हारे अपराधको क्षमा करदेंगे, फिर चित्तौर तुम्हें अपनी गोदीमें स्थान देगी। अरुणसिंह ने मस्तक नमाये हुए कहा, कि—बादल ! तुम्हारी आशा दुराशा है। चित्तौर में अब मेरे लिये स्थान नहीं है, चित्तौर में घुसनेकी आशाको मैंने बहुत दिनोंसे छोड़ दिया है। मुझे केवल चित्तौर के दुःखमें ही भागी होनेकी लालसा है। सुख के दिन चाहे याद न करना, परन्तु दुःखके दिन मुझे अवश्य याद करलेना, इतने से ही मैं कृतार्थ होजाऊँगा।

यह सुनकर बादल आश्चर्य में होगया और अरुणसिंहके मुखकी ओरको देखता हुआ विचारने लगा, कि—इस बातका क्या अभिप्राय है ? अरुणसिंह ने शिर जरा ऊपरको उठाया और बादलके नेत्रोंकी ओरको देखता हुआ मुसकुराकर कहने लगा, कि—बादल ! क्या तू मेरी बातको समझा नहीं? समझता ही कैसे ! यह तो बात ही बिलकुल नयी है ! देख उधर कितने भील खड़े हैं ! बादल देखकर अचम्भेमें होगया। यह सब भील कौन हैं यह तो अरुणसिंहके लिये सहज में ही समरमें प्राण देनेको आगये ! नदीकी धारकी समान उनका वह निर्भयताके साथ पठानोंके ऊपर टूट पड़ना, इस समय बादलकी

आंखोंके सामने दीख रहा था, बादलने पूछा—अरुणसिंह ! तुमने इनको कहांसे पाया ? । अरुणसिंहने कहा, कि—बादल ! चित्तौरके सिंहासनके बदलेमें मैंने इनके हृदयसिंहासन पर स्थान पाया है, यह सिंहासन भी वैसा ही उज्वल और वैसा ही प्रतिष्ठित है ! एक भील-कुमारीने मेरे लिये इस आधे सिंहासनको अर्पण करदिया है । इसके बदले में मैंने उसको अपना आधा हृदय सिंहासन देदिया है । आज कल मैं भीलोंका राजा हूँ ।

बादल अपने मनमें कहनेलगा, कि-क्या यह सुपना है? अथवा सत्य ही अरुणसिंहने ऐसा काम किया है ? महाराणाका सबसे बड़ा पुत्र आज असभ्य भीलरमणीके प्रेम पर मोहित होगया है ! बादल अब क्या उत्तर दें, सो उनको कुछ न सूझा, अरुणसिंह बादलकी दशा को समझ गये और कहनेलगे, कि—बादल ! भय न करो, वह रमणी सर्वथा भील नहीं है, भीलोंके साथ रहनेसे आज वह भी भील कह-लाने लगी है, परन्तु उसके शरीरकी रगोंमें अतिपवित्र राजपूतका रुधिर बहरहा है । उसका पिता चन्दानवंशी है, अहेरियाके दिनकी उस बातको याद करो, उस अपूर्व भीलबालिकाका कुछ ध्यान है ? । बादलने कहा—हां ! है, वह जो बड़ी सुन्दरी थी, उसकी ही बात कह रहे हो क्या ?

अरुणसिंहने कहा—हां उसकी ही बात कहरहा हूँ, वह भीलोंके सरदारकी एकमात्र कन्या है, वह आज मुझे आश्रय देनेवाली और मेरे सुख दुःखकी-जीवन मरणकी सङ्गिनी है । बादलने कहा-और तुम्हारी विवाहिता स्त्री? । अरुणसिंहने कहा-यह उससे भी अधिक है, मेरे जीवनकी ध्रुवतारा,नयनोंका आनन्द,अस्त्रशिक्षाकी गुरु,इस काल और परकालकी साथिनी है, उसका मेरा सम्बन्ध कभी विच्छिन्न नहीं होगा। किशोर अवस्थाके बादलमें इस बातका रहस्य समझने की शक्ति नहीं थी, वह आंखें फाड़कर कहनेलगा, कि—अरुण ! क्या तुम जो कुछ कह रहे हो, यह सत्य है ? तब तो चित्तौरमें तुम्हारे लिये स्थान नहीं है, तुम चित्तौरसे बहुत दूर चले गये हो,यह तो तुमने सर्व-नाश करलिया ? ।

पञ्चम—परिच्छेद

पठानके हाथसे चित्तौरकी रक्षा तो अवश्य होगयी, परन्तु गोरा और अरुणसिंहके दुःखसे चित्तौरी इसका आनन्द नहीं मना सके । गोरा इतने बड़े योधा हैं इस बातका पता चित्तौरवालोंको कभी नहीं

लगा था, स्वर्गका देवता गुप्तवेशसे उनके यहां आकर उस छद्मवेश में ही उनकी आंखोंके सामनेसे चलागया। उनकी जो पूजा करनी चाहिये थी उस पूजाकी सामग्री चित्तौरी उनके पास कैसे पहुँचावें?

और अरुणसिंह? हाय राजमहलके एकान्त कमरेमें पुत्रप्रेमसे कातर दो नयनोंने उस मुखको याद करके कितने आंसू बहाये, उस को कौन समझेगा? महाराणाके दोनों नेत्रोंसे उन दोनों नेत्रोंने चुप चाप बार २ कातरभावसे निवेदन किया, परन्तु महाराणाका मन किसी प्रकार भी कुछ शिथिल नहीं हुआ, कर्त्तव्यपालनसे वह जरा भी चलायमान नहीं हुए।

विपत्तिमें पड़ीहुई गोराकी विधवा पत्नीने पतिकी मृत्युका सम्वाद सुनते ही बादलको बुलवाकर कहा, कि-बेटा! एक बार अपने दादा की वीरताकी कहानी तो सुना?, मैं उनकी वीरताभरी कीर्त्तिकहानी को सुनकर हँसते २ उनकी अनुगामिनी होऊँगी। बादल! बताओ तो तुम्हारे दादाने किसप्रकार युद्ध किया था? बादलने सब कहानी सुनायी, गोराने जिसप्रकार पठानोंकी सेनाका विध्वंस किया था, अकेले ही सैंकड़ों शत्रुओंके साथ जैसे लड़े थे, अन्तसमयमें भी जैसे शत्रुकी लाशोंकी ही सेज बना कर सोये थे। बादलने वह सब कहानी बड़ी आवेश भरी भाषामें सुनायी, गोराकी स्त्रीके नेत्रोंमेंसे आंसू निकलने लगे वह आंसू शोकके नहीं थे, आनन्दके थे। उस कहानीको एक बार सुननेसे गोराकी स्त्रीका चित्त नहीं भरा, उसने फिर उस कहानीको सुनना चाहा, बादलने फिर कहकर सुनादिया। गोराकी स्त्रीने फिर भी एक बार सुननेके लिये कहा, तब बादलने फिर एक बार सुनादिया।

फिर वह विधवा हँसती २ चित्तौरेश्वरीके मंदिरकी ओरको चली गयी, गोराका मृतदेह संस्कारके लिये तहां ही मंगा लिया गया, चिता चिनकर तयार होगयी। चित्तौरके सब नर नारी पुष्पमालायें लेकर तहां इकट्ठे होगये, उसके शरीरमें चन्दन और केसर लिप्त कर दिया। तब सती हँसती २ चितापर चढ़कर पतिके पास सोरही पुरोहितने अग्नि लगादी। अनेकों प्रकारके बाजोंके शब्द, जय जयकारकी ध्वनि और धुएंके मध्यमें सबकी दृष्टिको बचाकर सतीका आत्मा स्वर्गलोक को चलागया।

—०—

पञ्चम-खण्ड

प्रथम-परिच्छेद

दिल्लीके उस पार यमुनाके किनारे पर तंबूके भीतर तुर्कीखां और करणराय दोनों बैठेहुए आपसमें बातें करग्हे थे। एक दुभाषिया बीचमें बैठकर दोनोंकी बातें दोनोंको समझा रहा था।

तुर्कीखांने कहा-खबर मिलगयी, अलाउद्दीन लौटा हुआ आरहा है, अब क्या करना चाहिये ?। करणरायने उत्तर दिया, कि—शीघ्र ही दिल्लीके ऊपर अधिकार कर लेना चाहिये। अलाउद्दीनके आपहुंचने पर किलेको काबूमें करना बड़ा कठिन होजायगा। तुर्कीखांने कहा, कि-हम किलेकी दशाको अभीतक कुछ भी नहीं जानपाये हैं। पहिले यह मालूम होना चाहिये, कि—जाफर खांके पास कितनी फौज है ? करणरायने कहा—इसके लिये कुछ चिन्ता नहीं है, मैंने आदमी नियत कर दिया है, वह अभी समाचार लेकर आवेगा, मेरे साथ केवल पचास मुगल सिपाही भेजनेकी आज्ञा दीजिये।

तुर्कीखांने कहा 'आप कहां, जाना चाहते हैं ? करणरायने उत्तर दिया, कि-बादशाहके महलमें। पहिले कमलाको हाथमें लूंगा, पीछे दूसरा काम होगा। तुर्कीखांने कहा, कि—पहिले आप अपना काम सिद्ध करना चाहते हैं ? क्या पहिले किले पर दखल करनेसे काम नहीं बनेगा ?। करणराय बोले, कि-आप भूलमें हैं, कमलाको हाथमें बिना लिये किला कैसे हाथमें आवेगा ? कमलाको सब सच्चा हाल मालूम है। तुर्कीखांने कहा कि-कमला आते ही तुम्हें सब समाचार बता देगी, इसका क्या निश्चय है ?। इस पर करणरायने नीचेको मुख करके कहा, कि—मुगलसेनापति ! इसका उत्तरदाता मैं हूं। इस पर तुर्कीखांने फिर कुछ नहीं कहा—उसी समय पचास मुगल सिपाहियोंको बुलाकर करणरायके साथ जानेकी आज्ञा देदी।

घोर रात्रिका समय होजानेपर कमला बेगम के घरके पास दो आदमी चुपचाप आकर खड़े हुए, उनमें एक स्त्री थी और दूसरा पुरुष था। पुरुषने पूछा, कि—क्या बेगमका महल यही है?। स्त्रीने उत्तर दिया, कि-हाँ। पुरुषने कहा—महलमें कौन है?। स्त्रीने कहा-और कोई नहीं है, अकेली बेगम ही है। पुरुषने कहा—बस तो काम बन गया, तू जासकती है, दरवाजे पर इस अँगूठी को दिखाना, सिपाही तुझे उस पार लेजायगा और कोई बाँदी तो यहाँ नहीं है?। स्त्री ने

कहा—नहीं बेगमकी खास बाँदी तो एक मैं ही कहलाती हूँ, परन्तु यहाँ सदर दरवाजे पर पहरेदार जाग रही है, परन्तु वह हमारी दृष्टिमे बची हुई हैं। पुरुषने कहा, तो अच्छा लो यह ईनाम है और जल्दीसे भागजाओ। इतना कहकर एक हार खोल कर स्त्रीको देदिया। वह शीघ्रतासे एक गुप्तमार्गमें को चलीगयी।

वह पुरुष करणराय थे!, बांदीके चलीजाने पर करणराय चुपचाप परदा हटाकर भीतर घुस चले गये, परन्तु एकसाथ काठकी पुतली की समान चौंक कर खड़े होगये, यह तो कमला नहीं है, मतिया है, यह क्या मामला है? करणरायकी समझमें कुछ नहीं आया। कुछ देर उसी प्रकार खड़े रहकर आखिरी परदेको हटाया और भीतर घुसे उनको देखते ही मतिया भी गिगियाकर किल्ली मार उठी।

करणरायने कहा—चुपकी पड़ी रह हरामजादी! मुझे पहिचानती नहीं है? तेरी बेगम कहाँ है?। मतियाने कहा—आप यहाँ कैसे घुस आये, जल्दी भाग जाइये नहीं तो अभी बड़ीभारी आफतमें पड़जाओगे। करणरायने कहा—मैं भागनेके लिये नहीं आया हूँ, विश्वासघातीको दण्ड देनेके लिये आया हूँ। हरामजादी! क्या यही तेरी प्रभुभक्ति है?। मतियाने कहा-आप भूल कर रहे हैं, मैंने आपका उपकार ही किया है, अब आप यहाँ रुकेंगे तो दोनों पर आफत आजायगी, आप शीघ्र ही अपनेको बचाइये।

करणरायने कहा—मैं कमलासे मिले बिना किसीप्रकार भी नहीं जाऊँगा, न जाने कितनी तरकीबें करने पर आज मिलनेको आसका हूँ। आज एक बार अवश्य ही निगाहसे निगाह मिलाकर अपना बोझा हलका करूँगा। मतियाने कहा—महाराज! आप किसकी निगाहसे निगाह मिलावेंगे? सुनिये एक अपूर्व रहस्यकी बात है, यहाँ कमला देवी कोई नहीं है, मैं ही बादशाहकी बेगम हूँ। पहिले गुजरातकी बाँदी थी, गुजरातकी रानीको अलाउद्दीनकी लोभभरी दृष्टिसे बचानेके लिये आज दिल्लीकी बेगम बनी हुई हूँ! मैंने महारानी कमलाके नामसे धोखा दिया है। यह सुनकर करणराय सुन्न होगये, यह क्या बात है? क्या ऐसा होना सम्भव है? यदि छतको फोड़ कर अचानक एक वज्र उस समय वहाँ आपड़ता तो भी करणराय कदाचित् इतने विस्मित नहीं होते। रोंगटे खड़े होकर विस्मय और उत्कण्ठासे करणरायके प्राण होठों पर आगये, उन्होंने कहा-मतिया! तेरी यह बात विश्वास करने योग्य नहीं है! क्या वास्तवमें ऐसा ही है? क्या सत्य ही कमला देवी निर्दोष है?।

मतियाने अंगुली उठाकर ऊपरको दिखाते हुए कहा-सच मानिये कमला देवी इस समय वहाँ हैं, वह अब इस पृथिवी पर नहीं हैं, बादशाहने उनको बलात्कारसे कैद करना चाहा था, यदि उस समय बादशाहको कमला नामकी कोई स्त्री नहीं मिल जाती तो बादशाह अवश्य ही महारानीको कैद करके लेआते। मैंने उनको इस विपत्ति से बचा लिया, मैंने ही कमला बनकर महारानीके अदृष्टको अपने माथे पर लेलिया, जिसके इनाममें मुझे यह दिल्लीका रङ्गमहल मिला है। इतना कहकर मतिया जरा हँसी, करणरायकी दृष्टि मतियाके हँसने पर न पड़ी। उस समय उनके मुख पर एक मङ्गल और प्रसन्नताके प्रकाश की रेखा झलकने लगी, करणरायने एक गहरा साँस भरा और कहने लगे, कि—मतिया! मैंने तेरे ऊपर अन्याय किया है, मुझे क्षमा कर। तेरे इस ऋणको मैं इस जन्ममें नहीं चुका सकता, जगत्‌में तुझमें सच्ची मनुष्यता है! आज मैं किसप्रकार से तेरे सामने कृतज्ञता दिखाऊँ? तेरह वर्षसे तपी हुई मरुभूमि आज शीतल होगयी। इसके बाद कुछ देर चुप रहे और फिर कहनेलगे, कि-हाँ! देवला! कहां है? क्या ऐसा होनेपर देवलाने भी आत्महत्या करली थी?।

मतियाने कहा—नहीं महाराज! देवलाने आत्महत्या नहीं की थी, देवला अभी जीती है। वह देवगिरिके रामदेवजीके पुत्रकी संरक्षामें अभी आनन्दसे रहती है। बादशाहके चुङ्गलसे उनकी रक्षा करनेके लिये मैंने यहां एक और भी स्त्रीके बनानेका जाल रचा है, बादशाह को और एक धोखेमें रक्खा है। करणरायने कहा—अच्छा मतिया! तो ले मैं जाता हूँ, नासमझीमें तेरी हत्या करने आया था, ईश्वरने मुझे उस दुष्कर्म से बचा दिया, अब मुझे कुछ दुःख नहीं है। इतना कहकर करणराय शीघ्रतासे बाहर निकल आये, मतिया चुप होरही।

महल से बाहर जाकर करणरायने देखा कि—थोड़ी ही दूरपर एक बड़ी डाढ़ी वाला लम्बतड़ङ्गा मनुष्य मार्गको रोके खड़ा है। इन को देखकर उस मनुष्यने कहा—तू कौन है?। करणरायने कहा-तू कौन है? मैं गुजरातका राजा करणराय हूँ! अलाउद्दीनसे एक बात कहने आया था, न मिलने पर मन में दुःखित होता हुआ लौट रहा हूँ, फिर किसी दिन आऊँगा।

उस मनुष्य ने कहा—फिर आना नहीं मिलेगा, आज तेरा अन्त का दिन है, बादशाह लौटकर आगये हैं, यहां ही तेरी गरदन काटली जायगी। इतना कहकर उस मनुष्यने सीटी बजायी, देखते २ भयानक आकारके चार खोजे आये और करणरायको घेर कर खड़े होगये

करणरायने कहा-इतना प्रबन्ध करनेकी क्या आवश्यकता थी? मैं तो अपनी इच्छा से आत्मसमर्पण करने को तयार हूँ। बस एक बार अलाउद्दीन से मिलना चाहता था, उन से एक जरूरी बात कहनी थी। उस मनुष्य ने कहा—इस खास महल में चल, तू जो कुछ कहेगा उसको सुनूंगा मैं ही दिल्लीका बादशाह अलाउद्दीन हूँ तेरे मनकी बात पूरी होगी। खासमहल में पहुँचकर अलाउद्दीनने कहा—अब तुझे जो कुछ कहना हो कह ले, बस एक घड़ीका समय देता हूं, मैं ज्यादा समय खराब नहीं करना चाहता, तेरा कत्ल करके फिर मुझे यहांसे मुगलोंको भगाना है। किस साहससे तू मेरे जनाने महलमें घुस कर आया है? और तुझको रास्ता बताकर यहां लिवा कर कौन लाया है? करणरायने इन सब प्रश्नोंका कुछ उत्तर न देकर बड़े विकट रूपसे हंसते हुए कहा—अलाउद्दीन पठान! आज तेरी पराजय होगयी! तू समझता है, कि-मैंने कमला रानीको बेगम बना लिया है? अरे उन्मत्त! तू तो उसकी परछांहीको भी नहीं छूसका, मेरी बांदी मतियाके पैरोंमें ही तेरा शिर लोटा करता है। आज दिल्ली का बादशाह और गुजरातकी बांदी एक बराबर हैं। इतना कहकर करणरायने बिजलीकी समान फुरतीके साथ अपने वस्त्रमेंसे छुरी निकाल ली और देखते २ जोरसे अपनी छातीमें भोंकली।

विस्मित और सुन्न हुए अलाउद्दीनने देखा, कि-उसकी बदला लेनेकी सब अभिलाषाको मट्टीमें मिलाकर करणराय पलक मारने भरके समयमें इस लोकसे सदाके लिये चला गया।

दूसरे दिन प्रातःकाल तुर्कीखांने समाचार पाया, कि-अलाउद्दीन दिल्लीमें आपहुँचा है और करणरायने पकड़े जाने पर आत्महत्या करली है। तुर्कीखां घबड़ागया। करणरायकी संमतिसे, करणरायके उकसाने पर ही वह एक साथ इस अनजान अपरिचित देशमें हज़ारों मुगलसेनाको लेकर चला आया था। उसही करणरायके न रहने पर वह अब बादशाहके साथ लड़ाईमें कैसे पार पासकेगा? इसके सिवाय यदि शोचनीय दशा नहीं होती तो करणराय ही आत्महत्या क्यों करते? उनके साथमें सिपाही तो बहुतेरे थे, उनका काम नहीं बना था तो न सही, वह अपनी रक्षाके लिये चेष्टा तो कर सकते थे, परन्तु उन्होंने फिर भी अपनी रक्षा नहीं की। मुगलसेनापतिने विचारा, कि-निःसन्देह यहां हमको अपनी रक्षा करना कठिन होगा अलाउद्दीन किलेमें बैठकर अपनी रक्षा कर सकेगा और मेरे पास तो न यहां रहनेको स्थान ही है तथा न बहुत ज्यादा फौज ही है, इसलिये

अवसर पाते ही अलाउद्दीन मुझे धक्का देकर निकाल देगा, इस-कारण अब मेरा यहांसे लौट चलना ही ठीक है। ऐसा विचार कर तुर्कीखांने उस ही दिन वहांसे कूँच करनेका हुकुम देदिया। सोकर उठने पर दूसरे दिन दिल्लीवासियोंने बड़े अचरजके साथ देखा, कि—रात्रिके अन्धकारमें अपने तंबुओंको उखाड़कर हजारों मुगल न जाने किधरको चलेगये।

द्वितीय परिच्छेद

मुगल चले गये, राज्य निष्कण्टक होगया, इस बातसे सबने ही आनन्द मनाया,परन्तु अलाउद्दीनको ढूंढने पर भी शान्ति नहीं मिली चित्तौरकी पराजय और पद्मिनीके रूपकी बातको वह किसी प्रकार भी नहीं भूलसका। पद्मिनीके बिना वह बड़ीभारी बादशाहत उसके लिये मानो सूनी प्रतीत होती थी। किसप्रकार पद्मिनी हाथ लगे! किस प्रकार चित्तौरका नाश किया जाय, वह रात दिन केवल इस चिन्ता में ही रहने लगा। एकसाथ बिना विचारे बिना पूरी तयारी किये चित्तौर पर हमला करनेसे काम नहीं बनेगा, इस बातको अला उद्दीन अच्छी तरह समझ गया था, इसलिये ही वह अबकी बार बड़ी भारी तयारीका प्रबन्ध करने लगा। एक वर्ष नहीं दो वर्ष नहीं होते २ बारह वर्ष तक अलाउद्दीन ने बड़ीभारी तयारी की। फिर एक दिन पठानोंकी सेना युद्धका डंका बजा कर चित्तौरकी तरफ को चल पड़ी।

राजपूतोंने देखा, कि-अबकी बार केवल तीन ओरसे ही नहीं चारों ओर से पठानोंने चित्तौरको घेर लिया है। अरावली के सघन वनमें भी अबकी बार पठानों ने घेरा डाल दिया है। अबकी बार बारह वर्षके बाद पठान चित्तौरके साथ आखिरी लड़ाई लड़ने आये हैं, इस बातको चित्तौरी राजपूत अच्छे प्रकार समझ गये, उन्होंने नेत्रोंमें जल भरकर एक बार चित्तौरकी ओरको देखा।

अपने कमरेमें पलँग पर लेटीहुई पद्मिनीने भीमसिंहसे कहा, कि-यह आफत मेरे कारणसे ही आयी है, तुम शत्रुको अपने घरमें क्यों घुसने देते हो? मुझे बादशाहके यहाँ भेजदो, मैं मार्गमें विष खा कर मर जाऊँगी।

भीमसिंहने कहा—पद्मिनी! राजस्थानकी लक्ष्मी! तेरा विसर्जन करके कौनसा राजपूत जीवित रहना चाहेगा?। यदि राजपूत ऐसा करना चाहते तो यह घटना पहिले ही न जाने कबकी होगयी होती!

मुझे दुसराकर याद दिलानी नहीं पड़ती, मैं इस बातको अनेकों बार देख चुका हूँ। यह सुनकर पद्मिनीने आँखें मूँद लीं और विचारने लगी, कि—तो क्या इस जरासे जीवनके लिये सब ही जायगा ? क्या यह सुवर्णकी चित्तौर असमय ही भस्म होजायगी ? विधाताने मुझे ऐसा अभिराम रूप क्यों दिया ? मुझे कुरूपा क्यों नहीं बनाया ? ।

पद्मिनी देवमन्दिरमें जाकर अनेकों प्रार्थनायें करने लगी। बहुत कुछ आँसू बहाकर, विलाप करनेपर उसका हृदय शान्त हुआ। उस समय पद्मिनी उठकर मन्दिरकी पुजारिणीके पास गयी, पुजारिणीने कहा—माताजी ! ऐसी दुःखी क्यों होरही हो ? वह सुनो स्वर्ग की दुंदुभी बजरही है। भगवती हमको याद कररहीं हैं। एक बार इस प्रतिमाकी ओरको देखो ! पद्मिनी टकटकी लगाकर देखने लगी। कैसी महिमामयी आकृति है ? भूचर, खेचर, जलचर उसके चरणों में समा रहे हैं। भूलोक द्युलोक और पाताल उसके रोम कूपोंमें एकसाथ मिलगये हैं। सृष्टि, स्थित और प्रलय उसकी भ्रकुटी में विराजमान हैं। यह संसार क्या है ? ।

पद्मिनी उठकर घरको लौट आयी, सब बाहरी जगत् उस समय उसको अति तुच्छ प्रतीत होने लगा, हृदयकी तय २ में से एक अपूर्व तेज फूट निकला। वीणा की झङ्कारकी समान माताकी पुकार उसके मर्मस्थान में गूँजने लगी।

षष्ठ-खण्ड

प्रथम—परिच्छेद

सन्ध्याका लाल २ वर्ण पश्चिमी आकाशकी कायामें समागया है। प्रदोषकालका अन्धकार चारों दिशाओंको ग्रास करते २ भीलोंके देशमें आकर छिन्न भिन्नसा होने लगा है, आकाशमें टिमटिमाते हुए तारागणोंका कुछ २ प्रकाश होनेलगा है। ऐसे ही समयमें एक छोटे से झरनेके पास बैठे हुए अरुणसिंह चिंतामें मग्न हैं। चित्तौरके किले की चोटी पर प्रतिदिन सन्ध्याके अन्धकारमें असंख्यों बत्तियें,आकाशमें के तारागणोंकी समान जल उठा करती थीं, अरुणसिंह बैठे २ प्रतिदिन उनकी शोभाको देखा करते थे, परन्तु आज एक सप्ताह होगया, एक भी बत्ती नहीं जलती है, यह देखकर अरुणसिंहकी चिन्ता का पारावार नहीं है।

आज दो महीने होगये, पठानोंके साथ चित्तौरका घोर संग्राम होनेका कोलाहल मच रहा है। इन दो महीनेमें एक२ करके चित्तौर के सब वीर समाप्त होगये हैं! अरुणसिंह उस झरनेके किनारे पर बैठेहुए भीलोंसे सब समाचार पारहे हैं, परन्तु अभीतक उनको किसी ने नहीं बुलवाया। अरुणसिंहका हृदय दुःखके बोझसे दबाजारहा है राज्यको छोड़कर वनवासी हुए, इसका अरुणसिंहको कुछ दुःख नहीं था। जिस घरकी कर्त्ता धर्त्ता मुन्ना है उस घरमें स्वयं स्वर्ग है, परन्तु चित्तौर यदि उनको इस विपत्तिके समयमें भी याद करलेती!

अरुणसिंह के नेत्रोंमें छल २ करके अश्रुधारा निकल पड़ी। कई दिनसे अरुणसिंह इसीप्रकार आंसू बहा रहे हैं,परन्तु उनके हृदयको शांति नहीं होती है।

किसीके कोमल करोंके स्पर्शसे अरुणसिंह एकसाथ चौंकपड़े उन्होंने मुख फेर कर देखा तो मुन्ना आकर उनके मुखके पास बैठी हुई हैं स्वामीको देखकर मुन्नाने करुणामें भरकर कहा चलो घर चलो।

अरुणसिंहने कहा—मुन्ना! इसप्रकार समय कबतक कटेगा? अब मुझसे नहीं सहाजाता, इतनी चुप-इतना अनादर-इतना तिरस्कार

मुन्नाने कातरदृष्टिसे उनकी ओरको देखा, उस दृष्टिमें न जाने कितनी कष्टकी रेखा और कितना प्रेम भरा हुआ था,मुन्नाने प्रेमसे हाथ पकड़कर अरुणसिंहको खड़ा किया और कहा-धीरज धरो,अवश्य ही दिन फिरेंगे। इतने क्यों घबड़ाते हो? | अरुणसिंहने अंगुली उठाकर उससे चित्तौरकी ओर देखनेको कहा और कहने लगे कि-देख एक भी बत्ती नहींहै। आज चित्तौरमें अन्धकार है चित्तौर के दिन अब पूरे होलिये! अब चित्तौर मुझे कब याद करेगी! बुलाना होता तो अबतक बुलालेती,अब किस आशा पर धीर धरे बैठारहूँ? मुन्ना कांपउठी,सत्य ही आज चित्तौरका दृश्य भयावना है, एक दीपक भी आज आशा के प्रकाशको नहीं दिखारहा है, मुन्ना स्वामीको साथ लेकर शीघ्रता से घरको चलदी।

दूसरे दिन मुन्नाने अरुणसिंहके साथ संमति करके एक बड़े विकट साहसका काम किया, वह एक भीलोंका सेनादल लेकर रणभूमिमें चित्तौरियोंके साथ मिलगयी। मुन्नाके शरीर पर अरुण-सिंहकी पोशाक थी, राजपूत युद्धकी समाप्ति परजब किलेमेंको घुसते थे, उस समय मुन्नाको उस वेषमें देखकर भी वह यह नहीं जानसके कि—हमारे साथ कोई स्त्री भी है, मुन्ना बेखटक किलेमें घुसी चली

गया। भील लोग रात्रिके अन्धकारमें पठानोंको चीरते हुए वनमें ही आघुसे ।

घोर रात्रिके समय चित्तौरेश्वरीके मन्दिरमें भैरवीके चरणतलमें पड़कर मुन्नाने एक बड़ी अद्भुत प्रार्थना की। भैरवीने कहा कि—मुन्ना! यह तेरी कैसी प्रार्थना है? तू ऐसी प्रार्थना क्यों करती है? मुन्नाने कहा—ऐसी कौनसी बात है जो तुमसे छिपी हो, मुझे क्यों बहकाती हो? मेरे स्वामीके दुःखको दूर करो। भैरवीने कहा—इसमें तो तेरा सर्वनाश होजायगा, तूने कभी परिणामका भी विचार किया है? जरा विचार कर तो देख! मुन्नाने कहा—मैंने सब विचार देखा है। मैं अपने सुखकी अपेक्षा अपने स्वामीके सुखको बढ़कर समझती हूँ, मेरा सर्वनाश होजायगा, इस भयसे मैं अब अपने विचारको बदल नहीं सकती।

भैरवीने प्रसन्न होकर उस समय मुन्नाके शिर पर हाथ फेरा और प्रेमके साथ कहा, कि—तो उठ यह जो त्रिशूल रक्खा है, इसके मुखकी ओरको देख। मुन्नाने मुख उठाकर त्रिशूलकी ओरको देखा, तब भैरवीने पूछा, कि—क्या दीखता है? मुन्ना कुछ उत्तर नहीं दे सकी। उसके नेत्र मुँदनेलगे, मन ढीला पड़गया, इच्छाशक्ति लुप्तसी होगयी। तब भैरवीने कहा-अच्छा अब पीठ फेरकर खड़ी हो। मुन्ना फिर कर खड़ी होगयी तब भैरवीने त्रिशूल उठाकर मन्दिरके फाटक की ओरको इशारा किया, मुन्ना चुपचाप धीरे २ आँखें मूँदे हुए ही मन्दिरके द्वारमेंसे बाहर आगयी। भैरवीने भी बाहर आकर देखा, कि—मुन्ना मार्गमें आकर खड़ी होगयी है, भैरवीने अबकी बार त्रिशूल को और भी ऊँचा करके महाराणाके महलकी ओरको इशारा किया तब मुन्ना उधरको ही चलदी।

घोर रात्रिके समय एक सजे हुए कमरेमें रत्नजड़े सिंहासन पर लेटे हुए महाराणा लक्ष्मणसिंह चित्तौरकी दशाको विचार रहे हैं, पास में एक मौनधारी दीपक जल रहा है, चारों ओर सब सोये हुए हैं, चारों ओर कहीं चूँका शब्दतक नहीं है, अचानक महाराणाकी दशा बदलगयी। यह कैसा चित्त चलगया! महाराणाको मालूम हुआ, कि—मानो शब्दशून्य मनुष्यहीन कमरेका वायु आज मूर्त्ति धारण करके आगया है, मानो दूरसे एक अलौकिक दिव्य वीणाकी झनकार सुनायी देरही है। मानो दीपककी धीमी किरणोंको क्षीण कर देने के लिये चारों ओरसे अन्धकार जथा बांधकर चला आरहा है। महा-

राणा उठकर आंखें मलना चाहने लगे, परन्तु मल नहीं सके सब शरीर मानो सुन्न होगया, दरवाजेके सामने खुले मैदानमें मानो एक अन्धकारका विशाल परदा पड़ा हुआ है, परन्तु उस परदेके ऊपर वह क्या है ? ।

महाराणा काँप उठे । ओहो ! यह तो अलौकिक प्रकाशमयी उज्वल देवीकी मूर्त्ति है । महाराणानें किसीप्रकार शिर ऊपरको करके डरतेर कहा कि—तू कौन है ? मनुष्य या देवता ? शीघ्र बता यहाँ तेरा क्या प्रयोजन है? । मूर्त्तिने धीरे २ कहा—मैं भूखी हूँ ।

उस शब्दको सुनकर महाराणाका सब शरीर मानो ठण्डा पड़ने लगा, उन्होंने फिर कहा—ऐसी घोर रात्रिमें भूखी है । मैं समझगया निःसन्देह तू मनुष्य नहीं है, तू अवश्य ही चित्तौरकी राजलक्ष्मी है, रुधिरकी प्याससे कातर हो कर आयी है । बता और कितना रुधिर चाहिये ? प्रतिदिन असंख्यों राजपूतोंके रुधिरकी धारा छोड़ी जाती है, तो भी तेरी प्यास शान्त नहीं होती ?

मूर्त्तिने कहा—मैं भूखी हूँ, साधारण सैनिकोंके रुधिरसे मेरी तृप्ति नहीं होसकती, उत्तम रुधिर चाहिये, मैं बारह राजकुमारोंको चाहती हूँ, भूखी हूँ, भूखी हूँ, रुधिर चाहिये, उत्तम रुधिर चाहिये ।

महाराणा लक्ष्मणसिंह अपने मनमें कहनेलगे, कि—कैसी भयानक भूख है ! उनकी रगोंमेंका रुधिर मानो बरफकी बूँदें बनगया । जब बारह राजकुमार चाहियें तब तो एकसाथ वंश निर्मूल होजायगा क्या सत्य ही यह चित्तौर की राज्यलक्ष्मी है !

मूर्त्तिने फिर कहा—अविश्वास न करना, रुधिर दे, बारह राजकुमारों को दे, प्रतिदिन युद्धमें एक एक राजकुमार को दे, चित्तौरकी रक्षा कर, वंशकी रक्षा कर, मैं भूखी हूँ, मैं भूखी हूँ ।

महाराणाको मालूम हुआ, कि—मानो आज सारा संसार भूखसे व्याकुल होकर मुख फैलाये हुए उनको ग्रास करने के लिये आरहा है । महाराणा चीख मारउठे, मैया ! मैया ! शान्त हो, व्याकुल न हो अपनी पिशाचनी क्षुधाके भयको और न दिखा, तेरी आज्ञा शिरोधार्य है, अपनी इस लीलाको समेट ले, चित्तौरके ऊपर दयादृष्टि कर, चित्तौरके लिये सर्वस्व की बाजी लगी हुई, हे देवी चित्तौरको छोड़कर न जा, महाराणा और सावधान न रहसके, उनके हाथ पैर काबूमें नहीं रहे, दृष्टिकी शक्ति लुप्त होगयी, एकसाथ मूर्छित होकर गिरपड़े । तब मूर्त्ति भी धीरे २ हटकर न जाने कहाँ अन्तर्धान होगयी? ।

द्वितीय-परिच्छेद

—o—

दूसरे दिन चित्तौरेश्वरी के मन्दिर में सब सरदारोंको इकट्ठे कर के महाराणाने कहा,—इस जागती ज्योति मैयाकी आज्ञाको शिर धरों । अरुणसिंहको खबर भेजदो कि—माता चित्तौरेश्वरी बुला रही है, अब चित्तौर में मनुष्यका शासन नहीं है, कल ही अरुणसिंहको युद्ध में जाना होगा, फिर एक २ करके सबको जाना होगा । इतना कहते २ महाराणाका कण्ठ रुकगया । मन्दिर के द्वारपर बैठी हुई महाराणी चित्तौर—राजमहिषी निरन्तर अश्रुधारा बहा रही थीं, महाराणा उधर को देखकर क्षणभरके लिये तो मानो अपने आपको भूल ही गये ।

महाराणाके पास बैठी पद्मिनी देवी, भगवतीका पूजन कर रही थीं । दोनों हाथ जोड़े हुए माता के चरणोंकी ओरको दिखा कर राजमहिषीको धमकाती हुई कहने लगी, कि-इधरको देख देख कैसी अपूर्व शान्ति है ! कैसा अपूर्व विराम है ! राजकुमार इस ही शान्तिमन्दिर में जायँगे और हम भी तो इस ही शान्तमन्दिर में चलेंगी, फिर यह शोक क्यों ! आओ, अपने कर्त्तव्यका पालन करें ।

एक सरदार ने धीरे २ आकर महाराणा को समझाकर शान्त करतेहुए कहा, कि—महाराणाजी !हमारी समझ में यह स्वप्न है, आप वृथा व्याकुल क्यों होरहे हैं ? हमने तो कभी चित्तौरेश्वरी को देखा नहीं, हमारी समझमें इसकी परीक्षा करनी चाहिये, एक अनिश्चित बातकी उलझन में पड़कर इतनी बड़ी आपत्ति मान बैठना ठीक नहीं है ।

महाराणाने कहा—तुम क्या परीक्षा करना चाहते हो ? सरदारने हाथ जोड़कर कहा-यदि वास्तव में देवीकी ऐसी इच्छा है, कि—बारहों राजकुमारों को प्राण देने होंगे तो देवी आकर यह बात हमारे सामने कहें । एकजने के सामने कहने से सत्य मिथ्याका कुछ निश्चय नहीं होसकता । हम सब देवीकी आज्ञाको सुनना चाहते हैं । महाराणाने कहा तो आओ महामायाकी पूजा करें, वह अवश्य ही तुम्हारे सन्देहको दूर कर देंगी ।

इसके बाद सब राजपूत जाकर मन्दिर के सामने घुटने नमा शिर झुकाये हुए हाथ जोड़कर बैठ गये, मन्दिरकी भैरवीने उन के ऊपर शान्तिजल छिड़कदिया सब स्वर मिला कर भगवतीकी स्तुति गाने लगे. उसी समय आपसे आप मन्दिरका दीपक धीमा पड़ने लगा ।

राजपूताने स्पष्ट देखा, कि—उस धीमे दीपक के पीछे भगवतीकी मूर्त्तिके समीपमें उस समय धीरे २ एक अति अपूर्व सुन्दरी देवीकी मूर्त्ति प्रकट होरही है, महाराणा ने चिल्लाकर कहा—वह देखो भगवती प्रकट होगयी !

सब राजपूत एकसाथ कहउठे, कि—जय माताकी जय ! जय चित्तौरेश्वरीकी जय ! उसी समय मूर्त्ति फिर उस ही प्रतिमाके पीछे को अन्तधान होगयी, चारों ओर अस्त्र झनझनानेलगे, वीर रणरङ्गमें भरगये, रणका बांजा बजउठा ।

तृतीय-परिच्छेद

इसके बाद राजपूत और पठानोंका भयानक युद्ध आरम्भ हुआ, राजपूतोंको अब मृत्युका भय नहीं है । अब वह प्राण देनेके लिये ही रणमें जारहे है, मरते २ उन्होंने पठानोंकी सेनाको कुचलडाला।धीरे२ राजकुमार भी एक २ करके युद्ध में प्राण देनेलगे ! महाराणाकी संमति पाकर अरुणसिंह चित्तौरमें लौट आये । पहिले ही दिन उन को युद्धमें जाना पड़ा । चित्तौरके फाटकसे निकलकर पठानोंकी सेनारूप सागरमें कूद पड़े ! ऐसे समयमें अरुणसिंहने पीठ फेरकर देखा, कि-घोड़े पर चढ़ीहुई मुन्ना साथ है, मुन्ना उस ही मरदाने वेशमें है । कोई उसको पहचान नहीं सकता है । मुन्ना ठीक राजपूत योधाकी समान तलवार चलाती हुई अरुणसिंहके पीछे २ चली आ रही है, अरुणसिंह घवड़ागये, वह मुन्नाकी शक्तिको जानते थे,परन्तु मुन्नाके तो एक छोटासा बालक है, उसकी ही चिन्ता अरुणसिंहको व्याकुल करनेलगी और कहउठे, कि-मुन्ना ! हम्मीरका क्या होगा ? तू मेरे साथ क्यों आरही है ? । मुन्नाने ऊपरको अँगुलीसे बताकर कहा, कि-वह सब देखलेंगे, उसको मैं मामाके घर छोड़ आयी हूँ, उसके पालन पोषणमें कमी नहीं होगी । मेरा स्थान तो तुम्हारे ही पास है ।

अरुणसिंहनें फिर शब्द नहीं निकाला, उस समय दोनोंने अपने घोड़ोंको सरपट छोड़दिया, वह दोनों अनन्त विस्तारवाले यवनसेना सागरमें एक छोटीसी नदीके सोतेकी समान नजाने किधर समागये, फिर उनको किसीने नहीं देखा ।

दूसरे दिन राणाका और एक पुत्र सेनापति बनकर रणमें गया, उस

ने भी इसीप्रकार अपने प्राण देदिये । तीसरे दिन और एक राजकुमार सेनापति बनकर गया, चौथे दिन और एक गया । इसप्रकार ग्यारह दिनों ग्यारह राजकुमारोंने समरयज्ञमें अपने प्राणोंको होम दिया। केवल अजयसिंहको महाराणा अपनी छाती पकड़कर भी नहीं भेज सके, बारहवें दिन अजयसिंहकी पुकार पड़ी । अजयसिंह लक्ष्मणसिंहके दूसरे पुत्र थे । सबसे प्रिय सन्तान थे । महाराणाने उनको बुलाकर कहा—अजय ! तू वंशका शेषरत्न है, मैं तुझे इस कालसमर में कैसे भेजूँ ? तू आज ही अपनी दोनों सन्तानोंको लेकर केलवाड़ा के किलेमें चला जा । तेरे प्राणोंके बदलेमें आज राणा भीमसिंह और मैं दोनोजने रणमें जूझकर प्राण देंगे, अवश्य ही देवी सन्तुष्ट होगा ।

अजयने शोकसे लड़खड़ाती हुई वाणीमें कहा—महाराणाजी ! सब ने ही देशके लिये प्राण दिये हैं, मुझसे आप इस सौभाग्यको क्यों छीने लेते हैं ? मुझे भी—

महाराणाने रोक कर कहा—इस अन्तसमयमें पिताकी आज्ञाको न टालो, अजय ! मेरी इस अन्तिम आज्ञाका पालन कर, तेरा कल्याण होगा, वंशकी रक्षा होगी ।

अजयसिंह चुपचाप उस ही दिन पिताकी आज्ञाको शिरोधार्य करके चित्तौरसे चले गये । चित्तौरराजमहिषीका बचाहुआ रत्न भी आंखोंके सामनेसे जुदा होगया, महाराणी भूमिमें लोट २ कर विलाप करनेलगी उसी समय रानी पद्मिनीने आकर महारानीको हाथ पकड़कर उठाया और कहा, कि-दो दिनके वियोगके लिये ऐसी घबड़ायी जाती हो, बहिन ! चिरमिलनका दिन तो पास ही आरहा है, अब उस समयकी बातको याद करके प्रसन्न हो, भगवतीका पूजन कर । तू रानी है, इस समय तो तुझे रानीकी समान दूसरोंको धीरज बँधाना होगा । इस समय क्या तुझे व्याकुल होना सोहता है ? ।

महारानीको लेकर पद्मिनी मंदिरमें चलीगयी। तहां असंख्यों राजपूतानियें इकट्ठी होकर भगवतीके चरणोंमें पुष्पाञ्जलि समर्पण कर रही थीं । माताकी सेविका भैरवी, उनको देखकर आशीर्वाद देती हुई भीतर लेगयी ।

पद्मिनीने भैरवीसे कहा-माताजी ! हमने मनको स्थिर करलिया है । अब जहरके सिवाय और कोई उपाय नहीं है । अब उसका ही प्रबन्ध होना चाहिये । कलको ही हम माताके चरणोंमें अपना जीवन अर्पण करेंगी ।

भैरवीने कहा-यही ठीक है। आओ बेटी, मैंने भगवतीकी इच्छाको जान लिया है, यह अनुष्ठान कलको करना होगा, अब समय नहीं है।

तृतीय-परिच्छेद

—०—

पद्मिनी जहर व्रत करेगी, यह बात उस रातको ही चारों ओर फैल गयी चित्तौरमें घर घर खलभली पड़गयी। "जहर" राजपूतोंका अन्तिम व्रत है। जब वह शत्रुके चुङ्गलमें फँसकर मान प्रतिष्ठा और धर्म सब जाता देखते हैं। लाचारीकी डरावनी मूर्त्ति जब उनको व्याकुल करने लगती है, उस समय ही वह इस महायज्ञका आश्रय लेते हैं। उस समय राजपूतोंके दलके दल राजपूतानियोंके दलके दल हँसते २ मृत्युकी गोदमेंकी फांदपड़ते हैं। पुरुष नङ्गी तलवारें लिये हुए शत्रुसेनारूपी समुद्रमें कूद पड़ते हैं और स्त्रियें धकधकाती हुई चिताओंमें हँसती २ कूद कर प्राण देदेती हैं। चित्तौरके भाग्यमें भी आज वही महादिन आलगा है। आज चित्तौरी उस महायज्ञके लिये जहर व्रतका पालन करनेको तयार होरहे हैं।

आजकी रातमें आकाशमें घनघटाका नाम भी नहीं है। चारों दिशा चांदनीसी खिलरही हैं, कुछ थोड़ेसे तारे शान्तदृष्टिसे चित्तौर की ओरको ताक रहे हैं। वसन्तका निर्मल पवन मानों एक गीत छेड़-कर इधर उधर विचर रहा है।

चित्तौरियोंके प्राणमें भी उस दिन प्रकृतिकी वह प्रीतिकी हिलोर आकर स्पर्श करगयी। प्रातःकालके समय सूर्यकी लाल २ नवीन किरणोंके साथ उनका जीवन भी नवीनताके रङ्गमें रँग जायगा वह सकल दुःख और सकल परिश्रमके भारको मृत्युकी गोदमें छोड़कर कलको दिव्यधामकी यात्रा करनेके लिये उद्यत होंगे, इस पवित्र आशासे उनका कुम्हलाया हुआ हृदयकमल भी आज खिलउठा।

सारी रात वह क्षणभरको भी नहीं सो सके, प्रातःकाल होते ही जीवनका लेखा चुकता करना होगा, इस बातकी उत्तेजना देतेहुए यह उस रातको चित्तौरके घर २ और सड़क २ में घूमते फिरे।

पद्मिनी भी सायङ्काल के बाद चित्तौरकी राजपूत रमणियोंको साथ लेकर नगरी में घूमनेके लिये चलदी। आज उनको किसीका कुछ सङ्कोच नहीं है। चित्तौरकी राजमहिषी भी आज बिना रोक टोक चित्तौरके मार्ग में और घाट २ में पैदल ही घूम रही हैं। उनके पीछे आज सहेलियें गौरवके गीत गाती हुई एक अपूर्व अमृतकी वर्षा कर रही हैं।

चित्तोरके हरएक मार्ग और हरएक मौहल्ले से आज वह चुपचाप विदा की भिक्षा माँगने लगीं, उन सबोंके हृदयों में आज न जाने कितनी प्रिय कहानी और कितनीही मधुर स्मृतियें जाग रही हैं। आज विदाके मुहूर्त ही में वह सब स्मृतियें इकट्ठी होकर मानो बड़े कठोरभाव से उनके ऊपर आक्रमण करने लगीं, वह चुपचाप बीच २ में नेत्र मूँदने लगीं।

पद्मिनीने देखा कि—वह झरना यही है, कि—जिसके समीप बैठ कर उसने भीमसिंहसे गरमियोंमें तपनेवाले दिनके अन्तमें कितनी ही पुरानी कहानियें सुनी थीं। वह कीर्त्तिस्तम्भ यही है, कि—जिस के शिखर पर चांदनी छिटकी हुई रातमें प्राणनाथके कण्ठमें गलबाँहीं डालेहुए वह सोतेहुए जगत्को देखा करती थी। वह मन्दिर यही है, कि—जिसकी पैडियोंमें कितने हीसमय तक हाथ जोड़े बैठी हुई देवताके समीप अनेकों प्रकारकी प्रार्थना किया करती थी, सब कुछ वही है, आज भी वह सब पदार्थ तैसे ही अटल बने हुए हैं। परन्तु कौन जानता है, कि, कलको इन सब पदार्थों की क्या गति होगी।

नगरकी परिक्रमाको समाप्त करके सब स्त्रियें अपने २ घरको लौट गयीं, तब पद्मिनीने भी अपने घर आकर एक बार चारों ओरको देखा, कैसी अपूर्व अपूर्व सामग्रियें हैं, कैसे सुन्दर २ विलासके सामान हैं, उसका निजी कमरा कैसा सजाहुआ है, पद्मिनी विचारनेलगी, कि-क्या यह सब कलको पठानोंकी सेनाके पैरोंमें लुढ़केंगे? पद्मिनीने सबका ढेर करके अपने हाथसे आग लगादी। जो चीजें जल नहीं सकीं उनको खिड़की के मार्गसे सरोवरमें डालदिया। क्षणभरमें सब असबाब, वस्त्र आभूषण आदि समाप्त होगये। तब पद्मिनी स्थिरतासे बैठकर भीमसिंहके आनेकी बाट देखने लगीं।

इतने ही में घरके कोनेमें पींजरेमें बैठा हुआ एक तोता चिल्ला उठा पद्मिनीने विचार किया, कि—अरे! घरके पशु पक्षियोंको अभी तक नहीं छोड़ागया, पद्मिनीने उठकर तोतेको पींजरेमेंसे निकालदिया। बरामदेमें एक हिरन बँधरहा था, उसके गलेमेंसे रस्सी खोलदी। एक पिंजरेमें मैना थी, उसको भी छोड़दिया। पशु पक्षी खुल जाने पर भी बार २ पद्मिनीके चारों ओर घूमने लगे, पद्मिनीने उनके लिये भी दो आंसू बहादिये।

और रात्रिमें भीमसिंह जहर व्रतकी सब तयारी करके घरको लौट आये आज पति पत्नीका इसजन्ममें अन्तिम दर्शनमेला है। बहुत

देरतक दोनों चुपचाप पैठे रहे, किसीके मुखसे भी कोई शब्द नहीं निकला, अन्तको पद्मिनीने भक्तिभरे गद्गद् चित्तसे स्वामीको प्रणाम किया, भीमसिंहने हाथसे उठाकर उसको छातीसे लगाया। नव विवाहित दम्पतीकी समान इसप्रकार एक दूसरेके मुखकी ओरको देखते हुए वह दोनो नजाने कितने दिनोंसे नहीं बैठे थे । आज इसलोक और परलोकके मिलन-समयमें मानो उन दोनोंमें फिर वह तरुणाईका आवेग लौट आया । दोनों परस्पर एक दूसरेके शरीर पर शरीर रखकर चुपचाप बहुत देरतक आखें मिलाकर देखते रहे, उनके आवेगके कारण रुकेहुए हृदय-मेंसे एक भी बात बाहरको नहीं निकलसकी । सारी रात इसप्रकार ही बीतगई ।

प्रातःकालकी कुम्हलायीहुई छाया अच्छेप्रकार प्रकट भी नहीं होने पायी थी, कि—चित्तौरमें हल चल पड़गयी ! दलके दल पुरोहित और नगरकी नारियोंके झुंड मङ्गलके स्तोत्र और गीत गातेहुए जहरके पवित्र अग्निकुण्डकी तरफको चलदिये। जिनके कानोंमें कुण्डल दमक रहे थे ऐसी लाल वस्त्र धारण करनेवाली स्त्रियोंकी कान्तिसे दिशायें दमक उठीं ।

पहाड़की एक अतिविशाल अन्धेरी गुफाके भीतर चन्दनके काठ का एक बड़ीभारी चिता चिनीगयी थी। पुरोहितोंने मन्त्र पढ़२कर उस के ऊपर सैंकड़ों घड़े घी लौटदिया। चिता धकधकाकर जलउठी। उस गुफाके एकमात्र द्वारके सामने खड़े होकर असंख्यों राजपूत और राजपूतानियें, जयजयकारकी ध्वनि करनेलगे। उस कानोंको प्रिय लगनेवाले मंत्रपाठ और जय जयके शब्दसे एक मुहूर्त्तको सब निरान्द और उद्वेग दूर होगया। रानी पद्मिनी एक ओर भैरवीको और दूसरी ओर राजमहिषीको ले कुण्डके सामने जाकर खड़ी होगयी उसी समय चारों ओरसे सहेलियोंने फूल बरसाये, पुरोहित ऊँचे स्वरसे मंत्र पढ़नेलगे। पहिले राजपूत योधा वेदमंत्रोंका उच्चारण कर म्यानोंमेंसे तलवारें निकालतेहुए किलेके द्वारकी ओरको दौड़ेहुए चलेगये, फिर स्त्रियें माङ्गलिक गीत गानेलगीं। वह सहस्रों कण्ठोंकी मिलीहुई ध्वनि, जहां किलेके फाटक पर सहस्रों राजपूत, पठानोंकी सेनापर आक्रमण करनेके लिये तयार खड़े थे, तहां जा पहुँची, राजपूत ऊपरको गरदन उठाकर आकाशमेंको टकटकी लगा देखने लगे। एक ही क्षणके बाद बड़ा गाढ़ा धुएँका पुञ्ज आकाशमें भरकर

ऊपरको उठनेलगा। ठीक उसी समय राजपूतोंने भी किलेका फाटक खोलदिया। देखते २ महाराणा लक्ष्मणसिंह भीमसिंह और बादल कई सहस्र राजपूतसेनाको साथ लेकर यवन बादशाहके अनन्तसेना सागरमें जलके थोड़ेसे बुलबुलोंकी समान समागये।

—०—

चतुर्थ परिच्छेद

युद्ध समाप्त होगया। एक वर्ष तक बराबर बड़े कठोर युद्ध के बाद अलाउद्दीनने विजयगर्वके साथ चित्तौरमें प्रवेश किया। चित्तौरके उस दुरारोह ढालू मार्ग पर चढ़ते २ अलाउद्दीन अपने मनमें नजाने कितनी बातें विचारगया। नजाने कितनी आशाकी छवियों ने और कितने सुखस्वप्नोंने उसके हृदयकमलको प्रफुल्लित किया किलेके फाटकमें घुसकर अलाउद्दीन पहिले पद्मिनीके महलकी ओरको ही गया। सारा रास्ता सूनसान ही पाया! कहीं भी किसी भी घरमें एक भी मनुष्य नहीं था। मार्ग, घाट और महल कुंकुम चन्दन और टूटी हुई पुष्पमालाओंसे रँगे हुए थे। मार्गके दोनों ओर सफेद पुती हुई अट्टालिकायें मानो, चुपचाप हँसती हुई बादशाहको चिढ़ा रही थीं। बादशाह चौंक उठा। पद्मिनीके महलके पास आकर अलाउद्दीन के प्राण बहुतही व्याकुल होने लगे। बादशाह विचारने लगा, कि—उस दिन तो इस नगरीमें आमोद प्रमोदकी बड़ी चहल पहल थी, आज इसने कैसी आनन्दशून्य भयानक मूर्त्ति धारण की है? पद्मिनीके महलकी खिड़कियें कैसे खुली हुई हैं? यह क्या? द्वारपर तो एक भी पहरेदार नहीं है। यह क्या? यह क्या? उसके जीवित मिलनेका तो कोई लक्षण ही नहीं दीखता! अच्छा, सब लोग चारों ओर बड़ी सावधानी के साथ पहरा दो, इतना कहकर अलाउद्दीन अकेला ही महलके भीतर घुसगया, उसके हाथ पैर कांपने लगे, चित्त घबड़ा गया, एक अनजान सन्देह से उसका हृदय धड़कने लगा। वह महल में पहुँचकर कहने लगा, यहां तो कोई है ही नहीं फिर पुकारा, कि—पद्मिनी!!

पद्मिनी कहां थी? बादशाहका शब्द ही गूँजकर मानो उसका हास्य करने लगा, वह शब्द कोठरीमें गूँजने लगा, अलाउद्दीनका हृदय मानो फटने लगा! सङ्गमर्मरकी पड़ी हुई चौकीपर बादशाह

शिर पकड़कर बैठ गया। फिर एकसाथ चौकन्ना होकर खड़ा हो गया और कान लगाकर कहने लगा, कि—क्या पद्मिनी पुकार रही है। बादशाहने साफ साफ सुना, कि—कोई चिल्लाकर कहरहा है—आइये ! घरमें आइये, आप बाहर क्यों खड़े हैं ? घरमें आकर बैठिये ? बादशाह झपट कर उधरको ही गया, परन्तु कहीं कोई भी नहीं दीखा। बादशाहने देखा, कि—उस कमरे में एक मैना उड़ २ कर ऐसा कह रही है, बादशाहके लौटते ही वह फिर कहने लगी, कि—आइये ! आइये ! कुरसी पर बैठिये, लीजिये,यह कुरसी है !

ऐसी दिल्लगी ? ऐसा उपहास ? बादशाहने विचारा, कि— आज सब ही संसार छिप २ कर मेरा उपहास करने पर उतारू होरहा है। अलाउद्दीन मारे क्रोधके अन्धा होगया और उस विचारी निरपराध मैनाको तीरसे बेधकर भूमिपर गिरादिया, मैना गिरते ही जराएक छटफटा कर तहां ही मरगयी।

इसके बाद बादशाहने चुपचाप चित्तौरका घर घर देखडाला, कहीं भी कोई नहीं मिला। सब ही जगह सूनसान और सन्नाटा था।

परन्तु बादशाहने बाहर आकर हुकुम दिया, कि—किलेका कोना २ देखडालो, जिसको जहां पाओ पकड़ लाओ, किसीको भी मत छोड़ो। पठानोंकी सेना चारों ओरको फैल पड़ी, उन्होंने किले में जहां जो कुछ पाया उसको ही तोड़फोड़ डाला। बगीचे, घर, अटारियें, देवमन्दिर सब टूटने फूटने लगे, सैकड़ों हजारों वर्षकी कीर्त्तिका विध्वंस होगया। परन्तु कहीं जीवित मनुष्य एक भी नहीं मिला। तब अलाउद्दीन पद्मिनीको ढूंढनेके लिये फिर अपने आप चलदिया। हरएक कोठरी, बरामदा घरोंके कोने, बाग, बगीचे, मन्दिर, मठ और पहाड़की दरारोंको देखनेलगा, कहीं भी कोई नहीं मिला, तब निराश होकर एक सरोवरकी पैड़ी पर बैठगया। पर्वतमें बनेहुए एक गोमुखाकार झरनेमेंसे निर्मल जलकी धारा उस समय भी सरोवरमें गिररही थी उसकी बिन्दुओंने आकर बादशाहको तर करदिया। बादशाह फिर उठकर पद्मिनीके महलकी तरफको चलदिया, इतनेमें ही पासके पहाड़ पर उसकी दृष्टि पड़ी और अलाउद्दीन चौंककर खड़ा होगया वह देखते ही कहने लगा, कि-यह क्या है ? पहाड़की एक दरारमें से धुएंकी लम्बी रेखा निकलकर आकाशमेंको कैसी चढ़ी जारही है यह इस धुएंके साथ कोमल सुगन्ध कैसी आरही है ?।

हुकुम मिलते ही सैंकड़ों पठानोंने सहस्रों हाथोंसे एक बड़ीभारी शिलाको हटाया, उस समय एक बड़े ही भयानक दृश्यने उनको चकित करडाला। अलाउद्दीनने देखा, कि—धुएँका ढेरका ढेर एक अति भयानक अग्निकी चितामेंसे उठकर एक बड़ी भारी गुफाके मुखको घेरे हुए है, उसके भीतरसे अगर, चन्दन और धूप कपूर आदिकी अपूर्व सुगन्ध निकलकर चारों दिशाओंको महकारही है। गुफाके द्वार पर असंख्यों फूलमालायें कुंकुमकी रेखायें और चन्दनकी बूंदें फैली हुई हैं। नजाने किसने अचानक एक जलताहुआ लोहेका दंपड अलाउद्दीनकी छातीमें बेधदिया, बादशाह एक मुहूर्त्त तक तो चुपचाप रहा, फिर एक गहरी आह भरकर पागलकी समान उस अग्निकुंडकी तरफको झपटने लगा। एक पठान सरदार पास ही खड़ा था, उसने पकड़कर लौटाया, तब बादशाहने कहा—तुम सब लोग क्या देखते हो? आगको बुझाओ, पद्मिनीको जीती निकालसकोगे तो लाखों रुपयेका ईनाम मिलेगा। परन्तु हाय! उस समय पद्मिनी कहां थी? यवनके लोखों रुपयेकी लालची लाखों सेना उस समय सतीके एक बालके अग्रभागको भी नहीं छू सकी, पठान सरदारोंने यह बात बादशाहको समझादी, तब बादशाह दर २ मारे फिरनेवाले दीन दरिद्र भिखारीकी समान छाती को पकड़े हुए लौट आया। इतने दिनोंका परिश्रम, इतने दिनोंका सुखस्वप्न आज सब समाप्त होगया। एक छोटीसी अबला नारी दिल्ली के सिंहासन को पैरका अँगूठा दिखाकर बेरोक टोक चली गयी। अलाउद्दीन बहुत समय तक उदास रहा, उसके बाद फिर धीरे २ पद्मिनी के महलकी तरफको गया। उस जनशून्य सन्नाटा छाये हुए महलमें पहुँचने पर अलाउद्दीनके हृदयके बन्द किवाड़ खुल गये, उसका चिरकालसे अभिमान में भराहुआ हृदय एक साधारण स्त्रीके सुखको याद करके आज डीख फोड़कर रोउठा। दिल्लीका बादशाह तहां भूमि में पड़ी हुई एक पत्थरकी शिला के ऊपर पड़ रहा। बादशाह ने बड़े ही कष्टसे पद्मिनीके दो चार स्मारक ढूंढकर निकाले, उनको लिये हुए वह तीन दिन तक पद्मिनी के महल में ही ठहरा रहा। इन तीन दिनों में पठानों ने चित्तौरको श्मशान बना डाला, तहां जो कुछ धन रत्न आदि था, सब ही लूट लिया। चौथे दिन आकर उन्होंने पद्मिनीके महलको लूटना चाहा, परन्तु बादशाहने उनको धमकाकर लौटा दिया।

अलाउद्दीनने कहा—खबरदार! इस घरको हाथ न लगाना। यह पवित्र मकान है। इसकी रक्षा करनी होगी। पठान सब बादशाह के मुखकी तरफको देखने लगे और फिर सबोंने अचंभे होकर देखा, कि—संसार कैसा परिवर्तनशील है, दुनियांका पल कितनी जल्दी पलट जाता है। जो चित्तौर कल नन्दनवन थी वा आज भयानक श्मशान बनी हुई है। जहां दो दिन पहिले इन्द्रपुरीके देवताओंको समान राजपूतमण्डली अनेकों प्रकारके आनंद प्रमोद में अपने समयको स्वर्गीय सुख में बिताती थी, तहां आज भगवान् भूतनाथ के गणोंकी अद्भुत क्रीड़ा होरही है। भगवान् की लीलाका पार कोई नहीं पासकता।

"दयानिधि तोरी गति लखि ना परै,,

समाप्त